A Guide to Missionary Service

Preach My Gospel

(D&C 50:14)

CHAPTER 3 ONLY

Hindi

मैं क्या अध्ययन करता और सीखाता हूं ?

इन पाठों के अध्याय में महत्वपूर्ण सिद्धान्त, नियम, और आज्ञाएं शामिल हैं जिनका आपको अध्ययन, विश्वास , प्रेम करना, और सीखाना है । ये वे बातें हैं जिन्हें जीवित भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने आपको सीखाने का निर्देश दिया है । इन्हें इसलिए सगंठित किया गया है ताकि आप दूसरों को मसीह के सिद्धान्तों को स्पष्टता से समझने में मदद कर सकें ।

इस अध्याय में पाठ हैं:

- यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना का संदेश
- उद्धार की योजना
- यीशु मसीह का सुसमाचार
- आज्ञाएं
- नियम और धर्मविधियां

पहले चार पाठों को बपस्तिमे से पहले सीखाएं । सुनिश्चित कर लें कि जिन्हें आप सीखा रहे हैं वे इन पाठों में बताई गई सभी प्रतिज्ञाओं को बनाकर और पालन कर बपतिस्मे और पुष्टिकरण के योग्य हों ।

वार्ड प्रचारकों और अन्य सदस्यों की मदद से पूरे-समय के प्रचारक बपतिस्मे से पहले इन पाठों को सीखाने में नेतृत्व करते हैं । बपतिस्मे के बाद, नए सदस्यों को पहले चार पाठ के साथ साथ ''नियम और धर्मविधियां'' फिर से सीखाई जाती हैं । वार्ड मार्गदर्शक तय करते हैं कि वार्ड प्रचारकों या पूरे-समय के प्रचारकों द्वारा निश्चितरूप से इन पाठों को सीखाया जाए और पूरे-समय के प्रचारक कितने समय तक इसमें शामिल रहेंगे । प्रत्येक नए सदस्य को इन पाठों की सभी प्रतिज्ञाओं का पालन करने के लिए उत्साहित करें ।

आपको इन पाठों को व्यक्तिगत और साथी के साथ अध्ययन में, जिले की सभाओं में, और अन्य प्रशिक्षण स्थलों पर भी उपयोग करना चाहिए । जब आप धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते और अपनी स्मृति में इन पाठों के सिद्धान्तों को संचित करते हो, आत्मा आपको सीखाते समय बताएगा कि इन शिक्षाओं की सच्चाई की गवाही को पाने में दूसरों की मदद के लिए आपको क्या कहना और करना चाहिये ।

प्रचारक के रूप में, आपके पास हृदय से और आत्मा के द्वारा सीखाने की महान जिम्मेदारी होती है । प्रथम अध्यक्षता और बारह प्रेरितों की परिषद ने बताया हैः '' हमारा उद्देश्य पुनःस्थापित सुसमाचार को सीखाने का इस प्रकार से है कि आत्मा को, पूरे-समय के प्रचारकों और जिन्हें सीखाया जा रहा है, दोनों को निर्देश देने का अवसर मिले । [पाठों की] परिकल्पनाओं को सीखना आवश्यक है, लेकिन इन्हें यंत्रवत प्रदर्शन के द्वारा नहीं सीखाया जाना चाहिए । आत्मा द्वारा उद्धत प्रचारक को अपने स्वयं के शब्दों का उपयोग करने की स्वत्रंता को महसूस करना चाहिए । उसे कंठस्थ किए हुए पाठ को

पहाड़ी पर संदेश, कार्ल ब्लॉक द्वारा । फ्रेडरिकबोर्ग कैसल आराधनालय, डैनमार्क में मूल प्रति । फ्रेडरिकबोर्ग संग्राहलय की अनुमति से उपयोग की गई । नकल न बनाएं ।

पाठ

पाठ

नहीं देना चाहिए, परन्तु हृदय से अपने शब्दों में बोले । जांचकर्ता की रूचि और अवश्यकता के अनुसार वह जिस बात से प्रेरित होता है उसे सीखाने के लिए वह पाठों के क्रमों को आगे-पीछे कर सकता है । अपनी स्वयं की सच्चाई और अपने स्वयं के शब्दों में सीखाने पर उसे अपनी शिक्षाओं की सच्चाई की गवाही देनी चाहिए'' (''प्रचारक कार्य पर कथन,'' प्रथम अध्यक्षता का पत्र, 11 दिसंबर 2002) । जब आप और आपका साथी इन पाठों का अध्ययन और सीखाने की तैयारी करते हैं, इन निर्देशों का दृढ़ता से पालन करें । सुनिश्चित करें कि आप इन पाठों के सभी सिद्धान्तों को सीखाते हैं ।

जबतक आत्मा द्वारा निर्देश न हो, पहले तीन पाठों में से प्रत्येक के संपूर्ण विषय को आप उसी क्रम से सीखाएगें जिस क्रम में ये लिखे गए हैं । यदि उचित हो तो कुछ आज्ञाओं को भी शामिल किया या उन्हें अलग से पाठों के रूप में सीखाया जा सकता है ।

प्रत्येक पाठ बपतिस्मे के उन साक्षात्कार प्रश्नों, प्रतिज्ञाओं और सिद्धान्तों की रूपरेखा देता है जिन्हें आपने सीखाना है । सिद्धान्तों को अच्छी तरह से सीखें । जिन्हें आप प्रतिज्ञाओं को बनाना और पालन करना सीखाते हैं उनकी मदद का निरंतर ध्यान रखें । जिन्हें आप सीखाते हैं, बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्नों का उपयोग करके उन्हें बपतिस्मे और पुष्टिकरण के लिए तैयार करें । पाठों के साथ सीखाने के सुझाव भी हैं । अपनी तैयारी और सीखाने को मजबूती देने के लिए इन सुझावों का उपयोग करें ।

याद करने की भूमिका

अपने पाठों में उपयोग करने के लिए धर्मशास्त्रों को याद करें । प्रत्येक प्रचारक पाठों के सैद्धान्तिक तर्कों के क्रम को याद कर लें । अन्य भाषा सीखने वाले प्रचारकों को अपनी भाषा में प्रचारक पाठों को सीखाने के अध्ययन पर ध्यान लगाना चाहिए । उन्हें सिद्धान्त के शब्दों, वाक्यांशों, वाक्य नमूनों, और संक्षिप्त कथनों को उस समय याद करना चाहिए जैसे वे पाठ में उपयोग होते हैं, लेकिन ऐसा तभी करें जब ये आपको व्यक्तिगतरूप से समझ में आते हों । संपूर्ण पाठों को न रटें ।

स्पष्टता से सीखाएं

पहले तीन पाठों के अन्त में शब्दों की एक सूची है जोकि उनके लिए अपरिचित हो सकती है जिन्हें आप सीखाते हैं । सीखें कैसे इन शब्दों को सरलता से समझाना है । जब आप सीखाते हैं, संदेश को सरल बनाने के लिए जो कुछ आप कर सकते हैं उसे करें ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

आपको सीखाने के लिए क्या निर्देश दिया गया है ?

मूसायाह 18:18–20 सि. और अनु. 43:15–16 सि. और अनु. 52:9

आपको पाठों में दिए गए सिद्धान्तों का अध्ययन करना क्योंकर आवश्यक है ?

अलमा 17:2–3 सि. और अनु. 84:85

पाठ

यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना का संदेश

© 1991 Greg K. Olsen | नकल न करें |

आपका उद्देश्य

जब आप सीखाते हैं, अपने जांचकर्ताओं को सिद्धान्त और अनुबंध 20:37 और बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्नों में सीखाए बपतिस्मे की योग्यताओं को पूरा करने के लिए तैयार करें। इसे अपने जार्चकर्ताओं से नीचे सूची बद्ध की गई प्रतिज्ञाओं को बनाने और पालन करने का निमंत्रण देने से अच्छी तरह से पूरा किया जा सकता है।

बपतिस्मा साक्षात्कार के प्रश्न

- क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमारा अनन्त पिता है ?
- क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, दुनिया का उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है ?
- क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह का गिरजाघर और सुसमाचार को भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा पुनःस्थापित किया गया है ?
- क्या आप विश्वास करते हैं कि [गिरजाघर के वर्तमान अध्यक्ष] परमेश्वर के एक भविष्यवक्ता हैं ? इसका आपके लिए क्या अर्थ है ?

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप मॉरमन की पुस्तक पढ़ेंगे और जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि यह परमेश्वर का वचन है ?
- क्या आप जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि जोसफ स्मिथ एक भविष्यवक्ता थे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से अन्य आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

परमेश्वर हमारे प्रिय स्वर्गीय पिता है

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। हम उसके बच्चे हैं। उसके पास मांस और हड्डी का एक शरीर है जोकि महिमापूर्ण और परिपूर्ण है। वह हम से प्रेम करता है। वह हमारे साथ दुखी होता है जब हम कष्ट में होते हैं और आनन्दित होता है जब हम सही कार्य करते हैं। वह हमारे साथ बातचीत करना चाहता है, और हम उसके साथ सच्ची प्रार्थना के द्वारा बातचीत कर सकते हैं।

उसने हमें पृथ्वी पर यह ज्ञान इसलिए दिया है ताकि हम सीख और उन्नति कर सकें। हम उसके प्रति अपना प्रेम हमारे चुनावों और उसकी आज्ञाओं का पालन करके दिखा सकते हैं।

स्वर्गीय पिता ने हमें, अपने बच्चों, को इस जीवन में सफल होने और वापस उसकी उपस्थिति में रहने के लिए एक मार्ग दिया है। तथापि, ऐसा करने के लिए हमें आज्ञाकारी होने के द्वारा शुद्ध और स्वच्छ होना चाहिए। अवज्ञा हमें उससे दूर करती है। हमारे पिता का योजना का केन्द्र यीशु मसीह का प्रायश्चित है। इस प्रायश्चित में, गतस्मनी में उसकी पीड़ा के साथ-साथ सलीब पर उसका कष्ट और मृत्यु शामिल है। इस प्रायश्चित के द्वारा हम अपने पापों के बोझ से स्वतंत्र हो सकते हैं और अपनी परिक्षाओं का सामना करने के लिए विश्वास और शक्ति का विकास कर सकते हैं।

पाठ

परमेश्वर के बारे में धारणा

निधार्रित करें प्रत्येक व्यक्ति जिन्हें आप सीखाते हैं परमेश्वर के विषय में मसीही विश्वास के बारे में क्या समझते हैं । वर्तमान संसार में बहुत से लोगों के पास या तो परमेश्वर की कोई परिकल्पना नहीं है या फिर ईश्वर की एक बिलकूल भिन्न विचारधारा है ।

मॉरमन की पुस्तक के दो प्रचारक, अम्मोन और हारून, ने उन लोगों को सीखाया था जिनकी पृष्ठभूमि मसीही नहीं थी । उन्होंने सरल सच्चाइयों को सीखाया और अपने जांचकर्ताओं को प्रार्थना करने का निमंत्रण दिया था । लमोनी और उसके पिता परिवर्तित हुए थे । अलमा 18:24–40 और 22:4–23 पढ़ें, और इन प्रश्नों के उत्तर दें :

- इन प्रचारकों ने परमेश्वर के स्वरूप के विषय में क्या सीखाया था ?
- आप उनके उदाहरणों का किस तरह अनुसरण कर सकते हो ?

धर्मशास्त्र अध्ययन

पिता परमेश्वर और यीशु मसीह का स्वरूप कैसा है ?

1 नफी 17:36
2 नफी 9:6
मुसायाह 4:9
3 नफी 12:48
3 नफी 14:9–11
3 नफी 27:13–22
सि. और अनु. 38:1–3
सि. और अनु. 130:22
मूसा 1:39
मत्ती 5:48
यूहन्ना 3:16–17
प्रेरितों के काम 17:27–29
रोमियों 8:16
इबानियों 12:9
1 यूहन्ना 4:7–9

सुसमाचार परिवारों को आशीष देता है

पुनःस्थापित सुसमाचार पति और पत्नी, माता-पिता और बच्चों को आशीष देता और मदद करता है जब वे अपने परिवारों में अधिक मजबूत संबंध और आत्मिक बल का विकास करने का प्रयास करते हैं । ये आशीषें अब और अनन्तता में उपलब्ध रहेंगी । यीशु मसीह का सुसमाचार वर्तमान चिन्ताओं और चुनौतियों को दूर करने में मदद देता है ।

क्योंकि परिवारों की नियुक्ति परमेश्वर द्वारा की जाती हैं, अनन्तता और समय में वे समाज की एक अति महत्वपूर्ण इकाई हैं । परमेश्वर ने अपने बच्चों को आनन्दित होने, उचित नियम को सीखने का प्यार भरे वातावरण देने, और उनको अनन्त जीवन की तैयारी करने के लिए परिवारों को स्थापित किया है । घर यीशु मसीह के सुसमाचार नियमों की शिक्षा को सीखने, और लागू करने का उत्तम स्थान है । सुसमाचार नियमों पर स्थापित घर आश्रय और सुरक्षा का एक स्थान होगा । यह स्थान होगा जहां प्रभु की आत्मा, परिवार के सदस्यों को शान्ति, आनन्द, और सुख से आशीषित करते हुए, निवास करती है । हमारे युग सहित, प्रत्येक युग में भविष्यवक्ता के द्वारा परमेश्वर लोगों और परिवारों के लिए अपनी योजना प्रकट करता है ।

स्वर्गीय पिता प्रत्येक प्रबंध में अपने सुसमाचार को प्रकट करता है

एक महत्वपूर्ण तरीका जो परमेश्वर के प्रेम को दिखाता है भविष्यवक्ता की नियुक्ति द्वारा, जिन्हें वह पौरोहित्य—उसके बच्चों के उद्धार के लिए परमेश्वर के नाम में कार्य करने की शक्ति और अधिकार, देता है । भविष्यवक्ता यीशु मसीह के सुसमाचार को प्रकटीकरण द्वारा सीखते हैं । जिसके परिणामस्वरूप वे सुसमाचार अन्य लोगों को सीखाते और यीशु मसीह की उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता के रूप में गवाही देते हैं । भविष्यवक्ताओं की शिक्षाएं पवित्र पुस्तकों में पाई जाती हैं जिन्हें धर्मशास्त्र कहते हैं ।

इस जीवन में सफल होने और वापस जाकर उसके साथ रहने की हमारे लिए पिता की योजना को यीशु मसीह का सुसमाचार कहते हैं, जिसमें यीशु का प्रायश्चित इस योजना का केन्द्र है । यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, यदि हम यीशु मसीह में विश्वास, पश्चाताप, पापों की माफी के लिए डुबकी द्वारा बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का उपहार, और अन्त तक धीरज धरते हैं, हम अनन्त जीवन को पा सकते हैं । ''यही वह रास्ता है; और दूसरा रास्ता कोई नहीं । न तो आकाश से नीचे दूसरा कोई नाम ही है, जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के राज्य में बचाया जा सकता है । और देखो, यही मसीह का सिद्धान्त है'' (2 नफी 31:21) । प्रत्येक व्यक्ति के पास चुनने की स्वतंत्रता का उपहार है, जिसमें भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों द्वारा सीखाए सुसमाचार को स्वीकार या अस्वीकार करने की स्वतंत्रता शामिल है । जो आज्ञा पालन करने का चुनाव करते हैं आशीषित होते हैं, लेकिन जो सुसमाचार को अनसुना, अस्वीकार, या बदलते हैं वे परमेश्वर की वादा की गई आशीषें नहीं पाएगें ।

जब लोग सुसमाचार के किसी भी नियम या धर्मविधि, का अनादर, अवज्ञा, या बदलते हैं, जब वे प्रभु के भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार करते हैं, या जब वे अन्त तक धीरज नहीं धरते हैं, वे अपने आपको परमेश्वर से दूर कर लेते हैं और आत्मिक अंधकार में रहना आंरभ कर देते हैं । अन्ततः यह उस स्थिति की ओर ले जाता है जिसे धर्मत्याग

कहते हैं । जब व्यापक धर्मत्याग होता है, तो परमेश्वर सुसमाचार सीखाने और धर्मविधियों का संचालन करने वाला अपना पौरोहित्य अधिकार वापस ले लेता है ।

बाइबिल के इतिहास में परमेश्वर द्वारा भविष्यवक्ताओं से बातें करने की बहुत सी घटनाओं का लेखा है, और यह धर्मत्याग की बहुत सी घटनाओं के बारे में भी बताती है । प्रत्येक व्यापक धर्मत्याग की अवधि का अन्त करने के लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह के नये सुसमाचार को पुनःस्थापित करने और सीखाने के लिए भविष्यवक्ता नियुक्त कर और उसे पौरोहित्य अधिकार देकर अपने बच्चों के प्रति प्रेम दिखाया है । संक्षेप में, भविष्यवक्ता पृथ्वी पर परमेश्वर के परिवार की देखभाल करने के लिए प्रबंधक का कार्य करता है । समय की उन अवधियों को, जिनका नेतृत्व भविष्यवक्ता से संबंधित जिम्मेदारियों द्वारा होता है, प्रबंध कहते हैं ।

परमेश्वर ने आदम को यीशु मसीह के सुसमाचार को प्रकट किया और उसे पौरोहित्य दिया था । आदम पृथ्वी पर पहला भविष्यवक्ता था । प्रकटीकरण के द्वारा, आदम ने परमेश्वर पिता, उसके पुत्र यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा के मनुष्यजाति के साथ उचित संबंध; यीशु मसीह के प्रायश्चित और पुनरूत्थान; और सुसमाचार के पहले नियमों और धर्मविधियों के विषय में सीखा था । आदम और हव्वा ने अपने बच्चों को इन सच्चाइयों को सीखाया और उन्हें उनके जीवन के सभी पहलुओं में सुसमाचार में विश्वास का विकास करने और इसका पालन करने के लिए उत्साहित किया था । आदम के बाद अन्य भविष्यवक्ता आए, लेकिन समय बीतने के साथ आदम के वंशजों ने, अधार्मिकता का चुनाव कर सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया और धर्मत्याग से पतित हो गए थे ।

इस प्रकार भविष्यवक्ता से संबंधित प्रबंधों के उदाहरण आरंभ हुए जिससे पुराने नियम का अधिकतर लिखित इतिहास बना है । स्वर्गीय पिता ने नूह, इब्राहीम, और मूसा जैसे भविष्यवक्ताओं को सीधे बातचीत द्वारा अपने सुसमाचार को प्रकट किया था । प्रत्येक भविष्यवक्ता को सुसमाचार का नया प्रबंध शुरू करने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया था । इन में से प्रत्येक भविष्यवक्ता को पौरोहित्य अधिकार और अनन्त सच्चाइयां प्रकट की गई थी । दुर्भाग्य से, प्रत्येक प्रबंध में लोगों ने सुसमाचार को अस्वीकार करने के लिए अन्ततः अपनी चुनने की स्वतंत्रता का उपयोग किया और धर्मत्याग से पतित हो गए थ ।

भविष्यवक्ता

जानें कि जिस व्यक्ति को आप सीखा रहे हैं वह भविष्यवक्तओं के बारे में क्या समझता है । बहुत सी संस्कृतियों में ऐसे लोग होते हैं जो विश्वास करते हैं कि पवित्र या प्रेरित लोग देवता से मार्गदर्शन और निर्देशन के रूप में कुछ प्राप्त करते हैं । इसलिए, सभी प्रेरित व्यक्ति परमेश्वर के भविष्यवक्ता नहीं होते हैं जैसा कि पुनःस्थापित सुसमाचार में बताया गया है । स्पष्टरूप से समझाएं कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए भविष्यवक्ता को नियुक्त कर नया प्रबंध स्थापित करता है । वह उस भविष्यवक्ता को पौरोहित्य अधिकार देता है । फिर भविष्यवक्ता लोगों को देवता के साथ उनके सबंध को समझने और यीशु मसीह के सुसमाचार द्वारा अनन्त जीवन पाने में मदद करता है ।

आपको आश्चर्य हो सकता है गैर मसीही पृष्ठभूमि या संस्कृति के लोगों को सीखने में सुसमाचार प्रबंधों का संबंध कैसे हो सकता है । लेकिन सुसमाचार प्रबंधों के इतिहास को संक्षिप्तरूप से तुलना करने से आपको पता चलेगा कि आप लोगों की यह समझने में मदद कर सकते हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों से प्रेम करता है और कि वह कल, आज, और हमेशा एकसा ही रहेगा ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

भविष्यवक्ता

याकूब 4:4, 6
मुसायाह 8:13–18
प्रेरितों के काम 10:34–43
आमोस 3:7

प्रबंध

सि. और अनु. 136:36–38
मूसा 5:4–12, 55–59
मूसा 8:19–30
धर्मशास्त्र से मार्गदर्शन "प्रबंध"

पाठ

उद्धारकर्ता की पृथ्वी की सेवकाई

यीशु मसीह के जन्म से कुछ सौ साल पहले, लोग फिर से धर्मत्याग से पतित हो गए थे । लेकिन जब उद्धारकर्ता ने अपनी नश्वर सेवकाई शुरू की थी उसने पृथ्वी पर फिर से अपना गिरजाघर स्थापित किया था ।

स्वर्गीय पिता ने सारी मनुष्यजाति के पापों के लिए प्रायश्चित करने और मृत्यु पर विजय पाने के लिए अपने पुत्र को पृथ्वी पर भेजा था:"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिय, ... कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए" (यूहन्ना 3:16–17) । हमारे स्वर्गीय पिता ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को, कष्टों को सहकर, जो पृथ्वी पर रहे होंगे उन सभी के पापों को अपने ऊपर लेने और शारीरिक मृत्यु पर विजय पाने के लिए भेजा था । उद्धारकर्ता ने एक अनन्त प्रायश्चित बलिदान किया था ताकि यदि हम उस में विश्वास करते, पश्चाताप करते, बपतिस्मा लेते, पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करते, और अन्त तक धीरज धरते हैं, तो हमें अपने पापों से माफी मिल सकती है और उस मार्ग में प्रवेश करते हैं जो हमें परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्त जीवन की ओर ले जाएगा (देखें 2 नफी 31:13–21) ।

अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान, उद्धारकर्ता ने अपने सुसमाचार को सीखाया और कई चमत्कार किए थे । उसने बारह पुरूषों को अपने प्रेरित होने के लिए नियुक्त किया और उनके सिरों पर अपने हाथों को रखकर उन्हें पौरोहित्य अधिकार दिया था । उसने अपने गिरजाघर को संगठित किया, भविष्यवाणी पूरी की, अस्वीकार किया गया और सलीब पर चढ़ाया गया । अति महत्वपूर्ण, उसने प्रायश्चित को पूरा किया । परमेश्वर का पुत्र, प्रभु यीशु मसीह, ने वह सब पूरा किया जिसके लिए स्वर्गीय पिता ने उसे करने को कहा था ।

उद्धारकर्ता की मृत्यु और पुनरूत्थान से पहले, उसने अपना सुसमाचार सीखाने, उद्धार के लिए धर्मविधियों को करने, और दुनिया में अपना गिरजाघर स्थापित करने के लिए अपने प्रेरितों को अधिकार दिया था ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

विश्वास के अनुच्छेद 1:5
मत्ती 10:1–10
लूका 6:13
यूहन्ना 15:16
इब्रानियों 5:4

महान धर्मत्याग

यीशु मसीह की मृत्यु के बाद, दुष्ट लोगों ने प्रेरितों और गिरजाघर के सदस्यों को सताया और उनमें से बहुतों को मारा डाला । प्रेरितों की मृत्यु के साथ, पौरोहित्य की कुंजियां और अध्यक्षिक पौरोहित्य अधिकार को पृथ्वी पर से वापस ले लिया गया था । प्रेरितों ने गिरजाघर के सिद्धान्तों को शुद्ध रखा था और गिरजाघर के सदस्यों की योग्यता के स्तर और आदर्श को कायम रखा था । बिना प्रेरितों के, कुछ समय बाद सिद्धान्त भ्रष्ट हो गए और गिरजाघर के संगठन और पौरोहित्य धर्मविधियों, जैसे बपतिस्मा और पवित्रआत्मा का उपहार देने, में अनाधिकृत परिवर्तन किए गए ।

बिना प्रकटीकरण और पौरोहित्य अधिकार के, धर्मशास्त्रों और यीशु मसीह के सुसमाचार के नियमों और धर्मविधियों को समझने के लिए लोग मानव ज्ञान पर निर्भर थे । गलत विचारों को सच्चाई के रूप में सीखाया गया था । परमेश्वर पिता, उसके पुत्र यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा का सच्चा स्वरूप और प्रकृति विलुप्त हो गई । यीशु मसीह के सिद्धान्तों मे विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा का उपहार विकृत हो गए या भूला दिए गए थे । मसीह के प्रेरितों को दिया गया पौरोहित्य अधिकार पृथ्वी पर बिलकुल भी उपस्थित नहीं था । इस धर्मत्याग ने अन्ततः कई गिरजाघरों को उत्पन्न किया ।

कई सदियों के आत्मिक अन्धकार के बाद, सच्चाई खोजने वाले पुरूषों और स्त्रियों ने विद्यमान धार्मिक प्रथाओं का विद्रोह किया था । उन्होंने पहचाना कि सुसमाचार के बहुत से सिद्धान्तों और धर्मविधियों को बदला दिया गया है या विलुप्त हो गए हैं । वे अधिक महान आत्मिक प्रकाश की खोज करने लगे, और बहुतों ने सच्चाई की पुनःस्थापना की अवश्यकता के विषय में बोला था । उन्होंने यह नहीं कहा, इसलिये, कि परमेश्वर ने उन्हें भविष्यवक्ता नियुक्त किया था । इसके स्थान पर, उन्होंने शिक्षाओं और प्रथाओं को सुधारने का प्रयास किया जिसे वे समझते थे कि बदल दिया गये थे या भ्रष्ट हो गए थे । उनके प्रयासों से कई प्रॉटैस्टैन्ट गिरजाघर संगठन बन गए । इस सुधार के परिणामस्वरूप धार्मिक स्वतंत्रता पर अधिक जोर पड़ा, जिसने अन्तिम पुनःस्थापना का मार्ग खोल दिया था ।

उद्धारकर्ता के प्रेरितों ने इस विश्वव्यापी धर्मत्याग की भविष्यवाणी की थी । उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की थी कि यीशु मसीह का सुसमाचार और गिरजाघर पृथ्वी पर एक बार फिर पुनःस्थापित किया जाएगा ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

1 नफी 13
2 नफी 26:20–21
2 नफी 28
4 नफी 1:27
सि. और अनु. 86:1–3
मत्ती 24:9–11
मरकुस 12:1–9
प्रेरितों के काम 3:19–21
प्रेरितों के काम 20:28–30
गलतियों 1 :6–9
2 थिस्सलूनीकियों 2:1–12
(जोसिअ आयतें 2, 3, 7–9)
1 तीमुथियुस 4:1–3
2 तीमुथियुस 4:3–4
2 पतरस 2:1–2
आमोस 8:11–12
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन ''धर्मत्याग''
विश्वास के प्रति सच्चा, ''धर्मत्याग,'' पृष्ठ 13–14
आनन्द के लिए हमारी खोज, पृष्ठ 23–32
यीशु ही मसीह है, अध्याय 40, ''धर्मत्याग की लंबी रात''

महान धर्मत्याग

जांचकर्ताओं को समझना चाहिए कि यीशु मसीह और उसके प्रेरितों की मृत्यु के पश्चात विश्वव्यापी धर्मत्याग हुआ था । यदि कोई धर्मत्याग नहीं हुआ होता तो पुनःस्थापना की कोई अवश्यकता नहीं थी । जैसे हीरा काले मखमल पर अधिक चमकदार महसूस होता है, उसी प्रकार पुनःस्थापना महान धर्मत्याग के अन्धकार के समक्ष अधिक दृढ़ता से ध्यान आकर्षित करती है । जैसा आत्मा मार्गदर्शन करे, जांचकर्ता को उनकी जरूरतों और परिस्थितियों के स्तर के अनुसार महान धर्मत्याग के बारे में विस्तार से बताएं । आपका उद्देश्य उन्हें यीशु मसीह के सुसमचार की पुनःस्थापना की जरूरत को समझने में मदद करना है ।

मुख्य बातें

- यीशु मसीह का गिरजाघर प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की बुनियाद पर बनाया गया है (देखें इफिसियों 2:19–20; 4:11–14) । इन मार्गदर्शकों के पास दिव्य पौरोहित्य अधिकार होता है । प्रकटीकरण के द्वारा वे गिरजाघर के कामकाज का निर्देशन करते हैं । वे सैद्धान्तिक शुद्धता को कायम रखते हैं, धर्मविधियों के प्रबंधन को अधिकृत करते हैं, और अन्य पौरोहित्य अधिकार को नियुक्त और प्रदान करते हैं ।
- लोगों ने यीशु मसीह और प्रेरितों को अस्वीकार करके उन्हें मार डाला था (देखें मत्ती 24:9; 1 नफी 11:32–34; 2 नफी 27:5) । प्रेरितों की मृत्यु के साथ, अध्यक्षिक पौरोहित्य अधिकार गिरजाघर में नहीं था । परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा देने या अन्य बचाने वाली धर्मविधियों को करने का कोई अधिकार नहीं था । प्रकटीकरण बंद हो गए थे, और सिद्धान्त भ्रष्ट हो गए थे ।
- प्रेरितों की मृत्यु से पहले ही, सिद्धान्त से संबंधित कई विवाद उत्पन्न हुए थे । रोमन सम्राट, जिसने पहले मसीही लोगों पर अत्याचार किए थे, बाद में मसीह धर्म को अपना लिया था । धर्म से संबंधित प्रश्नों को परिषदों द्वारा सुलझा लिया गया था । उद्धारकर्ता द्वारा सीखाए गए सरल सिद्धान्तों और धर्मविधियों पर वाद-विवाद हुआ और संसारिक दर्शन के अनुरूप इन्हें बदल दिया गया था (देखें यशायाह 24:5) । उन्होंने धर्मशास्त्रों में से सरल और बहुमूल्य सिद्धान्तों को निकाल कर, उनमें फेर बदल कर दिए (1 नफी 13:26–40) । उन्होंने मिथ्या और बदले हुए सिद्धान्त के आधार पर, धर्ममतों या आस्था के वक्तव्यों को जारी किया था (देखें जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:19) । घमंड के कारण, कुछ लोग प्रभावशाली पद पाना चाहते थे (3 देखें यूहन्ना 1:9–10) । लोगों ने इन मिथ्या विचारों को स्वीकार कर लिया और उन मिथ्या शिक्षकों को सम्मान दिया जो दिव्य सच्चाई सीखाने के स्थान पर उनके मनपंसद सिद्धान्त सीखाते थे (देखें 2 तीमुथियुस 4:3–4) ।
- सम्पूर्ण इतिहास में, कई लोगों ने गंभीरता से मिथ्या धर्ममतों और सिद्धान्तों पर विश्वास किया है । उन्होंने उनको मिली ज्योति के अनुसार उपासना की है और अपनी प्रार्थानाओं के उत्तर पाएं हैं । फिर भी वे ''सच्चाई से इसलिए दूर रहे क्योंकि वे जानते नहीं है इसे कहां से पाए'' (सि. और अनु. 123:12) ।
- इसलिए, पुनःस्थापना की आवश्यकता थी न कि सुधार करने की । पौरोहित्य अधिकार प्रेरित पतरस के उत्तराधिकार की टुटी हुई कड़ी से जारी नहीं हुआ था । सुधार करना उस चीज को बदलना होता है जो पहले से मौजूद हो; पुनःस्थापना किसी चीज को उसकी असली अवस्था में वापस लाना होता है । इसलिए, महान धर्मत्याग पर विजय पाने के लिए दिव्य दूतों द्वारा पौरोहित्य अधिकार की पुनःस्थापना करना ही एकमात्र रास्ता था ।

जोसफ स्मिथ द्वारा यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना

जब परिस्थितियां उचित थी, स्वर्गीय पिता एक बार फिर से प्रेम में अपने बच्चों के पास पहुंचे । उन्होंने एक युवा जिसका नाम जोसफ स्मिथ था को भविष्यवक्ता नियुक्त किया था । उसके द्वारा यीशु मसीह के सुसमाचार की संपूर्णता को पृथ्वी पर पुनःस्थापित किया गया था ।

पाठ

जोसफ स्मिथ संयुक्त राज्य में रहते थे, जो शायद उस समय एकमात्र देश था जहां धार्मिक स्वतंत्रता थी । उस समय पूर्वी संयुक्त राज्य में महान धार्मिक हलचल थी । उसके परिवार के सदस्य गहनरूप से धार्मिक और निरंतर सच्चाई की खोज में लगे रहते थे । लेकिन कई सेवक उनके पास सच्चे सुसमाचार होने का दावा करते थे । जोसफ स्मिथ जानना चाहता था ''इनमें से कौन सा समुह सच्चा था,''(जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:18) । बाइबिल सीखाती थी कि ''एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा'' (इफिसियों 4:5) । जोसफ विभिन्न गिरजाघरों में गया, लेकिन वह उलझन में पड़ा रहा कि किस गिरजाघर से जुड़ना चाहिए । उसने बाद में लिखा था :

''विभिन्न वर्गो के बीच उलझन और विवाद इतना बड़ा था, कि मुझ जैसे नौजवान के लिए ... किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचना मुश्किल था कि कौन सही और कौन गलत था । ... इन शब्दों के युद्ध और विचारों की उत्तेजना के बीच, मैं अक्सर अपने आप से कहता थाः क्या करना चाहिये ? इन सभी समुहों में से कौन सा सही है; या, यह सभी बिलकुल गलत हैं ? यदि इनमें से कोई सही भी है, वह कौन सा है, और मुझे कैसे पता चलेगा ?'' (जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:8, 10) ।

जब वह विभिन्न विश्वासों के बीच सच्चाई को खोज रहा था, वह मार्गदर्शन के लिए बाइबिल की ओर मुड़ा । उसने पढ़ा, ''यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सबको उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी'' (याकूब 1:5) । इस अध्याय के कारण, जोसफ ने परमेश्वर से पूछने का निर्णय किया था कि उसे क्या करना चाहिए । 1820 की बसन्त में वह एक नजदीक के उपवन में गया और घुटनों के बल झुक कर प्रार्थना की । उसने अपने अनुभव का वर्णन किया थाः

''मैंने अपने सिर के ठीक ऊपर प्रकाश स्तम्भ को देखा, जिसका तेज सूर्य से बढ़कर था, वह धीरे-धीरे नीचे उतरा अन्ततः मेरे ऊपर आकर ठहर गया । ... जो प्रकाश मेरे ऊपर आकर रूका था उसमें मैंने दो व्यक्तियों को देखा, जिनके तेज और महिमा का वर्णन करना असंभव था, वे ठीक मेरे ऊपर हवा में खड़े थे । उनमें से एक ने, मुझे मेरा नाम लेकर बुलाया और दूसरे की ओर इशारा करते हुए कहा—*यह मेरा प्रिय पुत्र है । इसकी सुनो !* '' (जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:16–17) ।

इस दिव्य दर्शन में परमेश्वर पिता और उसका पुत्र, यीशु मसीह, जोसफ स्मिथ को दिखाई दिए थे । उद्धारकर्ता ने जोसफ को किसी भी गिरजाघर से न जुड़ने के लिए कहा, क्योंकि वे ''सभी गलत थे'' और ''सभी के धर्ममत घृणित थे ।'' उसने कहा था, ''वे केवल अपने होंठों से मेरे निकट हैं, लेकिन उनके हृदय मुझ से बहुत दूर हैं, वे ईश्वर की बातों को मनुष्य की आज्ञाओं के सिद्धान्तों के रूप मे सीखाते हैं, लेकिन वे उसकी शक्ति का इन्कार करते हैं'' (जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:19) । यद्यपि बहुत से अच्छे लोगों ने मसीह पर विश्वास किया और उसके सुसमाचार को समझने और सीखाने का प्रयास किया, लेकिन उनके पास सच्चाई की परिपूर्णता या बपतिस्मा देने और अन्य बचाने वाली धर्मविधियों को करने का अधिकार नहीं था । बदले हुए सिद्धान्त जैसे बपतिस्मा देने सहित अन्य धर्मविधियां, उन्हें विरासत में धर्मत्याग की अवस्था मिली थी जैसा कि प्रत्येक पीढ़ी को उससे पहले की पीढ़ी से मिलती रही थी । जैसा परमेश्वर ने आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, और अन्य भविष्यवक्ता के साथ किया था, उसने जोसफ स्मिथ को भविष्यवक्ता नियुक्त किया जिसके द्वारा सुसमाचार की परिपूर्णता को पृथ्वी पर पुनःस्थापित करना था ।

पिता और पुत्र के प्रकट होने के बाद, अन्य स्वर्गीय सन्देशवाहक, या दूत, जोसफ स्मिथ और उसके साथी ओलिवर कॉउडरी के पास भेजे गए थे । यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रकट हुआ और उसने जोसफ स्मिथ और ओलिवर कॉउडरी को हारूनी पौरोहित्य दिया, जिसमें बपतिस्मे की धर्मविधि को करने का अधिकार शामिल था । पतरस, याकूब, और यूहन्ना (मसीह के तीन प्रारंभिक प्रेरित) प्रकट हुए और जोसफ स्मिथ और ओलिवर कॉउडरी को मलकिसिदिक पौरोहित्य देकर, उसी अधिकार को पुनःस्थापित किया जो अतीत में मसीह के प्रेरितों को दिया गया था । इस पौरोहित्य अधिकार के साथ, जोसफ स्मिथ को यीशु मसीह के गिरजाघर को पृथ्वी पर फिर से स्थापित करने का निर्देश दिया गया था । उसके द्वारा, यीशु मसीह ने बारह प्रेरितों को नियुक्त किया था ।

जिस युग में हम रहते हैं इसे बाइबिल के भविष्यवक्ताओं ने अन्तिम दिन, अन्तिम दिनों, या समय की परिपूर्णता का समय कहा है । यह अवधि यीशु मसीह के द्वितीय आगमन से ठीक पहले का युग है । इसलिए इस गिरजाघर का नाम अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर रखा गया है ।

एक जीवित भविष्यवक्ता गिरजाघर को आज निर्देशन देता है । यह भविष्यवक्ता, अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का अध्यक्ष, जोसफ स्मिथ का अधिकृत उत्तराधिकारी है । वह और वर्तमान प्रेरित अपने अधिकार को जोसफ स्मिथ से निरंतर मिली अभिषेक की कड़ी को यीशु मसीह के साथ जोड़ सकते हैं ।

जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:16–17 को याद करें

पिता और पुत्र को देखने की जोसफ स्मिथ की व्याख्या को याद करें (जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:16–17), और हमेशा उसके स्वयं के शब्दों को प्रयोग करते हुए प्रथम दिव्य दर्शन की व्याख्या करने के लिए तैयार रहें। इसे जल्दी-से न कहें। सच्ची गवाही दें कि आप जानते हैं कि यह सच है। यह समझाने में संकोच न करें कि आप कैसे इसकी सच्चाई के बारे में जानते हैं। अपने साथी से भी ऐसा ही करने के लिए कहें।

गवाही दें

प्रचारक कर्तव्य का एक मुख्य भाग है वर्तमान भविष्यवक्ता और गिरजाघर के अध्यक्ष की गवाही देना।

धर्मशास्त्र अध्ययन

2 नफी 3
सि. और अनु. 112:30
इफिसियों 4:5
याकूब 1:5
इफिसियों 1:10
पुस्तिका, *भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की गवाही*

मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह का अन्य नियम

यह जानते हुए कि कई सदियों के अन्धकार के बाद संदेह, अविश्वास, और गलत जानकारी व्यापक होगी हमारे प्रिय स्वर्गीय पिता ने बाइबिल के समकक्ष एक अन्य पवित्र धर्मशास्त्र संकलन को प्रकट किया था, जिसमें यीशु मसीह के अनन्त सुसमाचार की परिपूर्णता सम्मलित है। पवित्र धर्मशास्त्र के इस संकलन में प्रभावकारी प्रमाण हैं कि जोसफ स्मिथ परमेश्वर के सच्चे भविष्वयक्ता हैं। यह अभिलेख मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह का अन्य नियम है।

जोसफ स्मिथ को स्वर्गीय दूत मरोनी द्वारा एक पहाड़ पर जाने का निर्देशन मिला था जहां स्वर्ण पट्टियां सदियों से छिपा कर रखी गई थी। इन स्वर्ण पट्टियों पर भविष्यवक्ताओं द्वारा अमरीका के कुछ प्राचीन निवासियों के साथ परमेश्वर की बातचीत का विवरण लिखा गया था। जोसफ स्मिथ ने इन पट्टियों के लेखों का परमेश्वर की शक्ति द्वारा अनुवाद किया था। मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता उद्धारकर्ता के मिशन के विषय जानते थे और उन्होंने उसके सुसमाचार को सीखाया था। उसके पुनरूत्थान के बाद, मसीह इन लोगों के बीच प्रकट हुआ था। उसने उन्हें अपना सुसमाचार सीखाया और अपने गिरजाघर को स्थापित किया था। मॉरमन की पुस्तक साबित करती है कि "परमेश्वर इस युग और पीढ़ी में भी मनुष्य को प्रेरित करता और अपने पवित्र कार्य के लिए नियुक्त करता है, जैसे कि उसने पुरानी पीढ़ियों में किया था" (सि. और अनु. 20:11)। यह जानने के लिए कि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है, व्यक्ति को इसे पढ़ना, मनन करना, और इसके विषय में प्रार्थना करनी चाहिए। सच्चाई के गंभीर खोजकर्ता को जल्द ही महसूस होगा कि मॉरमन की पुस्तक परमेश्वर का वचन है।

मॉरमन की पुस्तक के बारे में पढ़ना, मनन, और प्रार्थना करना अनन्त परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण हैं। जो मॉरमन की पुस्तक को पहली बार पढ़ना शुरू करते हैं वे इस को समझने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाते हैं कि जोसफ स्मिथ परमेश्वर का भविष्यवक्ता है और कि सच्चा गिरजाघर पृथ्वी पर पुनःस्थापित हो चुका है।

पुनःस्थापना की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए मॉरमन की पुस्तक का उपयोग करें

नीचे दिया गया एक उदाहरण है जिसे आप मॉरमन की पुस्तक का परिचय देते समय कह सकते हैं :

"परमेश्वर अपने बच्चों से प्रेम करता है, इसलिए जो हमने कहा है उसकी सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए उसने एक तरीका दिया है। यह मॉरमन की पुस्तक है। क्या आप इस पुस्तक के परिचय में अन्तिम दो परिच्छेदों को पढ़ेंगे ?"

दोनों परिच्छेदों में दिए विचार के अर्थ को ध्यानपूर्वक समझाएं और जांचकर्ता को मॉरमन की पुस्तक के इस हिस्से को पढ़ने के लिए वचनबद्ध होने और इन दो परिच्छेदों में बताए नियमों को लागू करने का निमंत्रण दें।

जब किसी व्यक्ति का मॉरमन की पुस्तक से परिचय कराते हैं, इसकी एक प्रति को उसे दिखाना मददगार होता है, संक्षिप्त में विषय की समीक्षा करें, और एक या दो परिच्छेदों को बांटे जो स्वयं आपके लिए अर्थपूर्ण हैं या जो उनके लिए अर्थपूर्ण हो सकते हैं।

पाठ

धर्मशास्त्र अध्ययन

मॉरमन की पुस्तक का शीर्षक पृष्ठ
मॉरमन की पुस्तक का परिचय, परिच्छेद 1–7
सि. और अनु. 1:17–23
सि. और अनु. 20:5–12
जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:27–64

पवित्र आत्मा द्वारा सच्चाई जानने के लिए प्रार्थना करें

पुनःस्थापना का यह संदेश या तो सच है या यह नहीं है । पवित्र आत्मा के द्वारा हम जान सकते हैं कि यह सच है, जैसा कि मरोनी 10:3–5 में वादा किया गया है । मॉरमन की पुस्तक के संदेश को पढ़ने और मनन करने बाद, जो कोई भी सच्चाई को जानना चाहता है उसे हमारे स्वर्गीय पिता से यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करनी चाहिए कि क्या यह सच है । ऐसा करने के लिए, हम अपने स्वर्गीय पिता को संबोधन करते हैं । हम उसे हमारी आशीषों के लिए धन्यवाद देते हैं और मॉरमन की पुस्तक के संदेश की सच्चाई समझाने के लिए कहते हैं । आत्मिक सच्चाइयों को कोई भी बिना प्रार्थना के नहीं जान सकता है ।

प्रार्थना

- हमारे स्वर्गीय पिता का संबोधन करें ("हमारे स्वर्ग में पिता, ...") ।
- अपने हृदय की अनुभूतियों को व्यक्त करें (आभार, प्रश्न,प्रमाणित करने का अनुरोध कि मॉरमन की पुस्तक सच है , और इत्यादि) ।
- समापन ("यीशु मसीह के नाम में, आमीन") ।

हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर में, पवित्र आत्मा हमें हमारे एहसासों और विचारों के द्वारा सच्चाई सीखाता है । पवित्र आत्मा से जो अनुभूतियां आती हैं वे शक्तिशाली होती हैं, लेकिन ये अक्सर कोमल और शान्त भी होती हैं । जब यह समझना शुरू करते हैं कि हम जो सीख रहे हैं वह सच है, हम पुनःस्थापना के बारे वह सब जानने के इच्छुक होते हैं जो हम जान सकते हैं ।

यह जानना कि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है इस ज्ञान की ओर ले जाता है कि जोसफ स्मिथ को भविष्यवक्ता नियुक्त किया गया था और कि यीशु मसीह का सुसमाचार उसके द्वारा पुनःस्थापित किया गया था ।

प्रार्थना

यद्यपि प्रार्थना की कई धर्मो और संस्कृतियों में एक भूमिका होती है, परमेश्वर और मनुष्य के बीच में प्रार्थना को बातचीत के माध्यम के रूप में बहुत कम समझा जाता है । जिन्हें आप सीखाते हैं उन्हें समझने में मदद करें कि वे अपने हृदय की अनुभूतियों को प्रार्थना में बोल सकते हैं । जब आप पाठ आरंभ या समाप्त करते हैं तो आप प्रार्थना का प्रदर्शन करें । सरल भाषा का उपयोग करें जिसे वे भी उनकी प्रार्थना में उपयोग कर सकें । उन्हें समझने में मदद करें कि स्वर्गीय पिता उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर, प्रतीकात्मकरूप से उनके हृदयों की अनुभूतियों और उनके मनों के विचारों के द्वारा देता है । यदि वे गंभीरता से और वास्तव में जानना चाहते हैं कि परमेश्वर है, वह उन्हें जवाब देगा । पाठ के अन्त में परिवार के मुखिया को घुटने के बल झुक कर प्रार्थना करने का निमंत्रण दें ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

अलमा 5:45–46
सि. और अनु. 8:2–3
यूहन्ना 14:26
मॉरमन की पुस्तक का परिचय, परिच्छेद 8–9

बपतिस्मा लेने का निमंत्रण

इस पाठ या किसी अन्य पाठ के दौरान, लोगों को बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण के लिए निमंत्रण देने में संकोच न करें ।

लोगों को बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण का निमंत्रण देने की तैयारी के लिए, बपतिस्मे के सिद्धान्त को सीखाएं और लोगों को अधिकृत व्यक्ति द्वारा बपतिस्मा लेने, पापों की माफी, और पवित्र आत्मा के शानदार उपहार को पाने के महत्व की गवाही दें । आप कह सकते हैं, "जब प्रभु आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं और आप महसूस करते हैं कि यह संदेश सच्चा है, क्या आप यीशु मसीह का अनुकरण करते हुए बपतिस्मा लेगें ?"

बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण का निमंत्रण विशिष्ट और प्रत्यक्ष होना चाहिए: "क्या आप यीशु मसीह का अनुकरण करते हुए उस व्यक्ति से बपतिस्मा लेने चाहेगें जिसके पास परमेश्वर का पौरोहित्य अधिकार है ? हम (दिनांक) को बपतिस्मे का सभा करेंगे । क्या आप उस दिन अपने आपको बपतिस्मा लेने के लिए तैयार करेंगे ?

पाठ

सीखाने के लिए विचार

इस खंड में आपके लिए इस पाठ की तैयारी करने और पढ़ाने के लिए विचार हैं। प्रार्थनापूर्वक आत्मा का अनुकरण करें जब आप इन विचारों का उपयोग करने का निर्णय लेते हैं। चुने हुए विचारों को अपने पाठ की योजना में शामिल करें। ध्यान रखें, जिन्हें आप सीखाते हैं उनकी जरूरतों को पूरा करने लिए, ये विचार केवल सुझाव हैं—आवश्यकताएं नहीं हैं।

लघु पाठ योजना (3–5 मिनट)

सदियों तक खो जाने के पश्चात, यीशु मसीह का सुसमाचार प्रिय स्वर्गीय पिता द्वारा एक जीवित भविष्वक्ता के माध्यम से पृथ्वी पर पुनःस्थापित किया गया है। मॉरमन की पुस्तक इस बात का प्रमाण है। आप इसे अपने हाथों में पकड़ सकते हैं। आप इसे पढ़ सकते हैं, मनन करें कैसे इस पुस्तक के संदेश आपके जीवन का सुधार कर सकते हैं, और यह जानने के लिए प्रार्थना करें कि यह संदेश परमेश्वर का वचन है।

- परमेश्वर हमारे प्रिय स्वर्गीय पिता है
- सुसमाचार परिवारों को आशीष देता है
- स्वर्गीय पिता अपने सुसमाचार को प्रत्येक प्रबंध में प्रकट करता है
- उद्धारकर्ता की पृथ्वी की सेवकाई और प्रायश्चित
- महान धर्मत्याग
- जोसफ स्मिथ के माध्यम से यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना
- मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह का अन्य नियम
- पवित्र आत्मा द्वारा सच्चाई जानने के लिए प्रार्थना करें

प्रतिज्ञाएं :

- क्या आप मॉरमन की पुस्तक को पढ़ेंगे और यह जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि यह परमेश्वर का वचन है ?
- क्या आप यह जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि जोसफ स्मिथ एक भविष्यवक्ता था ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

औसत पाठ योजना (10–15 मिनट)

हमारा संदेश अदभुत और सरल है। परमेश्वर हमारा पिता है। हम उसके बच्चे हैं। हम उसके परिवार के सदस्य हैं। वह हमसे प्रेम करता है। संसार के आरंभ से, उसने प्रेम और चिन्ता का एक नमूने का पालन किया है। यीशु मसीह का सुसमाचार प्रकट करने के लिए वह कई बार प्रेम से संपर्क करता है ताकि उसके बच्चे जान सकें कि उसके पास वापस कैसे जाना है। उसने इसे भविष्यवक्ताओं को प्रकट किया है जैसे आदम, नूह, इब्राहीम, और मूसा। लेकिन लोगों ने हर बार उस सुसमाचार को अस्वीकार किया। दो हजार वर्ष पूर्व, यीशु मसीह ने स्वयं अपने सुसमाचार की सीखाया और अपना गिरजाघर स्थापित किया, और प्रायश्चित को पूरा किया था। आश्चर्यजनकरूप से, लोगों ने यीशु को भी अस्वीकार कर दिया था। जब कभी भी लोगों ने सच्चे सिद्धान्तों और धर्मविधियों का अनादर और विकृत किया है, परमेश्वर ने गिरजाघर में सेवा करने के अधिकार को वापस लिया है।

हमारा आपको और सभी लोगों को इन सच्चाइयों को उनके साथ जोड़ने का निमंत्रण है जिन्हें आप पहले ही संचित किए हुए हैं। हमारे प्रमाण पर विचार करें कि स्वर्गीय पिता और उसका पुत्र, यीशु मसीह, फिर से परमेश्वर के बच्चों तक प्रेम में पहुंचे हैं और एक भविष्यवक्ता को सुसमाचार की परिपूर्णता को प्रकट किया है। इस भविष्यवक्ता का नाम जोसफ स्मिथ है। इस महिमापूर्ण सच्चाई का प्रमाण एक पुस्तक में मिलता है—मॉरमन की पुस्तक—जिसे आप पढ़, मनन, और इसके बारे में प्रार्थना कर सकते हैं। यदि आप सच्चे हृदय, सच्ची इच्छा और मसीह में विश्वास के साथ प्रार्थना करेंगे, परमेश्वर पवित्र आत्मा की शक्ति से आपको बताएगा कि यह सच है।

पाठ

प्रतिज्ञाएं :

- क्या आप यह जानने के लिए इसे पढ़ेंगे और प्रार्थना करेंगे कि मॉरमन की पुस्तक परमेश्वर का वचन है ?
- क्या आप यह जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि जोसफ स्मिथ एक भविष्यवक्ता था ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं ।

पूर्ण पाठ योजना (30–45 मिनट)

- परमेश्वर हमारा प्रिय स्वर्गीय पिता है
  - हम परमेश्वर के बच्चे हैं (देखें प्रेरितों के काम 17:29) ।
  - परमेश्वर हम से प्रेम करता और सही चुनाव करने में हमारी मदद करेगा ।
  - यीशु मसीह के द्वारा, हम परमेश्वर के साथ फिर से रह सकते हैं (देखें यूहन्ना 3:16–17) ।
- सुसमाचार परिवारों को आशीषित करता है
  - यीशु मसीह का सुसमाचार परिवारों को अधिक मजबूत संबंधों का विकास करने में मदद करता है ।
  - परिवार परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए जाते हैं; ये समय और अनन्तता में अत्याधिक महत्वपूर्ण समाजिक इकाई हैं (देखें सि. और अनु. 49:15–16) ।
  - सुसमाचार नियमों को सीखने, सीखाने, और लागू करने के लिए परिवार एक सर्वोत्तम स्थान है (देखें सि. और अनु. 68:25; उत्पति 18:19; व्यवस्थाविवरण 6:7) ।
  - परिवार सुरक्षा, शान्ति, और आनन्द का स्थान हो सकते हैं ।
- स्वर्गीय पिता प्रत्येक युग में अपने सुसमाचार को प्रकट करता है
  - अपने सुसमाचार को सीखाने के लिए परमेश्वर भविष्यवक्ताओं को नियुक्त करता है (देखें आमोस 3:7) ।
  - धर्मत्याग का अर्थ भविष्यवक्ताओं और सुसमाचार को अस्वीकार करना है ।
  - प्रबंध समय की वे अवधियां होती हैं जब भविष्यवक्ता सुसमाचार सीखाते हैं । पिछले प्रबंध धर्मत्याग में समाप्त हो गए थे (देखें सि. और अनु. 136:36–38) ।
  - आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, और सभी अन्य प्राचीन भविष्यवक्ताओं ने सुसमाचार सीखाया था (देखें मूसा 5:4–12) ।
- उद्धारकर्ता की पृथ्वी की सेवकाई और प्रायश्चित
  - परमेश्वर के पुत्र ने सुसमाचार को पुनःस्थापित किया और सीखाया था । उसने कई चमत्कार किए थे (देखें धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, "चमत्कार," 165) ।
  - वह प्रेरितों को नियुक्त करता और उन्हें सुसमाचार सीखाने और बचाने वाली धर्मविधियां जैसे बपत्सिमा करने के लिए पौरोहित्य अधिकार देता है (देखें यूहन्ना 15:16) ।
  - मसीह ने अपना गिरजाघर स्थापित किया था ।
  - मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया था, और उसके प्रेरित अस्वीकार कर दिए और मार डाले गए थे (देखें मत्ती 27:35; मरकुस 15:25) ।
  - मसीह ने प्रायश्चित को पूरा किया था (देखें धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, "प्रायश्चित करना, प्रायश्चित," 22–23) ।
- महान धर्मत्याग
  - भविष्यवक्ता द्वारा बिना प्रकटीकरण के, लोग आत्मिक अन्धकार में पतित हो गए (देखें आमोस 8:11–12) ।

पाठ

- भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने महान धर्मत्याग के विषय में भविष्यवाणी की थी (देखें 2 थिस्सलूनीकियों 2:1–3)।

- जोसफ स्मिथ के द्वारा यीशु मसीह के सुसमचार की पुनःस्थापना
  - जोसफ स्मिथ ने सच्चाई की खोज की थी (देखें जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:8, 10)।
  - परमेश्वर और यीशु मसीह जोसफ स्मिथ को दिखाई दिए थे (देखें जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:16–17)
  - पहले के प्रबंधों के भविष्यवक्ताओं के अनुसार, जोसफ स्मिथ को इस अन्तिम प्रबंध का भविष्यवक्ता नियुक्त किया गया था।
  - जोसफ स्मिथ द्वारा परमेश्वर ने सुसमाचार की परिपूर्णता को पुनःस्थापित किया था (देखें सि. और अनु. 35:17; 135:3)।
  - अन्य स्वर्गीय दूतों ने पौरोहित्य को पुनःस्थापित किया था, मसीह का गिरजाघर संगठित किया गया था (देखें सि. और अनु. 13; 27:12)।
  - एक जीवित भविष्यवक्ता आज गिरजाघर का निर्देशन करता है।

- मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह का अन्य नियम
  - मॉरमन की पुस्तक प्रभावशाली प्रमाण है कि जोसफ स्मिथ एक भविष्यवक्ता था।
  - जोसफ स्मिथ ने परमेश्वर की शक्ति से पट्टियों का अनुवाद किया था (देखें मॉरमन की पुस्तक का परिचय, परिच्छेद 5)।
  - मॉरमन की पुस्तक साबित करती है कि परमेश्वर प्रत्येक प्रबंध की तरह हमारे समय में भी भविष्यवक्ताओं को प्रेरणा देता है (देखें सि. और अनु. 20:5–12)।
  - मॉरमन की पुस्तक में यीशु मसीह के सुसमाचार की परिपूर्णता सम्मलित है (देखें सि. और अनु 20:8–9)।

- पवित्र आत्मा द्वारा सच्चाई जानने के लिए प्रार्थना करें
  - आप जान सकते हैं कि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है (देखें मरोनी मॉरमन की पुस्तक का परिचय, परिच्छेद 1, 8–9)।
  - आपके विचारों और अनुभूतियों द्वारा पवित्र आत्मा आपको सीखाएगा (देखें सि. और अनु. 8:2–3)।

प्रतिज्ञाएं :

- क्या आप मॉरमन की पुस्तक पढ़ेंगे और जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि यह परमेश्वर का वचन है ?
- क्या आप जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि जोसफ स्मिथ एक भविष्यवक्ता था ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

आपके सीखाने के बाद पूछे जाने वाले प्रश्न

- जो हमने सीखाया उसके विषय में आप के क्या प्रश्न हैं ?
- यदि आज पृथ्वी पर जीवित भविष्यवक्ता होता, आप उससे क्या पूछेगें?
- क्या आप महसूस करते हैं परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं को सुनता है ? क्यों ?
- क्या आप पता करना चाहेंगे कि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है ? क्यों ?

पाठ

मुख्य परिभाषाएं

- **चुनने की स्वतंत्रता:** योग्यता और सुविधा जो परमेश्वर लोगों को उनके स्वयं के लिए चुनने और कार्य करने के लिए देता है।

- **धर्मत्याग:** व्यक्तियों, गिरजाघर, और संपूर्ण राष्ट्र द्वारा सच्चाई से दूर जाना। इसमें भविष्यवक्तओं और अधिकार का विद्रोह और अस्वीकार सम्मलित है। धर्मत्याग के प्रमाण में परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करना, सुसमाचार धर्मविधियों को बदलना, और अनुबंधों को तोड़ना सम्मलित है (देखें यशायाह 24:5)।

- **प्रबंध:** समय की एक अवधि जिसमें प्रभु का कम से कम एक सेवक होता है जिसके पास पवित्र पौरोहित्य की कुंजियां होती हैं। यीशु मसीह के अतिरिक्त, भविष्यवक्ता जैसे आदम, इनोक, नूह, इब्राहीम, मूसा, और जोसफ स्मिथ प्रत्येक ने एक नए सुसमाचार प्रबंध को आरंभ किया था। जब प्रभु युग को संगठित करता है, सुसमाचार को फिर से प्रकट किया जाता है ताकि उस युग के लोगों को उद्धार की योजना के ज्ञान के लिए पिछले युग पर निर्भर न रहना पड़े। जोसफ स्मिथ ने जिस युग को आरंभ किया था इसे ''समय की परिपूर्णता का युग'' के रूप में जानते हैं।

- **पौरोहित्य :** मानवजाति के उद्धार के लिए यीशु मसीह के नाम में सभी कार्य करने का अधिकार और शक्ति जो परमेश्वर मनुष्य को देता है।

- **भविष्यवक्ता :** एक व्यक्ति जो परमेश्वर द्वारा और परमेश्वर के लिए बोलने के लिए नियुक्त किया जाता है। परमेश्वर के दूत के रूप में, भविष्यवक्ता परमेश्वर से पौरोहित्य अधिकार, आज्ञाएं, भविष्यवाणियां और प्रकटीकरण प्राप्त करता है। उसकी जिम्मेदारी परमेश्वर की इच्छा और उसके सच्चे स्वरूप को मानवजाति को बताना और उसके कामों के अर्थ को उन्हें समझाना है। भविष्यवक्ता पाप की भर्त्सना करता और इसके परिणाम को बताता है। वह धार्मिकता का प्रचारक है। विशेष अवसर पर, भविष्यवक्ता मानवजाति की भलाई के लिए भविष्यवाणी करने के लिए प्रेरित हो सकता है। इसलिये, उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी, मसीह की गवाही देना है।

- **मुक्तिदाता :** यीशु मसीह मानवजाति का मुक्तिदाता है क्योंकि उसने, अपने प्रायश्चित के द्वारा, मानवजाति के पापों के मूल्य को चुकाया था और लोगों के पुनरूत्थान को संभव किया था। मुक्ति देने का अर्थ छुड़ाना, खरीदना, या फिरौती देना है, जैसे भुगतान करके किसी व्यक्ति को गुलामी से स्वतंत्र करना। मुक्ति यीशु मसीह के प्रायश्चित और पापों से मुक्ति को संदर्भ करती है। मसीह का प्रायश्चित संपूर्ण मानवजाति को शारीरिक मृत्यु से मुक्ति दिलाता है। उसके प्रायश्चित के द्वारा, जिसमें उसका गतस्मनी में और सलीब पर कष्ट सहना सम्मलित है, उसके पुनरूत्थान के द्वारा भी, जो उसमें विश्वास और पश्चाताप करते हैं आत्मिक मृत्यु से मुक्ति पाते हैं।

- **सुधारक :** सुधार करने का अर्थ बदलाव करके किसी चीज को बेहतर बनाना। *सुधारक* शब्द उन पुरूषों और स्त्रियों को संदर्भ करता है (जैसे मार्टिन लूथर, जोन कैलवीन, विलियम टीनडेल, और जोन वाइक्लिफ) जिन्होंने प्रचलित गिरजाघर की उन प्रथाओं का विरोध किया था, जिन्हें वे महसूस करते थे कि उनमें सुधार किया जाना चाहिए।

- **पुनःस्थापना :** पुनःस्थापना करने का अर्थ है पुरानी अवस्था में वापस लौटना, या वापस लाना। पुनःस्थापना, जैसे कि अन्तिम-दिनों के सन्त उपयोग करते हैं, का अर्थ है कि यीशु मसीह का गिरजाघर, जो कि धर्मत्याग के दौरान लुप्त गया था, को इसकी प्रारंभिक अवस्था में वापस लाया गया था जैसा यीशु मसीह ने संगठित किया था। सुधार से भिन्न, पुनःस्थापना को प्रकटीकरण के माध्यम से दिव्य अधिकार के द्वारा पाया था।

- **प्रकटीकरण :** परमेश्वर का अपने बच्चों के साथ पृथ्वी पर संपर्क। प्रकटीकरण मसीह की ज्योति और पवित्र आत्मा के माध्यम से प्रेरणा, दिव्यदर्शनों, सपनों, या स्वर्गदूतों की भेंटों के द्वारा आ सकता है। प्रकटीकरण मार्गदर्शन देता है जो विश्वासी को अनन्त उद्धार की ओर सिलेस्टियल राज्य में ले जा सकता है। प्रभु अपने भविष्वक्ताओं को अपना कार्य प्रकट करता और विश्वास करने वालों को प्रमाणित करता है कि भविष्यवक्ताओं को मिले प्रकटीकरण सच्चे हैं (देखें अमोस 3:7)। प्रकटीकरण द्वारा, प्रभु व्यक्तियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन देता है जो इसकी खोज करते और विश्वास रखते, पश्चाताप करते, और यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रति आज्ञाकारी रहते हैं।

जिन्हें आप सीखाते हैं उनके लिए अन्य शब्द जिसे अतिरिक्त परिभाषा की अवश्यकता हो

- प्रेरित
- बाइबिल
- अन्त तक धीरज धरना
- पवित्र आत्मा का उपहार
- सुसमाचार
- आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता और अवज्ञा
- उद्धार के लिए धर्मविधियां
- प्रार्थना
- उसकी उपस्थिति में रहने के लिए वापस जाना
- उद्धारकर्ता
- धर्मशास्त्र
- पाप
- प्रबंधक

पाठ

सुधारक और संसार के धार्मिक मार्गदर्शक

निम्नलिखित पृष्ठभूमि सूचना का उपयोग केवल आवश्यकता होने पर ही किया जाना चाहिए ।

जोन वाइक्लिफ : 14 वीं शताब्दी में इंगलैन्ड में पैदा हुए थे । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में धार्मिक अध्ययन के विद्यार्थी । सीखाया था कि कैथोलिक गिरजाघर के पास पौरोहित्य कुंजियां नहीं थी, कि पवित्र यूखारिस्त (या प्रभु-भोज) वास्तव में मसीह का शरीर नहीं था, और कि गिरजाघर को लोगों पर राजनीतिक शक्ति का उपयोग नहीं करना चाहिए । बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया था । 31 दिसंबर 1384 में देहांत हुआ था ।

मार्टिन लूथर : जर्मनी में 10 नवंबर 1483 को जन्म हुआ था । एरफर्ट और विटेनबर्ग विश्वविद्यालय के अध्ययन किया था । लोगों द्वारा धन देकर उनके पापों से क्षमा की प्रथा सहित, प्रचलित शिक्षाओं के विरोध में रोमन कैथलिक के कैसल गिरजाघर के दरवाजे पर 95 शोध-पत्र कील से ठोके थे । 18 फरवरी 1546 में देहांत हुआ था ।

विलियम टीनडेल : 1494 वेल्स में जन्म हुआ था । ऑक्फोर्ड और केंब्रीज में अध्ययन किया । नए नियम का अंग्रेजी में अनुवाद किया था । धार्मिक नेताओं के मिथ्या सिद्धान्तों और भ्रष्टाचार को ऊजागर करने के लिए धर्मशास्त्रों को आम लोगों को उपलब्ध कराए थे । उसे 6 अक्टूबर 1536 को मृत्युदंड दिया गया था ।

जोन कैलवीन : फ्रांस में, 10 जुलाई 1509 को जन्म हुआ था । याजक बनने के लिए पैरिस में अध्ययन किया था । कैथलिक गिरजा में सुधार के आंदोलनों में मुख्य नेता । अपना अधिकतर जीवन स्वीजरलैंड में बिताया था । उसने सीखाया था कि मनुष्य स्वभाव से भ्रष्ट होता है और केवल परमेश्वर की महिमा ही उसे बचा सकती है । बाइबिल पर कई टिप्पणियां लिखी थी । 27 मई 1564 में देहांत हुआ था ।

सुधारकों पर अधिक जानकारी के लिए, प्रचारक पुस्तकालय में निम्नलिखित स्रोतों को देखें : James E. Talmage, *Jesus the Christ,* 692–703; M. Russell Ballard, *Our Search for Happiness*, 26–32 ।

जिस प्रकार मसीही संसार साहसी और दिव्य-दर्शी सुधारकों से आशीषित था, वैसे ही कई अन्य राष्ट्र और संस्कृतियां भी ऐसे ही कई सुधारकों से आशीषित थी ''जिसके योग्य [परमेश्वर] उन्हें समझता है'' (अलमा 29:8) । अन्य धार्मिक नेताओं की शिक्षाओं ने लोगों को अधिक सभ्य और भद्र बनने में मदद की थी ।

बुद्ध (गौतम) : नेपाल में हिन्दू मुखिया के घर 563 ई.पू. में जन्मे । अपने आसपास के लोगों के कष्टों से विचलित थे । पिता के राजसी महल से भाग कर संसार से संबंध त्याग दिया और तंगहाली में जीवन काटा था । ज्ञान की खोज में, उसने ''मुक्ति के मार्ग'' की खोज की थी । लगाव, दुख, या संसारिक सच्चाई से मुक्ति की दशा, यानि निवार्ण पाने का दावा किया था । बौद्ध भिक्षु समाज के शिक्षक बने ।

कॉगफूज़ू : 551 ई.पू. जन्म हुआ था । बचपन से अनाथ थे । पेशे से चीन के प्रथम अध्यापक थे । चीन के सर्वोत्तम आर्दश और समाजिक विचारक । आत्मिक अस्तित्व या दिव्य शक्तियों के विषय में बहुत कम कहा । विश्वास करते थे कि भगवान ने अच्छाई और सच्चाई का सर्मथक होने के लिए उन्हें एक पवित्र काम सौंपा था ।

मोहम्मद : ईसवी सन 570 में मक्का में पैदा हुए थे । बचपन से अनाथ थे । गरीबी में रहे थे । भरोसमंद शान्ति स्थापित करने वाले की प्रतिष्ठा प्राप्त की थी । 25 वर्ष की आयु में विवाह किया था । 610 में हीरा के पर्वत पर प्रार्थना और चिन्तन किया था । बताया कि स्वर्गदूत जिब्राएल उन्हें प्रकट हुआ और अल्लाह (परमेश्वर) का सन्देश दिया था । दावा किया कि जिब्राएल के माध्यम से परमेश्वर से 620 से 632 सन्देश प्राप्त किए थे । ये सन्देश, जिसे उन्होंने अपने शिष्यों को सुनाया था, बाद में कुरान, इस्लाम की पवित्र पुस्तक, में लिखे गए थे ।

पाठ

उद्धार की योजना

आपका उद्देश्य

जब आप सीखाते हैं, अपने जांचकर्ताओं को सिद्धान्त और अनुबन्ध 20:37 और बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्नों में सीखाई बपतिस्मे की योग्यताओं को पूरा करने के लिए तैयार करें। अपने जांचकर्ताओं को निम्नलिखित प्रतिज्ञाओं को बनाने और पालन करने का निमंत्रण देकर इसे अच्छी तरह पूरा किया जा सकता है।

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न

- क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमारा अनन्त पिता है ?
- क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, दुनिया का उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है ?
- क्या आप, साप्ताहिक रूप से प्रभु-भोज में शामिल होकर और अपने साथी सदस्यों की सेवा करने सहित, सब्त के दिन को पवित्र रखने के लिए तैयार हैं ?

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप यह जानने के लिए आप प्रार्थना करेंगे कि जो हमने सीखाया था वह सच है ?
- क्या आप अपने पापों से पश्चाताप करेंगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या आप उद्धारकर्ता का अनुकरण करेंगे और (दिनांक) को बपतिस्मा लेंगे ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

दूसरों की मदद कर यीशु मसीह के बारे में सीखना

प्रचारक यीशु मसीह की गवाही और सभी को उसके पास आने का निमंत्रण देते है ताकि वे बचाए जा सकें। जो उद्धारकर्ता के विषय में कम या बिलकुल नहीं जानते हैं उन्हें उसके विषय में विशिष्ट निर्देश देना महत्वपूर्ण है। मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह का अन्य नियम लोगों की मदद के लिए रची गई है कि "यीशु ही मसीह है, ... सभी राष्ट्रों में प्रत्यक्ष है" (मॉरमन की पुस्तक का शीर्षक पृष्ठ)। उद्धारकर्ता के विषय में सीखाना और गवाही देने के अति महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है उनके साथ मॉरमन की पुस्तक को पढ़ना। अन्य धर्मशास्त्रों में से परिच्छेद पढ़ना भी सहायक हो सकते हैं।

नीचे दिये सुझाव पर विचार करें। इसे इस पाठ या अन्य पाठों या अपने आप में एक पाठ के रूप में किया जा सकता है। जब सहायक हो, इस गतिविधि को बपतिस्मे से पहले और बपतिस्मे और पुष्टिकरण के बाद कई बार दोहराएं।

शीर्षक पृष्ठ और परिचय	इस पुस्तक के उद्देश्य को स्पष्ट करें।
1 नफी 10–11	लेही और नफी उद्धारकर्ता की गवाही देते हैं।
1 नफी 19	नफी उद्धारकर्ता की सेवकाई और प्रायश्चित की भविष्यवाणियों का वर्णन करता है।

2 नफी 2	लेही उद्धारकर्ता की मुक्तिदाता के रूप में गवाही देता है ।
2 नफी 9	याकूब प्रायश्चित की गवाही देता है ।
2 नफी 31–33	नफी मसीह के सिद्धान्तों को सीखाता है ।
इनोस	इनोस प्रायश्चित की शक्ति को अनुभव करता है ।
मूसायाह 2–5	राजा बिन्यामिन मसीह के विषय में सीखाता है ।
मूसायाह 12–16	यीशु मसीह की गवाही देने के लिए अभिनन्दी अपना जीवन दे देता है ।
अलमा 5, 7	अलमा उद्धारकर्ता की गवाही देता है ।
अलमा 17–22	लमनायटी यीशु मसीह की गवाही प्राप्त करते हैं ।
अलमा 34	अमूलक प्रायश्चित की गवाही देता है ।
अलमा 36	अलमा यीशु मसीह के प्रायश्चित की शक्ति को अनुभव करता है ।
अलमा 40–42	अलमा पुनरूत्थान और प्रायश्चित की गवाही देता है ।
इलामन 5	नफी और लेही उद्धारकर्ता की गवाही देने के लिए परमेश्वर के हाथों के औजार हैं ।
3 नफी 9–10	उद्धारकर्ता लोगों को उसके पास आने का निमंत्रण देता है ।
3 नफी 11–18	उद्धारकर्ता नफाटियों को पिता और उसके सिद्धान्तों को सीखाता है ।
3 नफी 27	उद्धारकर्ता अपने सुसमाचार को सीखाता है ।
ईथर 3	यारद का भाई उद्धारकर्ता को देखता है ।
ईथर 12	ईथर और मरोनी उद्धारकर्ता और उसके प्रायश्चित की शक्ति की गवाही देते हैं ।
मरोनी 7–8	मॉरमन मसीह के शुद्ध प्रेम और उसके प्रायश्चित के विषय में सीखाता है ।
मरोनी 10	मरोनी सभी को मसीह के पास आने और उसमें परिपूर्ण होने का निमंत्रण देता है ।
"जीवित मसीह"	भविष्यवक्ता और प्रेरित उद्धारकर्ता की गवाही देते हैं ।

पृथ्वी-से-पूर्व जीवन : हमारे लिए परमेश्वर का उद्देश्य और योजना

बहुत से लोग आश्चर्य करते हैं, "हम कहां से आए हैं ? हम यहां क्यों हैं ? हम कहां जाएंगे ?" उद्धार की योजना इन प्रश्नों का उत्तर हमें देती है ।

परमेश्वर हमारी आत्माओं का पिता है । हम सचमुच में उसकी सन्तान हैं, और वह हम से प्रेम करता है । इस पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले हम अपने पिता के साथ स्वर्ग में उसके अत्मिक बच्चों के रूप में उसके साथ रहते थे । हम, यद्यपि, शारीरिक शरीर में बिना नश्वरता के जीवन का अनुभव किए, अपने स्वर्गीय पिता के समान नहीं बन सकते थे और न ही हम कभी उन सभी आशीषों का उपभोग कर सकते थे जिनका वह करता है ।

परमेश्वर का संपूर्ण उद्देश्य—उसका कार्य और उसकी महिमा—हम सभी को उसकी आशीषों का उपभोग करने के योग्य बनाना है । अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने एक परिपूर्ण योजना दी है । पृथ्वी पर आने से पहले हमने उस योजना को समझा और स्वीकार किया था । धर्मशास्त्रों में परमेश्वर की योजना को दया की योजना, आनन्द की योजना, मुक्ति की योजना, और उद्धार की योजना के नाम से जाना जाता है ।

यीशु मसीह परमेश्वर की योजना का केन्द्र है । उसके प्रायश्चित के द्वारा, यीशु मसीह ने अपने पिता के उद्देश्य को पूरा किया और हम में से हर एक के नश्वरता और अमरत्व का उपभोग करना संभव किया । शैतान, या बुराई, परमेश्वर की योजना का शत्रु है ।

चुनने की स्वतंत्रता, या चुनने की योग्यता, परमेश्वर का अपने बच्चों के लिए सर्वोत्तम उपहारों में से एक है । हमारा अनन्त विकास इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे इस उपहार का प्रयोग करते हैं । हम यीशु मसीह या शैतान के पीछे चलने का चुनाव कर सकते हैं ।

पृथ्वी के जीवन के दौरान हम परमेश्वर से शारीरिक रूप से अलग हो जाते हैं, लेकिन वह चाहता है कि उसका हर एक बच्चा इस जीवन में शान्ति पाए और इस जीवन के बाद उसकी उपस्थिति में परिपूर्ण आनन्द पाए । वह चाहता है कि हम उसके समान बनें ।

पाठ

धर्मशास्त्र अध्ययन

परमेश्वर के बच्चे

सि. और अनु. 93:29
प्रेरितों के काम 17:29
इब्रानियों 12:9

परमेश्वर का उद्देश्य

मूसा 1:39यूहन्ना 17:3

पहले का जीवन

सि. और अनु. 138:53–56
मूसा 3:5
इब्राहीम 3:22–26
यिर्मयाह 1:5
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, ''पहले का जीवन'

सृष्टि

पिता के निर्देशन में, यीशु मसीह ने हमारे रहने और अनुभव पाने के लिए पृथ्वी की सृष्टि की थी । विकास और परमेश्वर के समान बनने के लिए, हम में से प्रत्येक को शरीर प्राप्त करना था और कुछ अवधि के लिए पृथ्वी पर हमारा परिक्षण किया जाना था । पृथ्वी पर रहने के दौरान हम परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति से अलग रहते हैं । हमें अपने पृथ्वी-पूर्व जीवन याद नहीं रहते हैं । हमें दृष्टि की बजाए विश्वास में होकर चलना पड़ेगा ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

1 नफी 17:36
अलमा 30:44
सि. और अनु. 88:41–47
मूसा 2:1
मूसा 6:63
इब्राहीम 3:24–25
जोसिअ, यूहन्ना 1:1–3
2 कुरून्थियों 5:6–7

चुनने की स्वतंत्रता और आदम और हव्वा का पतन

आदम और हव्वा पृथ्वी पर आने वाले परमेश्वर के बच्चों में सर्वप्रथम थे । परमेश्वर ने आदम और हव्वा की सृष्टि की थी और उन्हें अदन के बगीचे में रखा था । आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूप पर, हड्डियों और मांस से बनाया गया था । जब आदम और हव्वा बगीचे में थे, वे परमेश्वर की उपस्थिति में रहते थे और वे हमेशा रह सकते थे । वे निष्कपट थे, और परमेश्वर उनकी अवश्यकता को पूरा करते थे ।

अदन के बगीचे में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनकी चुनने की स्वतंत्रता दी थी । उसने उन्हें वर्जित फल, या भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल को खाने से मना किया था । इस आज्ञा का पालन करने का अर्थ था सदा के लिए उस बगीचे में रहना, लेकिन वे नश्वरता में विरोध का अनुभव करते हुए प्रगति नहीं कर सकते थे । वे आनन्द को नहीं समझ सकते थे क्योंकि वे दुख और दर्द का अनुभव नहीं कर सकते थे ।

शैतान ने आदम और हव्वा को वर्जित फल खाने का लालच दिया, और उन्होंने वैसा ही करने का चुनाव किया था । यह परमेश्वर की योजना का एक हिस्सा था । इस चुनाव के कारण, उन्हें बगीचे और परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति से दूर कर दिया गया । इस घटना को पतन कहते हैं । परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होना आत्मिक मृत्यु है । आदम और हव्वा नश्वर—शारीरिक मृत्य या शरीर और आत्मा के विच्छेद, के आधीन हो गए । वे अब रोग और हर प्रकार के कष्टों को अनुभव कर सकते थे । उनके पास भलाई और बुराई में से चुनने की स्वतंत्रता या चुनने की योग्यता थी । इस कारण से उनके लिए सीखना और विकास करना संभव हो गया था । इसके कारण उनके लिए गलत चुनाव करना और पाप करना भी संभव हो गया था । इसके अतिरिक्त, वे अब सन्तान उत्पन्न कर सकते थे , जिससे परमेश्वर के अन्य आत्मिक बच्चे, शरीर पाकर, और परिक्षण किए जाने के लिए, पृथ्वी पर आ सकते थे । केवल इसी तरह से परमेश्वर के बच्चे उन्नति कर और उसके समान बन सकते थे ।

पतन के बारे में सीखाना

जब इस सिद्धान्त को पहली बार सीखाएं, वह सब न सीखाएं इसके बारे में जो कुछ आप जानते हैं । बहुत ही सरलता से समझाएं कि परमेश्वर ने अपने दो बच्चों, आदम और हव्वा, को प्रथम माता-पिता होने के लिए चुना । उनके उल्लंघन करने के बाद वे पाप और मृत्यु दोनों के आधीन हो गए थे । वे अपने स्वयं के द्वारा स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में वापस रहने नहीं जा सकते थे । प्रभु ने आदम से बात की और यीशु मसीह के माध्यम से उसे उद्धार और मुक्ति की योजना सीखाई । उस योजना का अनुसरण करके, आदम और उसका परिवार इस जीवन में आनन्द पाते और वापस जाकर परमेश्वर के साथ रहते (देखें अलमा 18:36; 22:12–14) ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

बगीचे में

2 नफी 2
मूसा 2:26–31
मूसा 3:15–17
मूसा 5:11
उत्पत्ति 1:26–31
उत्पत्ति 2:15–17

पतन

2 नफी 2:25
अलमा 12:22–34
मूसा 4
मूसा 5:10–12
उत्पत्ति 3

हमारा पृथ्वी का जीवन

पृथ्वी पर जीवन एक आशीष और अवसर है । इस जीवन में हमारा उद्देश्य आनन्द पाना और परमेश्वर की उपस्थिति में वापस जाने के लिए तैयार होना है । नश्वरता में हम उस स्थिति में रहते हैं जहां हम आत्मिक और शारीरिक मृत्यु दोनों के आधीन हैं । परमेश्वर के पास मांस और हड्डियों का परिपूर्ण, महिमापूर्ण, अमर शरीर है । परमेश्वर के समान बनने और उसकी उपस्थिति में वापस जाने के लिए हमारे पास भी मांस और हड्डियों का परिपूर्ण, अमर शरीर होना चाहिए । यद्यपि, आदम और हव्वा पतन के कारण, पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति के पास अपूर्ण, नश्वर शरीर है और अन्ततः मर जाएंगे । यदि उद्धारकर्ता यीशु मसीह नहीं होता, तो मृत्यु भविष्य में स्वर्गीय पिता के साथ रहने की संपूर्ण आशा को समाप्त कर देती ।

शारीरिक मृत्यु के साथ-साथ, पाप एक मुख्य बाधा है, जो हमें हमारे स्वर्ग में पिता के समान बनने और उसकी उपस्थिति में वापस जाने से रोकती है । हमारी नश्वरता की दशा में लालच के कारण, हम अक्सर परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ते, और पाप करते हैं । हमारे पृथ्वी के जीवन के दौरान हम में से हर एक गलतियां करता है । यद्यपि, कई बार ऐसा लगता नहीं है, लेकिन पाप हमेशा दुख की ओर ले जाता है । पाप अपराध और शर्म की अनुभूतियां पैदा करता है । हमारे पापों के कारण, हम परमेश्वर के साथ रहने के तब तक अयोग्य रहते हैं जब तक हम क्षमा और शुद्ध नहीं किए जाते हैं ।

जब हम नश्वरता में होते हैं, हमें ऐसे अनुभव होते हैं जो आनन्द लाते हैं । हमें ऐसे भी अनुभव होते हैं जो कष्ट और दुख लाते हैं, इन में कुछ दूसरों के पापपूर्ण कामों के कारण होते हैं । ये अनुभव हमें, अच्छाई और बुराई में अन्तर करके, और चुनावों को बनाकर, सीखने और विकास करने के अवसर देते हैं । परमेश्वर हमें अच्छे के लिए प्रभावित करता है; शैतान पाप करने के लिए लालच देता है । शारीरिक मृत्यु के साथ, हम पापों के प्रभावों पर स्वयं विजय नहीं पा सकते । यीशु मसीह के प्रायश्चित के बिना हम लाचार हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

परिक्षण या परिक्षा की अवधि

2 नफी 2:21
2 नफी 9:27
मूसायाह 3:19
अलमा 12:21–24
अलमा 34:31–35
अलमा 42:2–10
इब्राहीम 3:25–26

चुनाव

2 नफी 2:26–29
यहोशु 24:15
युवा बल के लिए, "चुनने की स्वतंत्रता और जिम्मेदारी"

अच्छा और बुरा

मरोनी 7:12–19

पाप

रोमियों 3:23
1 यूहन्ना 1:8–10
1 यूहन्ना 3:4

अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के साथ नहीं रह सकती

1 नफी 10:20–21
अलमा 41:10–11
3 नफी 27:19
मूसा 6:57

पाठ

प्रायश्चित

संसार को संगठित करने से पहले, हमारे स्वर्गीय पिता ने यीशु मसीह को हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता होने के लिए चुना था । यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान ने हमारे लिए पतन के प्रभावों पर विजय पाना संभव किया था । संसार के आरंभ से सभी भविष्यवक्ताओं ने यीशु मसीह की हमारे मुक्तिदाता के रूप में गवाही दी थी ।

हम सभी शारीरिक मृत्यु का सामना करेंगे, लेकिन यीशु मसीह ने शारीरिक मृत्यु की बाधा पर हमारे लिए विजय पाई थी । जब वह सलीब पर मरा, उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग हो गई थी । तीसरे दिन, उसकी आत्मा और उसका शरीर फिर कभी न बिछुड़ने लिए, अनन्तरूप से एक हो गए । यह दिखाने के लिए कि उसके पास मांस और हड्डियों का अमर शरीर था, वह कई लोगों को दिखाई दिया था । शरीर और आत्मा के पुनःमिलन को पुनरूत्थान कहते हैं और यह हम में से प्रत्येक के लिए एक उपहार है । यीशु मसीह के पुनरूत्थान के कारण, हम सभी पुनःजीवित होगें चाहे हमने अच्छाई की हो या बुराई । हम सब के पास, मांस और हड्डी का परिपूर्ण अमर शरीर होगा जो फिर कभी रोग, कष्ट, या मृत्यु के आधीन नहीं होगा । पुनरूत्थान हमें फिर से परमेश्वर के पास न्याय पाने के लिए वापस जाने के योग्य बनाता है लेकिन यह हमें उसकी उपस्थिति में रहने के योग्य नहीं बनाता है । इस आशीष को पाने के लिए, हमें पापों से शुद्ध होना चाहिए ।

परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र, यीशु मसीह, को शारीरिक मृत्यु की बाधा के अतिरिक्त पाप की बाधा पर विजय पाने के लिए भेजा था । हम आदम और हव्वा के पतन के लिए जिम्मेदार नहीं, लेकिन हम अपने पापों के लिए जिम्मेदार हैं । परमेश्वर पाप के लिए किसी प्रकार की छुट नहीं दे सकता, और पाप हमें उसकी उपस्थिति में रहने से रोकता है । केवल उद्धारकर्ता के अनुग्रह और दया के माध्यम से हम पाप से शुद्ध होते हैं ताकि हम परमेश्वर के साथ फिर से रह सकें । यह यीशु मसीह में विश्वास, पश्चाताप करके, बपतिस्मा लेकर, पवित्र आत्मा का उपहार पाकर, और अन्त तक धीरज धरने से संभव होता है ।

उद्धार की योजना को पूरा करने के लिए, मसीह ने हमारे पापों के दण्ड के लिए मूल्य चुकाया था । केवल वही इस काम को करने के योग्य था । उसे पृथ्वी-पूर्व जीवन में नियुक्त और तैयार किया गया था । वह शारीरिक तौर में परमेश्वर का पुत्र था । वह पाप रहित और अपने पिता के प्रति पूर्णरूप से आज्ञाकारी था । यद्यपि उसे लालच दिया गया था, उसने कभी लालच से हार नहीं मानी । जब पिता ने अपने प्रिय पुत्र से संसार के पापों का मूल्य चुकाने के लिए कहा, यीशु इसके लिए तैयार और इच्छुक था । प्रायश्चित जिसमें गतस्मनी के बाग में उसका कष्ट सहना और सलीब पर उसके कष्ट और मृत्यु सम्मलित है और यह पुनरूत्थान के साथ पूरा हुआ था । यद्यपि उसने इतना कष्ट सहा जिसे समझ पाना मुश्किल है—कष्ट इतना अधिक था कि उसके शरीर के प्रत्येक रोम से लहू बहा था और उसने पिता से पूछा था कि क्या यह संभव था कि यह कष्ट उसे न सहना पड़े—उसने अपने पिता और हमारे लिए प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए पिता की इच्छा के सामने समपर्ण कर दिया था । अपने कष्ट सहने के द्वारा यीशु मसीह ने आत्मिक मृत्यु पर और अपने पुनरूत्थान के द्वारा शारीरिक मृत्यु पर विजय पाई थी इसे प्रायश्चित कहते हैं ।

मसीह ने वादा किया है कि वह हमारे पापों को इस शर्त पर क्षमा करता है कि हम उस में विश्वास, पश्चाताप, डुबकी का बपतिस्मा, और हाथों के रखने के द्वारा पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करके उसे स्वीकार करें, और अपने जीवन के अन्त तक धीरज रख कर उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें । निंरतर पश्चाताप के माध्यम से, हम क्षमा प्राप्त करते हैं और पवित्र आत्मा की शक्ति से शुद्ध होते हैं । हम अपराध के बोझ और शर्म से मुक्त होते हैं, और यीशु मसीह के माध्यम से हम वापस परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के योग्य होते हैं ।

जब हम यीशु मसीह के प्रायश्चित पर निर्भर करते हैं, वह हमें परिक्षाओं, रोगों, और कष्टों को सहने में हमारी मदद करता है । हम आनन्द, शान्ति, और दिलासा से भर जाते हैं । जीवन में जो कुछ भी अनुचित है यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा सही हो जाता है ।

हमारे पापों के दण्ड का मूल्य चुकाकर, यीशु ने, तथापि हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को दूर नहीं किया था । हमें दिखाना चाहिए कि हम उसे स्वीकार करते हैं और कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे । केवल प्रायश्चित के उपहार के द्वारा हम वापस जाकर परमेश्वर के साथ रह सकते हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

पुनरूत्थान

2 नफी 9:6–7
अलमा 11:42–45
अलमा 40:23
इलामन 14:15–19
सि. और अनु. 88:27–32
लूका 24:1–10, 36–39
1 कुरून्थियों 15:20–23
जोसिअ, 1 कुरून्थियों 15:40
1 कुरून्थियों 15:41–42
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, "मृत्यु, शारीरिक," "मृत्यु, आत्मिक," "पुनरूत्थान"
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, "प्रायश्चित करना, प्रायश्चित"

प्रायश्चित

2 नफी 2:6–8
अलमा 7:11–13
अलमा 34:8–10
सि. और अनु. 19:15–19
सि. और अनु. 45:3–5
यूहन्ना 3:16–17
1 यूहन्ना 1:7

सुसमाचार—एक मार्ग

2 नफी 9:1–24
2 नफी 31
अलमा 11:40
3 नफी 27
3 नफी 11:31–41
मरोनी 7:27–28

आत्मा का संसार

यद्यपि मसीह ने शारीरिक मृत्यु पर विजय पाई थी, फिर भी सब लोगों को मरना होगा, क्योंकि मृत्यु प्रक्रिया का वह हिस्सा है जिसके द्वारा हम नश्वरता से अमरत्व में परिवर्तित हो जाते हैं । मृत्यु होने पर हमारी आत्माएं आत्मा के संसार में चली जाती हैं । मृत्यु हमारे व्यक्तित्व या अच्छाई या बुराई की हमारी इच्छा को नहीं बदलती है । जो इस जीवन में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का चुनाव करते हैं वे आनन्द, शान्ति की अवस्था में और सभी चिन्ताओं और परेशानियों से दूर रहते हैं । जो इस जीवन में आज्ञा का पालन करने का चुनाव नहीं करते और पश्चाताप नहीं करते वे दुर्दशा की अवस्था में रहते हैं । आत्मा के संसार में सुसमाचार उन को सीखाया जाता है जिन्होंने पृथ्वी पर इसका पालन नहीं किया या उन्हें इसे सुनने का अवसर नहीं मिला था । जब तक हम पुनःजीवित नहीं होते हम आत्मा के संसार में रहते हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

सुसमाचार मृतक को सीखाया जाता है

सि. और अनु. 138
1 पतरस 3:19–20
1 पतरस 4:6

मृत्यु और आत्मा का संसार

अलमा 34:34
अलमा 40:11–14
समोपदेशक 12:7

पुनरूत्थान, न्याय, और अमरत्व

जब पुनरूत्थान के माध्यम से हमारे शरीर और आत्मा फिर से मिलते हैं, हमारा न्याय करने हमें परमेश्वर की उपस्थिति में लाया जाएगा । हम पूर्णरूप से अपनी धार्मिकता और अपने अपराध को याद रखेंगे । यदि हमने पश्चाताप किया है, हमें दया मिलेगी । हमारे कामों और इच्छाओं के अनुसार हमारा न्याय होगा ।

पुनरूत्थान के माध्यम से सभी लोग अमर हो जाएंगे—वे हमेशा के लिए जीवित रहेंगे । अमरत्व सभी लोगों के लिए मुफ्त उपहार है, चाहे वे धार्मिक हों या दुष्ट । यद्यपि, अमरत्व के समान, अनन्त जीवन सब के लिए नहीं है । अनन्त जीवन केवल उन्हीं को मिलेगा जिन्होंने उसके सुसमाचार का पालन किया होगा । यह उच्चत्तम अवस्था है जिसे हम पा सकते हैं । यह उनको मिलता है जो यीशु मसीह के प्रायश्चित के माध्यम से पाप और कष्टों से मुक्त होते हैं । यह उत्कर्ष है, इसका अर्थ है परमेश्वर के साथ अनन्त परिवार में रहना । यह परमेश्वर और यीशु मसीह को जानना और उनके समान जीवन जीना है ।

पुनरूत्थान और पुनर्जन्म

कुछ लोग पुनरूत्थान के सिद्धान्त को पुनर्जन्म की परिकल्पना समझ सकते हैं । पुनर्जन्म की परिकल्पना संसार में किसी दूसरे रूप में फिर से जन्म लेना है और यह एक मिथ्या सिद्धान्त है । पुनरूत्थान के सिद्धान्त में मांस और हड्डी के अमर शरीर का अनन्त उपहार प्राप्त करना है । यह सच्चा सिद्धान्त है । सुनिश्चित करें जिन्हें आप सीखाते हैं वे स्पष्टरूप से पुनरूत्थान के सिद्धान्त को समझते हैं ।

पाठ

महिमा का राज्य

अपने नश्वर जीवन के दौरान हम अच्छाई और बुराई से संबंधित चुनाव करते हैं । परमेश्वर हमें हमारे कामों और इच्छाओं के अनुसार उपहार देता है । क्योंकि परमेश्वर हर किसी को शरीर में किए गए कामों के अनुसार उपहार देता है, इसलिए अलग-अलग महिमा के राज्य हैं जो न्याय के बाद दिए जाएंगे । वे जो अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और सुसमाचार की धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं और इससे संबंधित अनुबन्धों का पालन करते हैं मसीह के प्रायश्चित द्वारा शुद्ध किए जाएंगे । उन्हें उच्चतम राज्य में उत्कर्ष मिलेगा, जिसे सिलेस्टियल राज्य भी कहते हैं । वे, उसके समान बनकर, परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे और आनन्द की परिपूर्णता प्राप्त करेंगे । वे अपने परिवार के उन सदस्यों के साथ अनन्तता में रहेंगे जो इसके योग्य होंगे । धर्मशास्त्रों में इस राज्य की महिमा या तेज की तुलना सूर्य से की गई है ।

वे लोग जो यीशु मसीह के सुसमाचार को परिपूर्णता से स्वीकार नहीं करते लेकिन सम्मानजनक जीवन जीते हैं उन्हें टैरिस्टियल राज्य में स्थान मिलेगा । इस राज्य की महिमा की तुलना चांद से की जाती है ।

वे जो अपने पापों को करते रहते हैं और इस जीवन में पश्चाताप नहीं करते हैं उन्हें निम्नतम राज्य का उपहार मिलेगा, जिसे टेलेस्टियल राज्य कहते हैं । इस राज्य की महिमा की तुलना तारों से की जाती है ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

पुनरूत्थान और पुनःस्थापना

2 नफी 9:14–15
याकूब 6:8–9
अलमा 42:13–15, 22–23

न्याय

2 नफी 28:23
मूसायाह 3:23–25
अलमा 5:15–21
अलमा 12:12–14
सि. और अनु. 132:12; 137:9
यूहन्ना 5:22

महिमा के राज्य

3 नफी 28:10
सि. और अनु. 76: परिचय
सि. और अनु. 76
सि. और अनु. 137
मत्ती 5:48
जोसिअ, 1 कुरून्थियों 15:40
1 कुरून्थियों 15:41–42

अनन्त जीवन

2 नफी 31:17–21
सि. और अनु. 14:7
सि. और अनु. 29:43–44
सि. और अनु. 45:8
सि. और अनु. 93:19
यूहन्ना 3:16
यूहन्ना 17:3

उद्धार की योजना

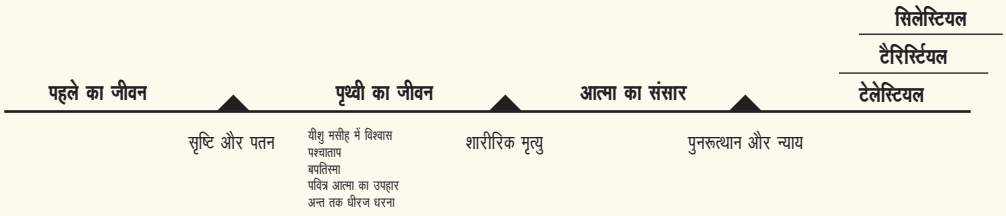

यीशु मसीह के प्रायश्चित ने उद्धार को संभव किया है ।

बपतिस्मा लेने का निमंत्रण

बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण का निमंत्रण विशिष्ट और प्रत्यक्ष होना चाहिए: "क्या आप यीशु मसीह का अनुकरण करते हुए उस व्यक्ति से बपतिस्मा लेने चाहेंगे जिसके पास परमेश्वर का पौरोहित्य अधिकार है ? हम [दिनांक] को बपतिस्मे की सभा करेंगे । क्या आप उस दिन अपने आपको बपतिस्मा लेने के लिए तैयार करेंगे ?"

सीखाने के लिए विचार

इस खंड में आपके लिए इस पाठ की तैयारी करने और पढ़ाने के लिए विचार हैं। प्रार्थनापूर्वक आत्मा का अनुकरण करें जब आप इन विचारों का उपयोग करने का निर्णय लेते हैं। चुने हुए विचारों को अपने पाठ की योजना में शामिल करें। ध्यान रखें, जिन्हें आप सीखाते हैं उनकी जरूरतों को पूरा करने लिए, ये विचार केवल सुझाव हैं—आवश्यकताएं नहीं हैं।

लघु पाठ योजना (3–5 मिनट)

उद्धार की योजना हमें सीखाती है हम कहां से आए है, हम यहां पृथ्वी पर क्यों है, और इस जीवन के बाद हम कहां जाएंगे। यह पहले के जीवन, नश्वर जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान, और अनन्तता तक के हमारे जीवन की यात्रा का मानचित्र बनाती है। यह योजना यह भी समझाती है कि हमारा प्रिय स्वर्गीय पिता इस यात्रा को सफल बनाने के लिए हमारी मदद कैसे करता है ताकि हम उसकी उपस्थिति में वापस जा सकें और उसके जैसे बनें। योजना पतन के प्रभावों पर विजय पाने के लिए यीशु मसीह के मिशन और प्रायश्चित पर केन्द्रीत है और हमारे लिए अनन्त जीवन को संभव करती है। हम आपको इस संदेश पर मनन और प्रार्थना करने के लिए निमंत्रण देते हैं।

- पृथ्वी-पूर्व जीवन : हमारे लिए परमेश्वर का उद्देश्य और योजना
- सृष्टि
- चुनने की स्वतंत्रता और आदम और हव्वा का पतन
- पृथ्वी पर हमारा जीवन
- प्रायश्चित
- आत्मा का संसार
- पुनरूत्थान, न्याय, और अमरत्व
- महिमा के राज्य

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप यह जानने के लिए आप प्रार्थना करेंगे कि जो हमने सीखाया वह सच है ?
- क्या आप अपने पापों से पश्चाताप करेंगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर में आएगें ?
- क्या आप उद्धारकर्ता का अनुकरण करेंगे और (दिनांक) को बपतिस्मा लेंगे ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

औसत पाठ योजना (10–15 मिनट)

हमारा संदेश हमें जीवन के उद्देश्य और हम कौन है, को समझने में मदद करता है। यह हमें शान्ति, आनन्द, और सुख पाने में आशा देता और मदद करता है। यह बताता है हम कहां से आए हैं, हम पृथ्वी पर क्यों हैं, और इस जीवन के बाद हम कहां जाएंगे। परमेश्वर हमारा पिता है, और वह हम से प्रेम करता है। हम उसके बच्चे हैं। हम उसके परिवार का हिस्सा हैं, और इस पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले हम उसके साथ रहते थे। उसके पास आनन्द की योजना है जो इस जीवन के बाद हमारे लिए उसकी उपस्थिति में जाना संभव करती है। हमारा विकास इस बात पर निर्भर करता है कि हमने परमेश्वर द्वारा दी गई चुनने की स्वतंत्रता, या चुनने की योग्यता का कैसे उपयोग किया है। उस योजना के हिस्से के रूप में, आदम के पतन ने हमारे लिए पृथ्वी पर आना, शारीरिक शरीर पाना, अनुभव लेना, और अपने स्वयं के परिवार पाना संभव किया था। लेकिन पतन के कारण शारीरिक मृत्यु भी आई, जो कि आत्मा का शरीर से अलग होना है, और आत्मिक मृत्यु, जो कि परमेश्वर से अलग होना है।

पाठ

पाठ 2 :
उद्धार की योजना

पाठ

यीशु मसीह परमेश्वर की योजना का केन्द्र है। यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान ने हमारे लिए पतन के प्रभावों पर विजय पाने के योग्य बनाया था। हम सभी पुनःजीवित होंगे और दर्द और रोग से मुक्त भौतिक शरीर के साथ हमेशा जीवित रहेंगे। मसीह ने आत्मिक मृत्यु पर विजय को भी संभव किया था। जब हम उसके सुसमाचार का पालन करते हैं वह दयापूर्वक हमारे पापों को क्षमा करता है। वह हमें चंगा करता है और इस जीवन में अपराध और शर्म को शान्ति और सुख में बदल देता है।

परमेश्वर की दयापूर्ण योजना के हिस्से के रूप में, हम सभी शारीरिक मृत्यु का सामना करेंगे। हमारी आत्मा हमारे शरीर से अलग जायेगी और कुछ समय के आत्मा के संसार में रहेगी। फिर अमर शरीर, हमारे शरीर और आत्मा का अनन्त मिलन, के साथ हम पुनःजीवित होते हैं। हमारे कामों और कामनाओं के अनुसार हमारा न्याय होगा। जिन्होंने सुसमाचार के अनुसार जीवन जीया होगा हमारे स्वर्गीय में पिता के महानत्तम उपहार, उसकी उपस्थिति में अनन्त जीवन के उपहार, को प्राप्त करेंगे।

हमारा स्वर्गीय पिता प्रेम में अपनी आनन्द की योजना को प्रकट करने के लिए फिर से अपने बच्चों के बीच जाता है। हम इस शानदार योजना के विषय में मॉरमन की पुस्तक में पढ़ते हैं, जिसे आप पढ़, मनन, और इसके बारे में प्रार्थना कर सकते हैं। हम आपको हमारे साथ गिरजाघर में आने और उपासना करने का निमंत्रण देते हैं।

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप यह जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि जो हमने सीखाया वह सच है ?
- क्या आप अपने पापों से पश्चाताप करेंगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या आप उद्धारकर्ता का अनुकरण करेंगे और (दिनांक) को बपतिस्मा लेंगे ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

पूर्ण पाठ योजना (30–45 मिनट)

- पृथ्वी-पूर्व जीवन : हमारे लिए परमेश्वर का उद्देश्य और योजना
  - परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है, और हम उसके बच्चे हैं (देखें प्रेरितों के काम 17:16–34; इब्रानियों 12:9)।
  - हमारे आनन्द के लिए परमेश्वर की योजना। यीशु मसीह इस योजना का केन्द्र है।
  - परमेश्वर की आनन्द की योजना उसकी उपस्थिति में जाना संभव करती है (देखें मूसा 1:39)।
  - हमारा अनन्त विकास इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपनी चुनने की स्वतंत्रता का कैसे उपयोग करते हैं (देखें 2 नफी 2:27–29)।
- सृष्टि
  - पिता के निर्देशन में यीशु मसीह ने पृथ्वी की सृष्टि की थी (देखें इब्रानियों 1:1–3)।
- चुनने की स्वतंत्रता और आदम और हव्वा का पतन
  - आदम और हव्वा को परमेश्वर की स्वरुप में बनाया गया था (देखें उत्पति 1:26–27)।
  - अदन के बगीचे में वे निष्कपट थे और परमेश्वर की उपस्थिति में रहते थे।
  - क्योंकि उन्होंने वर्जित फल को खाया था, उन्हें बगीचे से बाहर निकाल दिया गया था (देखें मूसा 4:19–31)। इसे पतन कहते हैं।
  - वे नश्वर बन गए, वे बच्चे पैदा करने के योग्य हो गए, और पाप और मृत्यु के आधीन हो गए थे (देखें 2 नफी 2:22–25; मूसा 5:11)।

पाठ

- हमारा पृथ्वी का जीवन
  - जीवन में हमारा उद्देश्य परिवारों के रूप में स्थाई शान्ति, आनन्द, और सुख पाना और वापस जाकर परमेश्वर के साथ रहना है।
  - हम पृथ्वी पर परिक्षण के लिए आते हैं (देखें इब्राहीम 3:24–25)।
  - हम मांस और हड्डियों का शरीर पाते हैं, परन्तु हम शारीरिक मृत्यु के आधीन हैं।
  - परमेश्वर आज्ञाएं देता है। यदि हम आज्ञाकारी रहते हैं, हम आशीषित होते हैं। यदि हम अवज्ञा करते हैं, हम पाप करते और परिणामों का सामना करेंगे।
  - सभी पापों का मूल्य चुकाया जाएगा, चाहे हमारे द्वारा या मसीह द्वारा (देखें सि. और अनु. 19:15–20)।
  - हम चुनाव करते हैं, और हम सभी पाप करते हैं (देखें रोमियों 3:23)।
  - हम अनुभवों को प्राप्त करते हैं जो आनन्द और दुख भी लाते हैं।
  - हम बिना मसीह के शारीरिक या आत्मिक मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते हैं।
- प्रायश्चित
  - क्योंकि यीशु मसीह ने भौतिक मृत्यु पर विजय पाई थी, इसलिए हम सभी पुनःजीवित होंगे (देखें अलमा 11:41–43)।
  - मसीह के प्रायश्चित के द्वारा हम पाप से शुद्ध होते हैं ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में वापस जा सकें (देखें 2 नफी 9:8–9)
  - जब हम मसीह में विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का उपहार, और अन्त तक धीरज धरते हैं तो वह हमारे पापों को क्षमा कर देगा।
- आत्मा का संसार
  - सभी लोग मरते हैं।
  - मृत्यु होने पर हमारी आत्माएं आत्मा के संसार में चली जाती हैं।
  - इस जीवन में हमारे द्वारा किए कामों के अनुसार, हम या तो दुख की अवस्था में या शान्ति और आराम की अवस्था में जीवन जीते हैं।
- पुनरूत्थान, न्याय, और अमरत्व
  - हमारी आत्माएं और शरीर पुनरूत्थान में फिर से एक होंगे (देखें अलमा 11:42–45; 40:23)।
  - अपने कामों और इच्छाओं के अनुसार न्याय पाने के लिए हम परमेश्वर की उपस्थिति में वापस जाएंगे।
  - यदि हम पश्चाताप करते हैं, तो हमें दया मिलेगी।
  - अनन्त जीवन परमेश्वर का उनके लिए उपहार है जो पूर्णरूप से यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन करते हैं (देखें सि. और अनु. 14:7)।
- महिमा के राज्य (देखें सि. और अनु. 76; 137; 1 कुरुन्थियों 15:40–42)।
  - हमें अपने कामों और इच्छाओं के अनुसार उपहार मिलते हैं (देखें सि. और अनु. 137:9)।
  - जो सुसमाचार को प्राप्त करते और अपने पूरे जीवन भर साहसी होकर इसका पालन करते हैं उन्हें सिलेस्टियल राज्य मिलेगा (देखें सि. और अनु. 76:50–70)।
  - माननीय लोग जो "मनुष्य की कुटिलता द्वारा अन्धे किये जाते हैं" और जो "यीशु [मसीह] की गवाही में साहसी नहीं होतें हैं" उन्हें टैरिस्ट्रियल राज्य मिलेगा (देखें सि. और अनु. 76:75, 79)।
  - जो पाप करते और पश्चाताप नहीं करते हैं वे अपने पापों के कष्ट और मूल्य चुकाकर टेलेस्टियल महिमा को पाएंगे।

पाठ

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप यह जानने के लिए प्रार्थना करेंगे कि जो हमने सीखाया वह सच है ?
- क्या आप अपने पापों से पश्चाताप करेंगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या आप उद्धारकर्ता का अनुकरण करोगे और (दिनांक) को बपतिस्मा लोगे ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं ।

सीखाने के बाद पूछने के लिए प्रश्न

- जो हमने सीखाया है उसके विषय में आपके क्या प्रश्न हैं ?
- आप के लिए और आप के परिवार के लिए परमेश्वर की योजना के बारे में आप क्या समझते हैं ?
- जो हमने आपको सीखाया है, उससे आप यीशु मसीह की भूमिका के बारे में क्या समझते हैं ? आपके लिए इसका क्या मतलब है ?

मुख्य परिभाषाएं

निम्नलिखित वे शब्द हैं जो अक्सर समझ में नहीं आते हैं । सुनिश्चित करें आप इनकी स्पष्टता से व्याख्या करते हैं और पता करें जिन्हें आप सीखा रहे हैं वे इसे समझते हैं ।

- **प्रायश्चित :** जैसा कि धर्मशास्त्रों में प्रयोग किया गया है, प्रायश्चित करना पाप के दण्ड की पीड़ा सहना है, जिससे पश्चातापी पापियों से पाप के प्रभाव मिट जाते हैं और वे परमेश्वर की उपस्थिति के अनुकूल हो जाते हैं । यीशु मसीह ने गत्समनी में और सलीब पर कष्ट सहे थे । केवल वही संपूर्ण मानवजाति के लिए परिपूर्ण प्रायश्चित करने के योग्य था । उसने गतस्मनी में हमारे पापों के दण्ड को सहा और सलीब पर मरा था । उसने हम सबों के कष्ट, रोग, लालच, पीड़ा, और दुर्बलताओं को अपना लिया था (देखें अलमा 7:11–12) ।
- **उत्कर्ष :** परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्त जीवन; हमारे स्वर्ग के पिता के समान बनना और उसकी उपस्थिति में रहना । परमेश्वर के सभी उपहारों में महानतम है । उत्कर्ष मसीह के प्रायश्चित के माध्यम और सुसमाचार के सभी नियमों और धर्मविधियों का पालन करने से मिलता है ।
- **पतन (आदम और हव्वा का) :** जब आदम और हव्वा ने वर्जित फल खाया, वे नश्वर बन गए—यानि, पाप और मृत्यु के आधीन हो गए । आदम पृथ्वी पर ''प्रथम मनुष्य'' बना था (मूसा 3:7) । अन्तिम-दिन के प्रकटीकरण स्पष्ट करते हैं कि पतन एक आशीष है और कि आदम और हव्वा का प्रथम माता-पिता होने के लिए सम्मान किया जाना चाहिए ।
- **न्याय :** परमेश्वर, यीशु मसीह के माध्यम से, हमारी व्यक्तिगतरूप से जांच करके हमें मिलने वाली अनन्त महिमा को निधार्रित करेगा । यह न्याय, यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान की हमारी स्वीकृति सहित, परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर होगा । हमें अपना अनन्त पुरस्कार हमारे कामों और इच्छाओं के आधार पर मिलेगा कि वे अच्छी थी या बुरी ।
- **अमरत्व :** पुनरूत्थान की अवस्था में हमेशा के लिए जीवित रहने की स्थिति, शारीरिक मृत्यु के आधीन नहीं ।
- **नश्वरता :** जन्म से लेकर शारीरिक मृत्यु तक की अवधि ।
- **शारीरिक मृत्यु :** हमारे भौतिक शरीर से हमारी आत्मा, जोकि अमर है और कभी मरती नहीं है, का अलग होना ।
- **पहले का जीवन (नश्वरता पूर्व; पृथ्वी-पूर्व जीवन) :** स्वर्ग में अपने पिता के बच्चों के रूप में, इस पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले हम उसकी उपस्थिति में रहते थे । पहले के जीवन में हमारे पास भौतिक शरीर नहीं था ।
- **मुक्ति :** मुक्त करना, खरीदना, या मूल्य चुकाना, जैसे किसी व्यक्ति को भुगतान करके बंधन से स्वतंत्र करना । मुक्ति यीशु मसीह के प्रायश्चित और पाप से छुटकारे को संदर्भ करती है । यीशु का प्रायश्चित संपूर्ण मानवजाति को शारीरिक मृत्यु से बचाता है । उसके प्रायश्चित के माध्यम से, जो उसमें विश्वास करते और पश्चाताप करते हैं वे आत्मिक मृत्यु से भी बचाए जाते हैं ।
- **पुनरूत्थान :** आत्मिक शरीर का मांस और हड्डियों के भौतिक शरीर का मृत्यु के बाद फिर से जुड़ना है । पुनरूत्थान के बाद, आत्मा और शरीर फिर से अलग नहीं होंगे, और व्यक्ति अमर हो जाएगा । यीशु मसीह की मृत्यु पर विजय के कारण प्रत्येक व्यक्ति जो पृथ्वी पर जन्म लेता है पुन:जीवित होगा ।

पाठ

- **उद्धार :** शारीरिक और आत्मिक मृत्यु से बचाया जाना। परमेश्वर अनुग्रह द्वारा, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के माध्यम से सभी लोगों को शारीरिक मृत्यु से बचा लिया जाएगा। यीशु मसीह में विश्वास करने से, प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा आत्मिक मृत्यु से भी बचाया जा सकता है। यह विश्वास सुसमाचार के नियमों और धर्मविधियों के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन जीकर और मसीह की सेवा करके प्रदर्शित किया जाता है।
- **आत्मिक मृत्यु :** परमेश्वर और उसके प्रभावों से अलग होना; धार्मिकता से संबंधित बातों में मृत्यु होना। आदम के पतन द्वारा आत्मिक मृत्यु संसार में आई थी (देखें अलमा 42:6–7)। बुरे विचार, शब्द, और कामों के साथ नश्वर व्यक्ति पृथ्वी पर जीवित होते हुए भी आत्मिकरूप से मरा हुआ होता है (देखें 2 नफी 9:39)। यीशु मसीह के प्रायश्चित के माध्यम और सुसमाचार के नियमों और धर्मविधियों के द्वारा, पुरूष और स्त्री पापों से शुद्ध हो जाते हैं और आत्मिक मृत्यु पर विजय पाते हैं।

जिन्हें आप सीखाते हैं उनके लिए अन्य शब्द जिसे अतिरिक्त परिभाषा की अवश्यकता हो

- डुबकी का बपतिस्मा
- सिलेस्टियल
- शुद्ध होना [पाप से]
- सृष्टि
- अनन्त विकास
- अनन्त जीवन
- विश्वास
- वर्जित फल
- क्षमा किया जाना [पाप का]
- अदन का बगीचा
- महिमा के राज्य
- विरोध
- शारीरिक मृत्यु
- उद्धार की योजना
- परिक्षण का समय
- पश्चाताप
- पाप
- आत्मा का संसार
- टेलेस्टियल
- टैरिर्स्टियल
- अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष

पाठ

यीशु मसीह का सुसमाचार

आपका उद्देश्य

जब आप सीखाते हैं, अपने जांचकर्ताओं को सिद्धान्त और अनुबंध 20: 37 और बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्नों में सीखाए बपतिस्मे की योग्यताओं को पूरा करने के लिए तैयार करें । इसे अपने जार्चकर्ताओं से नीचे सूची बद्ध की गई प्रतिज्ञाओं को बनाने और पालन करने का निमंत्रण देने से अच्छी तरह से पूरा किया जा सकता है ।

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न

- क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमारा अनन्त पिता है ?
- क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, दुनिया का उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है ?
- क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह का गिरजाघर और सुसमाचार को भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा पुनःस्थापित किया गया है ?

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप उसके सुसमाचार के विषय में निरंतर सीखते हुए यीशु मसीह में विश्वास विकास करना जारी रखोगे ?
- क्या आप पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप और प्रार्थना करोगे ?
- क्या आप अन्तिम-दिनों के सन्तों के मसीह के गिरजाघर का सदस्य बनने के लिए (दिनांक) को बपतिस्मा लोगे ? क्या आप पुष्टिकरण करवाओगे और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करोगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं ।

मसीह के द्वारा हम पाप से शुद्ध हो सकते हैं

परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र, यीशु मसीह, को इस संसार में भेजा ताकि परमेश्वर के सभी बच्चों के लिए उनकी मृत्यु के बाद वापस उसकी उपस्थिति में जाकर रहेना संभावना हो जाये । केवल उद्धारकर्ता के अनुग्रह और दया के द्वारा हम पाप से शुद्ध हो सकते हैं ताकि हम स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में रह सकें । पाप से शुद्ध होना आत्मिक रूप से चंगा होना है (देखें 3 नफी 9:13; 18:32) ।

मसीह के प्रायश्चित और पुनरूत्थान के कारण, सभी लोग प्रभु की उपस्थिति में उनके कामों और उनकी इच्छाओं के अनुसार जांच करने के लिए लाए जाएंगे (देखें 2 नफी 9:10–16; इलामन 14:15–18; 3 नफी 27:14–22; सि. और अनु. D&C 137:9) । न्याय और दया के नियमों के अनुसार हमारी जांच की जाएगी ।

पाठ

न्याय वह अटल नियम जो कामों के परिणामों को लाता है—परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से आशीषें और अवज्ञा करने से दण्ड मिलता है । हम सभी पाप करते हैं । पाप हमें अशुद्ध करता है, और कोई अशुद्ध वस्तु परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रह सकती है (देखें 1 नफी 10:21; 3 नफी 27:19; मूसा 6:57) ।

जो अपने पापों का पश्चाताप करते और उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करते हैं, उद्धारकर्ता ने उनके लिए न्याय की मांग को पूरा किया था, जब वह हमारे स्थान पर खड़ा हुआ था और हमारे पापों के लिये दण्ड सहा था । इस कार्य को प्रायश्चित कहते हैं । इस निस्वार्थ कार्य के कारण, मसीह हमारे पक्ष में पिता से निवेदन कर सकता है । स्वर्गीय पिता दया दिखाकर, हमारे लिए दण्ड को रोक देता है, और अपनी उपस्थिति में हमारा स्वागत करता है । हमारा स्वर्गीय पिता दया दिखाता है जब वह हमारे पापों को क्षमा करता और उसकी उपस्थिति में वापस जाकर रहने में मदद करता है ।

तथापि, यीशु ने हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को हटाया नहीं था । वह हमारे पापों को क्षमा करता है जब हम उसे स्वीकार करते, पश्चाताप करते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं । प्रायश्चित और जीवित सुसमाचार के माध्यम से हम हमेशा के लिए स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में जाने के योग्य हो जाते हैं । हमें प्रदर्शित करना चाहिए कि हम मसीह को स्वीकार करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करके और सुसमाचार के मुख्य नियमों और धर्मविधियों को पूरा करके, हम उसमें विश्वास प्रकट करते हैं ।

पाप

"पाप" का मतलब विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न भिन्न है । किसी संस्कृति में यह अपराध करने की परिकल्पना से सीधी जुड़ी हुई होती है । अन्यों में, यह तभी लागू होती है जब कोई गलत करते हुए पकड़ा जाता है और इस प्रकार परिवार या समाज के लिए शर्मनाक होता है । स्पष्ट करें कि पाप परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानना और इसका परिणाम परमेश्वर से अलग हो जाना है । जो कुछ भी हम करते और सोचते हैं परमेश्वर सब जानता है, और हम उसे नाखुश करते हैं जब हम पाप करते हैं । अपने अतीत की गलतियों की चर्चा न करें । जांचकर्ताओं को उनकी गलतियों की चर्चा करने के लिए मना करें ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

परमेश्वर ने अपना पुत्र भेजा

अलमा 11:40

यूहन्ना 3:16–17

मसीह हमारा वकील है

सि. और अनु. 45:3–5

मसीह के द्वारा उद्धार

2 नफी 2:6–8

अलमा 34:8–9, 14–16

2 नफी 9:21–24

दया और न्याय

मूसायाह 15:9

अलमा 42:22–25

यीशु मसीह में विश्वास

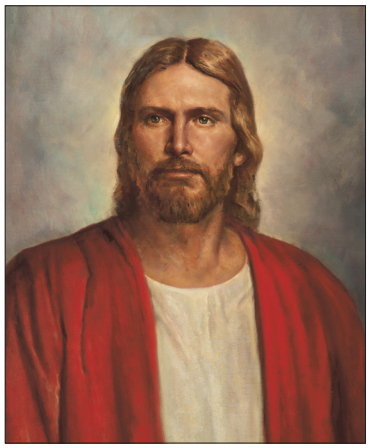

सुसमाचार का प्रथम सिद्धान्त प्रभु यीशु मसीह में विश्वास है । मसीह में विश्वास होने में सम्मलित है कि वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र और संसार का उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है । हम जानते हैं कि केवल उसके पुत्र के अनुग्रह और दया पर भरोसा करके हम अपने स्वर्गीय पिता के साथ रहने के लिए वापस जा सकते हैं । जब हम मसीह में विश्वास रखते हैं, हम उसके प्रायश्चित और उससकी शिक्षाओं को स्वीकार करते हैं । हम उसमें और जो वह कहता है उसपर विश्वास करते हैं । हम जानते हैं कि उसके पास अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की शक्ति है । स्वर्गीय पिता उनको आशीष देता है जो उसके पुत्र पर विश्वास रखते हैं ।

मसीह में विश्वास कार्य करने की ओर ले जाता है । यह सच्चे और स्थाई पश्चाताप की ओर ले जाता है । विश्वास रखने से हम उद्धारकर्ता के बारे में सीखने और उसके जैसे बनाने का अपना सर्वोत्तम प्रयास करते हैं । हम सीखना चाहते हैं कि उसकी आज्ञाएं क्या हैं और फिर उनका पालन करते हैं । फिर भी हम गलतियां करते हैं, हम उसकी आज्ञाओं का पालन करने के प्रयास और पाप से बचने के द्वारा हम उसके लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हैं ।

पाठ

हम मसीह में विश्वास करते हैं, और हम विश्वास करते हैं कि वह चाहता है कि हम उसकी सब आज्ञाओं का पालन करें । उसकी आज्ञाओं का पालन करके अपने विश्वास को प्रदर्शित करना चाहते हैं । हम लालच पर विजय पाने के लिए विश्वास में प्रार्थना करते हैं । उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए हम यीशु मसीह में इतना मजबूत विश्वास करते हैं कि, हम विशिष्ट नियम, जैसे ज्ञान के शब्द या दसमांश, के लिए भी विश्वास विकसित कर सकते हैं । जब हम विशिष्ट आज्ञा का पालन करते हैं, उसकी सच्चाई को अनुभव के द्वारा सीखते हैं (देखें यूहन्ना 7:17) । परमेश्वर के वचन को सुनकर (देखें रोमियों 10:17) और परमेश्वर के वचन को पढ़कर (इलामन 15:7–8) भी हम विश्वास में बढ सकते हैं ।

जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, वह हमें आशीष देता है । वह हमें जीवन की चुनौतियों का समाना करने की शक्ति देता है । वह हमारे हृदयों की इच्छाओं को बदलने में हमारी मदद करता है । यीशु मसीह में हमारे विश्वास के द्वारा, वह हमें शारीरिक और आत्मिक दोनों रूप से चंगा करता है ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

विश्वास, शक्ति, और उद्धार

1 नफी 7:12
2 नफी 9:23
2 नफी 25:23
मरोनी 7:33–34
मरोनी 10:7

विश्वास का सिद्धान्त

अलमा 32
इफिसियों 2:8
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, "विश्वास"

विश्वास के उद्धाहरण

ईथर४ 12
इब्रानियों 11

काम और आज्ञाकारिता

1 नफी 3:7
सि. और अनु. 130:20–21
याकूब 2:17–26

पश्चाताप के लिए

अलमा 34

पश्चाताप

सुसमाचार का द्वितीय नियम पश्चाताप है । मसीह में हमारा विश्वास और उसके लिए हमारा प्रेम हमें पश्चाताप की ओर ले जाता है, या हमारे उन विचारों, धारणाओं, और व्यवहारों को बदल देता है जो उसकी इच्छा से मेल नहीं खाते हैं । पश्चाताप में परमेश्वर, अपने स्वयं, और संसार के बारे में नया दृष्टिकोण बनाना सम्मलित है । जब हम पश्चाताप करते हैं, हम धार्मिक दुख महसूस करते हैं, फिर हम गलत कामों को करना बंद कर देते हैं और सही कामों करना आरंभ करते हैं । अपने जीवनों को पश्चाताप के माध्यम से परमेश्वर के मार्ग पर लाना हमारे जीवनों का मुख्य उद्देश्य है । केवल मसीह की दया के द्वारा से हम वापस जाकर परमेश्वर पिता के साथ रह सकते हैं, और हमें मसीह की दया केवल पश्चाताप करने की शर्त पर मिलती है ।

पश्चाताप करने के लिए, हम अपने पापों को पहचानते और पछतावा, या धार्मिक दुख महसूस करते हैं । हम परमेश्वर से अपने पापों को स्वीकार करते हैं । परमेश्वर के अधिकृत गिरजाघर मार्गदर्शकों से भी अपने गंभीर पापों को स्वीकार कर सकते हैं, जो हमें पश्चाताप करने में मदद कर सकते हैं । हम परमेश्वर से हमें क्षमा करने के लिए प्रार्थना कर सकते हैं । हम अपनी आदतों को सुधारने का भरसक प्रयास करते हैं जिन से समस्याएं होती हैं; इसे पुनःस्थापना कहते हैं । जब हम पश्चाताप करते हैं, हमारे अपने स्वयं और संसार के बारे हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है । जब हम बदलते हैं, हम पहचान जाते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं और कि हमें वही गलतियां बार बार नहीं करनी चाहिए । यदि हम गंभीरता से पश्चाताप करते हैं, हम अपने पापों से मुंह मोड़ लेते हैं और उन्हें फिर कभी नहीं करते । हम पाप करने की किसी भी इच्छा का प्रतिरोध करते हैं । परमेश्वर की आज्ञा पालन करने की हमारी इच्छा अधिक मजबूत और गहन होती जाती है ।

गंभीर पश्चाताप बहुत से परिणाम लाता है । हम अपने जीवन में परमेश्वर की क्षमा और उसकी शान्ति को महसूस करते हैं । हमारे अपराध और दुख दूर चले जाते हैं । हम आत्मा का प्रभाव अधिक बहुतायत से महसूस करते हैं । और जब हम इस जीवन से जाते हैं, हम अपने स्वर्गीय पिता और उसके बेटे के साथ रहने के लिए अधिक तैयार होते हैं ।

मसीह को स्वीकार करने और अपने पापों से पश्चाताप करने के बाद भी, हम कमजोर हो सकते हैं और फिर पाप कर सकते हैं । इन गलतियों को ठीक करने का हमें लगातार प्रयास करते रहना चाहिए । इसके अतिरिक्त, मसीह के समान गुणों का विकास करने के लिए, ज्ञान का विकास करने के लिए, और अधिक प्रभावशाली ढंग से सेवा करने के लिए—हमें लगातार सुधार करना चाहिए । जब हम सीखते हैं कि उद्धारकर्ता हमसे क्या आशा करता है, हम उसकी आज्ञा का पालन करके उसे अपना प्रेम दिखाना चाहेंगे । इस प्रकार, जब हम प्रतिदिन पश्चाताप करते हैं, हम पाएंगे कि हमारा जीवन बदल गया है और हम सुधर गए हैं । हम हृदय और व्यवहार से मसीह के समान बन जाएंगे । प्रतिदिन पश्चाताप करने से हम अधिक आनन्द महसूस करेंगे ।

पाठ

धर्मशास्त्र अध्ययन

हम सभी पाप करते हैं

रोमियों 3:23
1 यूहन्ना 1:7–8

मुक्ति और क्षमा किया जाना

इलामन 5:10–11

पश्चाताप

अलमा 34:8–17
सि. और अनु. 58:42–43
सि. और अनु. 61:2
2 कुरून्थियों 7:9–10
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, ''पश्चाताप करना, पश्चाताप'

दया पश्चातापी को बचाती है

अलमा 12:32–35
अलमा 42:13, 21–24
सि. और अनु. 18:10–13

बपतिस्मा, हमारा प्रथम अनुबंध

यीशु मसीह में विश्वास और पश्चाताप हमें बपतिस्मे और पुष्टिकरण की धर्मविधियों के लिए तैयार करता है । धर्मविधि एक पवित्र विधि या रीति है जो दिखाती है कि हमने परमेश्वर के साथ एक अनुबंध किया है ।

परमेश्वर हमेशा से चाहता है कि उसके बच्चे अनुबंध बनाएं । अनुबंध परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक बंधन और पवित्र समझौता होता है । परमेश्वर हमें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है, और हम उसकी आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा करते हैं । परमेश्वर सुसमाचार के नियमों को निधार्रित करता है, जिसे हम स्वीकार या अस्वीकार करते हैं । अनुबंध का पालन करने से इस जीवन में आशीषें मिलती हैं और आने वाले जीवन में उत्कर्ष ।

अनुबंध परमेश्वर के साथ हमारी प्रतिज्ञाओं का सम्मान करने के लिए हमारे ऊपर मजबूत दायित्व डालते हैं । अपने अनुबंधों को पूरा करने के लिए, हमें उन गतिविधियों या शौक को छोड़ देना चाहिए जो हमें इन अनुबंधों का सम्मान करने से रोकते हैं । उदाहरण के लिए रविवार के दिन खरीदारी करना और मनोरंजक कामों को त्याग देना चाहिए ताकि हम सब्त के दिन को पवित्र रख सकें । हमें उन अनुबंधों को योग्यता से पाने का इच्छुक होना चाहिए जो परमेश्वर हमें प्रस्तुत करता है और फिर उनको पालन करने का प्रयास करना चाहिए । हमारे अनुबंध हमें जीवन में प्रतिदिन पश्चाताप करना याद दिलाते हैं । आज्ञाओं का पालन और दूसरों की सेवा करने से हम अपने पापों से क्षमा पाते और इसे कायम रखते हैं ।

अनुबंध अक्सर पवित्र धर्मविधियों के द्वारा बनाए जाते हैं, जैसे बपतिस्मा । ये धर्मविधियां पौरोहित्य अधिकार द्वारा संचालित होती हैं । उदाहरण के लिए, बपतिस्मे की धर्मविधि के माध्यम से हम अपने ऊपर यीशु मसीह का नाम धारण करने, हमेशा उसे याद रखने, और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अनुबंध बनाते हैं । जब हम इस अनुबंध के अपने हिस्से का पालन करते हैं, परमेश्वर पवित्र आत्मा की निरंतर संगति, हमारे पापों से क्षमा, और परिवर्तित होने की प्रतिज्ञा करता है ।

पवित्र धर्मविधियों के माध्यम से, जैसे बपतिस्मा और पुष्टिकरण, हम परमेश्वर की शक्ति के बारे में सीखते और अनुभव करते हैं (देखें सि. और अनु. 84:20) । यीशु ने सीखाया था कि हमें अपने पापों से माफी या क्षमा पाने के लिए डुबकी का बपतिस्मा लेना चाहिए । बपतिस्मा उद्धार की जरूरी धर्मविधि है । कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में बिना बपतिस्मे के प्रवेश नहीं कर सकता है । बपतिस्मा लेकर यीशु मसीह ने हमारे लिए उदाहरण रखा था ।

डुबकी का बपतिस्मा उद्धारकर्ता की मृत्यु, दफन, और पुनरूत्थान का प्रतीक है । इसी तरीके से, यह हमारे पाप के जीवन का अन्त और मसीह के शिष्य के रूप में नया जीवन जीने की प्रतिज्ञा को प्रदर्शित करता है । उद्धारकर्ता ने सीखाया था कि बपतिस्मा दुबारा जन्म होता है । जब हम बपतिस्मा लेते हैं हम फिर से जन्म लेने की प्रक्रिया को शुरू करते हैं और मसीह के आत्मिक बेटे और बेटियां बन जाते हैं (देखें मुसायाह 5:7–8; रोमियों 8:14–17) ।

पुनःस्थापित गिरजाघर, अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर, का सदस्य बनने, और अन्ततः स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के लिए हमें बपतिस्मा लेना चाहिए । यह धर्मविधि परमेश्वर का कानून है और इसे उसके अधिकार द्वारा ही किया जाना चाहिए । धर्माध्यक्ष या मिशन अध्यक्ष किसी एक पौरोहित्य धारक को बपतिस्मा देने या पुष्टिकरण करने की अनुमति देता है ।

पाठ

छोटे बच्चों को बपतिस्मे की जरूरत नहीं होती है और वे यीशु मसीह की दया के माध्यम से मुक्ति पाते हैं (देखें मरोनी 8:4–24) । उनका बपतिस्मा तब तक नहीं होना चाहिए जब तक वे जिम्मेदारी की आयु, जोकि आठ वर्ष है, के नहीं हो जाते हैं (देखें सि. और अनु. 68:27) ।

बपतिस्मे से पूर्व हम अपने शेष जीवन-भर सभी आज्ञाओं का पालन करने के अनुबंध को बनाने की अपनी इच्छा को प्रकट करते हैं । बपतिस्मे के बाद हम अनुबंध का पालन करके अपने विश्वास को प्रकट करते हैं । बपतिस्मे के समय किए गए अनुबंध को हम प्रभु-भोज में भाग लेकर निरंतर नवीन करते रहते हैं । सप्ताहिक रूप से प्रभु-भोज में भाग लेना एक आज्ञा है । यह हमारे आत्मा को हमेशा हमारे साथ रखने के योग्य बनाता है । यह हमारे अनुबंध का सप्ताहिक सूचक है । अपने प्रायश्चित से ठीक पहले यीशु मसीह ने इस धर्मविधि को अपने प्रेरितों के साथ आरंभ किया था । उसने इसे भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के द्वारा पुनःस्थापित किया था । उद्धारकर्ता ने आज्ञा दी थी कि पौरोहित्य धारकों को प्रभु-भोज उसके शरीर और उसके लहू, जो हमारे लिए बहाया गया था, की याद में देना चाहिए । योग्यता से प्रभु-भोज में भाग लेकर हम हमेशा उसके बलिदान को याद करने का वादा करते हैं, हम अपने वादों को नवीन करते हैं, और हमें नया वादा मिलता है कि आत्मा हमेशा हमारे साथ रहेगा ।

बपतिस्मा से पहले

''सुनिश्चित करें कि [जांचकर्ताओं] ने मसीह में विश्वास पैदा कर लिया है, गलतियों से पश्चाताप कर लिया है, और योग्य होने के लिए सिद्धान्त और अनुबंध 20:37 के अनुसार अपने जीवन में पर्याप्त बदलाव कर लिए हैं । जांचकर्ताओं को योग्यता के आचरणों के नियमों, ज्ञान के शब्द, और दसमांश देने की प्रतिज्ञा का पालन करना चाहिए । यदि प्रचारक महसूस करते हैं कि अतिरिक्त तैयारी की जरूरत है, उन्हें तब तक बपतिस्मा स्थगित कर देना चाहिए जब तक जांचकर्ता उचित योग्यता के स्तर तक पहुंचकर पूरा नहीं करता है ।

''बपतिस्मा से पहले प्रत्येक जांचकर्ता को सभी प्रचारक [पाठों को] दे दिया जाना चाहिए, धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष से मिलना चाहिए, और बहुत सी प्रभु-भोज सभा में आना चाहिए '' (''प्रचारक कार्य पर ब्यान,'' प्रथम अध्यक्षता पत्र, 11 दिसंबर 2002) ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

मसीह का उदाहरण

2 नफी 31:4–18
मत्ती 3:13–17

बपतिस्मा का अनुबंध

मूसायाह 5:8–10
सि. और अनु. 20:37
मूसायाह 18:8–10

बपतिस्मे की योग्यताएं

2 नफी 9:23
मरोनी 6:1–4
मूसायाह 18:8–10
सि. और अनु. 20:37
अलमा 7:14–15
प्रेरितों के काम 2:37–39
3 नफी 11:23–27

प्रभु प्रभु-भोज को स्थापित करता है

3 नफी 18:1–18
लूका 22:15–20

बपतिस्मे की वादा की गई आशीषें

मूसायाह 4:11–12, 26
यूहन्ना 3:5
मरोनी 8:25–26
रोमियों 6:4

बपतिस्मे की प्रार्थनाएं

मरोनी 4 और 5
सि. और अनु. 20:75–79

प्रभु-भोज में भाग लेना

सि. और अनु. 27:2
1 कुरून्थियों 11:23–29

अधिकार के लिए जरूरत

सि. और अनु. 22
इब्रानियों 5:4

पवित्र आत्मा का उपहार

यीशु ने सीखाया था कि हमें पानी और आत्मा से भी बपतिस्मा लेना चाहिए । पानी से बपतिस्मा लेने के बाद आत्मा से भी बपत्सिमा लेना चाहिए वरना यह अधुरा है । जब हम बपतिस्मा लेते और पवित्र आत्मा का उपहार पाते हैं केवल तभी हमें अपने पापों से माफी मिलती है और पूर्णरूप से आत्मिक जन्म लेते हैं । फिर हम मसीह के शिष्य के रूप में नया आत्मिक जीवन आरंभ करते हैं ।

व्यक्ति के पानी से बपतिस्मा लेने के बाद, एक या अधिक अधिकृत पौरोहित्य धारक उस व्यक्ति के सिर पर अपने हाथों को रखते हैं और उस व्यक्ति की अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का सदस्य के रूप में पुष्टि करते हैं । फिर वे उसे पवित्र आत्मा का उपहार प्रदान करते हैं ।

जो पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करते और इसके योग्य रहते हैं वे अपने पूरे जीवन-भर में उसकी संगति को पा सकते हैं । पवित्र आत्मा हमारे ऊपर शुद्ध करने, एवं स्वच्छ करने का प्रभाव रखता है । पवित्र आत्मा मसीह की गवाही देता है और सच्चाई को पहचानने में हमारी मदद करता है । वह आत्मिक ताकत देता है और जो सही है उसे करने में मदद करता है । परिक्षा या दुख के समय वह दिलासा देता है । वह आत्मिक या शारीरिक खतरों से सावधान करता है । पवित्र आत्मा शक्ति देता है जिसके द्वारा हम सीखाते और सीखते हैं । पवित्र आत्मा का उपहार स्वर्गीय पिता से मिला सबसे मूल्यवान उपहार है । पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा हम अपने लिए परमेश्वर के प्रेम और उसके निर्देशनों को महसूस कर सकते हैं । यह उपहार अनन्त आनन्द और अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा का उदाहरण है ।

इस धर्मविधि को करने के लिए पौरोहित्य अधिकार की आवश्यकता होती है, जोकि सदियों पहले धर्मत्याग के कारण खो गई थी, भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा पुनःस्थापित की गई थी । केवल इस गिरजाघर की सदस्यता के द्वारा ही कोई पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त कर सकता है । यह अधिकार इस गिरजाघर को किसी अन्य धर्म से भिन्न बनाता है । प्रभु की अपनी स्वयं की घोषणा द्वारा, यह ''संपूर्ण पृथ्वी पर एकमात्र सच्चा और जीवित गिरजाघर है'' (सि. और अनु. 1:30) ।

पवित्र आत्मा द्वारा मार्गदर्शन

जिन्हें आप सीखा रहे हैं उन्हें समझाएं कि शैतान परमेश्वर का विरोध करता है और लोगों को पाप करने के लिए उकसाता है । प्रचारकों से मिलते समय अच्छे एहसासों को रखने के लिए, उन्हें मॉरमन की पुस्तक पढ़नी चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए, गिरजाघर आना चाहिए, और आज्ञाओं का पालन करना चाहिए । समझाएं कि पवित्र आत्मा से निरंतर मार्गदर्शन पाना बपतिस्मे और पुष्टिकरण पाने के लाभों में से एक है ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

पवित्र आत्मा का स्वभाव

सि. और अनु. 130:22–23
यूहन्ना 3:1–8
गलतियों 5:22–23
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, ''पवित्र आत्मा''

पवित्र आत्मा से आशीर्षे और प्रभाव

2 नफी 32:1–5
2 नफी 33:1–2
मूसा 6:61
यूहन्ना 14:26
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, ''पवित्र आत्मा''

पवित्र आत्मा के उपहार का महत्व

2 नफी 31:11–12, 18, 21
3 नफी 18:36–37
3 नफी 19:13
3 नफी 27:19–20
सि. और अनु. 19:31
सि. और अनु. 33:15
प्रेरितों के काम 19:1–6

अन्त तक धीरज धरना

एक बार जब यीशु मसीह में अपने विश्वास, पश्चाताप, और बपतिस्मे और पुष्टिकरण की धर्मविधियों के द्वारा सीधे और संकरे मार्ग में प्रवेश कर लेते हैं, हमें इस मार्ग में बने रहना का भरपूर प्रयास करना चाहिए । हम ऐसा यीशु मसीह में निरंतर विश्वास, पश्चाताप, प्रतिज्ञा बनाकर, और आत्मा का अनुसरण करके करते हैं ।

एक बार जब हमारे पापों को क्षमा कर दिया जाता है, हमें प्रतिदिन पाप से मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए ताकि पवित्र आत्मा हमेशा हमारे साथ बना रहे । बपतिस्मे के अनुबंध में, हम अपने स्वर्ग के पिता से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन शेष जीवन-भर करते रहेंगे । यदि हम कमजोर पड़ते हैं, तो हमें अनुबंध की आशीषें कायम रखने के लिए पश्चाताप करना चाहिए । हम अच्छे काम करने, दूसरों की सेवा, और उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करने की प्रतिज्ञा करते हैं । धर्मशास्त्रों में इस जीवन-भर की प्रतिज्ञा को अक्सर ''अन्त तक धीरज धरना'' कहते हैं ।

सुसमाचार के मार्ग का अनुसरण करके, हम परमेश्वर के निकट जाते हैं, लालच और पाप पर विजय पाते हैं, और पवित्र आत्मा के उपहार को अधिक बहुतायत से उपयोग करते हैं । जब हम धैर्यवान, विश्वासी, और अविरोध इस मार्ग पर जीवन भर चलते हैं, तो हम अनन्त जीवन के योग्य होते हैं ।

मसीह में विश्वास; पश्चाताप; अनुबंध बनाना, नवीन करना, और उनका पालन करना; और आत्मा द्वारा शुद्ध होना जीवन का आदर्श बन जाता है । हमारे प्रतिदिन के जीवन के कार्य इन नियमों द्वारा बनाए और शासित किए जाते हैं । इस मार्ग का अनुसरण करने से शान्ति और आनन्द मिलता है, और हम धीरे-धीरे मसीह समान गुण पाने लगते हैं । अन्ततः जब

पाठ

हम इस मार्ग का अनुसरण करते हैं और ''मसीह में समर्पित रहते हुए आगे बढ़ते हैं ... और अन्त तक धीरज धरते हैं'' हम से वादा किया जाता है, ''तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा'' (2 नफी 31:20) ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

अन्त तक धीरज धरना

2 नफी 9:24
2 नफी 31:14–20
3 नफी 27:16–17
मत्ती 10:22

उनके लिए आशीषें जो अन्त तक धीरज धरते हैं

1 नफी 13:37
3 नफी 15:9
सि. और अनु. 14:7

बपतिस्मा पाने के लिए निमत्रंण

बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण का निमंत्रण विशिष्ट और प्रत्यक्ष होना चाहिए: ''क्या आप यीशु मसीह का अनुकरण करते हुए उस व्यक्ति से बपतिस्मा लेने चाहेंगे जिसके पास परमेश्वर का पौरोहित्य अधिकार है ? हम [दिनांक] को बपतिस्मे का सभा करेंगे । क्या आप इस दिन अपने आपको बपतिस्मा लेने के लिए तैयार करेंगे ?''

पाठ

सीखाने के लिए विचार

इस खंड में आपके लिए इस पाठ की तैयारी करने और पढ़ाने के लिए विचार हैं। प्रार्थनापूर्वक आत्मा का अनुकरण करें जब आप इन विचारों का उपयोग करने निर्णय लेते हैं। चुने हुए विचारों को अपने पाठ की योजना में शामिल करें। ध्यान रखें, जिन्हें आप सीखाते हैं उनकी जरूरतों को पूरा करने लिए, ये विचार केवल सुझाव हैं—आवश्यकताएं नहीं हैं।

लघु पाठ योजना (3–5 मिनट)

यीशु मसीह का सुसमचार अनन्त जीवन का एकमात्र मार्ग है। उसके सुसमाचार के प्रथम नियम और धर्मविधियां यीशु मसीह में विश्वास, पापों की क्षमा के लिए डुबकी का बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा का उपहार हैं। फिर हमें अन्त तक धीरज धरना चाहिए। इन नियमों को अपने पूरे जीवन-भर लागू करने से, हम उद्धारकर्ता के उदाहण का अनुसरण करते हैं, उसकी आज्ञाओं का पालन करना सीखते हैं, और मसीह के समान गुणों का विकास करते हैं। हमारे पापों से हमें माफ किया जा सकता है, और हम अपने स्वर्ग के पिता की उपस्थिति में वापस जाकर रहने के योग्य होंगे।

- मसीह के माध्यम से हम पाप से शुद्ध किए जा सकते हैं
- यीशु मसीह में विश्वास
- पश्चाताप
- बपतिस्मा, हमारा पहला अनुबंध
- पवित्र आत्मा का उपहार
- अन्त तक धीरज धरना

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप उसके सुसमाचार के विषय में निरंतर सीखते हुए यीशु मसीह में विश्वास का विकास करना जारी रखोगे ?
- क्या आप पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप और प्रार्थना करेंगे?
- क्या आप अन्तिम-दिनों के सन्तों के मसीह के गिरजाघर का सदस्य बनने के लिए (दिनांक) को बपतिस्मा लेंगे? क्या आप पुष्टिकरण करवाएगे और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करेंगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

औसत पाठ योजना (10–15 मिनट)

हमारा संदेश विश्वास और आशा का है। हम यीशु मसीह से प्रेम और उसकी उपासना करते हैं। वह हमारे आनन्द की योजना का केन्द्र है। मसीह का प्रायश्चित का बलिदान हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्त जीवन पाना संभव करता है। जब हम सुसमाचार को जीते हैं, वह दयापूर्वक हमारे पापों को क्षमा कर देता है। वह हमें चंगा करता है और इस जीवन में अपराध और शर्म को शान्ति और आनन्द में बदल देता है।

यीशु मसीह का सुसमाचार सरल है। यह मसीह में विश्वास से आरंभ होता है। हम उस में विश्वास करते, भरोसा करते, और उस पर निर्भर रहते हैं। ऐसा विश्वास हमें पश्चाताप की ओर ले जाता है— हम गलत कामों को करना बंद कर देते हैं और सही कामों करना आरंभ करते हैं। उसकी आज्ञाओं का पालन करके, बपतिस्मा लेने सहित, हम उसमें अपना विश्वास दिखाना चाहते हैं। बपतिस्मा के बाद, वह हमें पवित्र आत्मा का उपहार देने का वादा करता है। हम अपने हृदयों और मनों में जान सकते हैं कि कब हमारे साथ पवित्र आत्मा होता है। हमारे पास शान्ति, प्रेम, और आनन्द की अनुभूतियां होंगी। हम दूसरों की सेवा करना चाहते हैं। हम अपने जीवन-भर प्रभु को सन्तुष्ट करते हैं।

पाठ 3 :
यीश मसीह का सुसमाचार

पाठ

यीशु मसीह ने अन्तिम-दिन के भविष्यवक्ता के माध्यम से अपने सुसमाचार को प्रकट किया था। हम मॉरमन की पुस्तक, जिसे आप पढ़, मनन, और के बारे प्रार्थना कर सकते हैं, में सुसमाचार के बारे में सीखते हैं। परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा की शक्ति से बताएगा कि यह सच है। जब आपको पता चलता है कि यह सच है, आप पश्चाताप करेंगे और बपस्मिा लेंगे ताकि आपको अपने पापों से माफी और पवित्र आत्मा का उपहार मिल सके।

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप उसके सुसमाचार के विषय में निरंतर सीखते हुए यीशु मसीह में विश्वास विकास करना जारी रखोगे ?
- क्या आप पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप और प्रार्थना करोगे ?
- क्या आप अन्तिम-दिनों के सन्तों के मसीह के गिरजाघर का सदस्य बनने के लिए (दिनांक) को बपतिस्मा लोगे ? क्या आप पुष्टिकरण करवाओगे और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करोगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं।

पूर्ण पाठ योजना (30–45 मिनट)

- मसीह के माध्यम से हम पाप से शुद्ध हो सकते हैं
  - परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र, यीशु मसीह, को संसार में भेजा था (देखें यूहन्ना 3:16–17)।
  - केवल मसीह के अनुग्रह और दया के द्वारा हम पाप से शुद्ध हो सकते हैं (देखें 2 नफी 2:6–8)।
  - हम मसीह को स्वीकार करने, पश्चाताप करने, और आज्ञा पालन करने के लिए जिम्मेदार हैं।
- यीशु मसीह में विश्वास
  - हमें मसीह में संसार का उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करना है।
  - वह चाहता है कि हम उसकी शिक्षाओं को स्वीकार और अनुसरण करें।
  - जब हम आज्ञा का पालन करते हैं हमें आशीर्षे मिलती हैं (देखें सि. और अनु. 130:20–21)।
- पश्चाताप
  - मसीह में विश्वास पश्चाताप की ओर ले जाता है (देखें अलमा 34)।
  - हम धार्मिक दुख महसूस करते हैं (देखें 2 कुरून्थियों 7:9–10)।
  - हम गलत कामों को करना बंद कर देते हैं और सही कामों को करना जारी रखते हैं।
  - हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, और हम गिरजाघर के मार्गदर्शकों से अपने गंभीर पापों को स्वीकार करते हैं, जो हमें पश्चातप करने में मदद करते हैं (देखें सि. और अनु. 58:43)।
  - हमें क्षमा मिलती है; अपराध और दुख की जगह शान्ति ले लेती है (देखें अलमा 36:17–21)।
- बपतिस्मा, हमारा प्रथम अनुबंध
  - धर्मविधि एक पवित्र रीति है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाते हैं।
  - अनुबंध एक पवित्र समझौता है जो परमेश्वर और उसके बच्चों के बीच होता है।
  - अनुबंधों का पालन करने से आशीर्षे मिलती हैं।
  - पापों की माफी के लिए हम डुबकी का बपतिस्मा लेते हैं (देखें विश्वास के अनुच्छेद 1:4)।
  - जब हम बपतिस्मा लेते हैं हम यीशु से प्रतिज्ञा करके नया जीवन शूरू करते हैं (देखें रोमियों 6:3–8)।

पाठ

- बपतिस्मा पौरोहित्य अधिकार द्वारा किया जाना चाहिए ।
- हम सप्ताहिक रूप से प्रभु-भोज में भाग लेकर अपने अनुबंध को नया करते हैं (सि. और अनु. 20:77, 79) ।

- पवित्र आत्मा का उपहार
  - डुबकी के बपतिस्मे के बाद आत्मा का बपतिस्मा होता है; इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है ।
  - पौरोहित्य धारक हाथों को रख कर पवित्र आत्मा का उपहार देते हैं ।
  - पवित्र आत्मा हमें सीखाता है, हमें शुद्ध करता है, हमें दिलासा देता है, हमें सच्चाई की गवाही देता है, हमें चेतावनी और हमें निर्देश देता है (देखें 2 नफी 32:1–5; मुसायाह 5:1–6; मरोनी 10:5; सि. और अनु. 36:2) ।

- अन्त तक धीरज धरना
  - एक बार बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण होने के बाद हमें उसी मार्ग पर चलते रहना चाहिए ।
  - पाप से मुक्त रहने के लिए हम अपना सर्वोत्तम करते हैं ताकि हम पवित्र आत्मा के उपहार का आनन्द ले सकें ।
  - विश्वासपूर्वक सुसमाचार के मार्ग, विश्वास करना, पश्चाताप करना, अनुबंधों को बनाना और पालन करना, का अनुसरण करके और पवित्र आत्मा का उपहार पाकर, हम अनन्त जीवन के योग्य हो सकते हैं (देखें 2 नफी 31:14–20) ।
  - हमें अपने पूरे जीवन-भर निरंतर पश्चाताप करना चाहिए (देखें सि. और अनु. 19:15–20) ।

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप उसके सुसमाचार के विषय में निरंतर सीखते हुए यीशु मसीह में विश्वास का विकास करना जारी रखेंगे ?
- क्या आप पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप और प्रार्थना करेंगे ?
- क्या आप अन्तिम-दिनों के सन्तों के मसीह के गिरजाघर का सदस्य बनने के लिए (दिनांक) को बपतिस्मा लेंगे ? क्या आप पुष्टिकरण करवाएंगे और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करेंगे ?
- क्या आप इस रविवार को हमारे साथ गिरजाघर आएगें ?
- क्या हम अगली भेंट के लिए समय निश्चित कर लें ?
- पाठ 4 से आज्ञाएं जिन्हें आप सम्मलित करने के लिए चुनते हैं ।

आपके सीखाने के बाद पूछे जाने वाले प्रश्न

- जो हमने सीखाया उसके विषय में आप के क्या प्रश्न हैं ?
- पश्चाताप करने का क्या अर्थ है ?
- पवित्र आत्मा का उपहार सुसमाचार का जरूरी हिस्सा क्यों है ?
- बपतिस्मा लेना और पवित्र आत्मा का उपहार पाना आपके लिए क्यों महत्वपूर्ण है ?
- क्या गिरजाघर की सभाओं में ऐसी कोई चीज है जो आपको समझ में नहीं आई थी ?
- आपने हमारी गिरजाघर की सभाओं में किस बात का आनन्द लिया था ?

मुख्य परिभाषाएं

- **पुष्टिकरण :** गिरजाघर का सदस्य बनने और पवित्र आत्मा के उपहार को पाने के लिए मलकिसिदक पौरोहित्य धारकों द्वारा हाथों का रखा जाना ।

- **अनुबंध :** परमेश्वर और उसके बच्चों के बीच में एक समझौता । हम इस समझौते में एक समान नहीं हैं । परमेश्वर अनुबंध के नियमों को बनाता है, और जो वह कहता हम उसे करना स्वीकार करते हैं । परमेश्वर फिर हमें हमारी आज्ञाकारिता के

पाठ

लिए निश्चित आशीषें देने का वादा करता है। हम धर्मविधियों को अनुबंधों द्वारा प्राप्त करते हैं। जब हम इस प्रकार का अनुबंध बनाते हैं, हम उन्हें पूरा करने का वादा करते हैं। उदाहरण के लिए, गिरजाघर के सदस्य बपतिस्मे के समय अनुबंध बनाते हैं और उस अनुबंध को प्रभु-भोज में भाग लेकर नया करते हैं। हम मन्दिर में आगे के अनुबंध बनाते हैं। प्रभु के लोग अनुबंधित लोग हैं। जब हम प्रभु के साथ अपने अनुबधों को पूरा करते हैं हमें अत्याधिक आशीषें मिलती हैं।

- **अन्त तक धीरज धरना :** लालच, विरोध, और कठिनाइयों के बावजूद परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति सच्चे बने रहना।
- **अनन्त जीवन :** परमेश्वर की उपस्थिति में परिवारों के रूप में हमेशा जीवन जीना (देखें सि. और अनु. 132:19–20)। अनन्त जीवन परमेश्वर का मनुष्य के लिए सर्वोत्तम उपहार है।
- **सुसमाचार :** परमेश्वर की उद्धार की योजना, जो यीशु मसीह के प्रायश्चित के माध्यम से संभव हुई है। सुसमाचार में, अनन्त सच्चाइयां या नियम, अनुबंध, और धर्मविधियां सम्मलित हैं जो परमेश्वर की उपस्थिति में वापस जाने के लिए मानवजाति के लिए जरूरी हैं।
- **महिमा :** योग्य बनाने वाली यीशु मसीह की शक्ति जो हमें इस जीवन में आशीषें पाने और अनन्त जीवन पाने और विश्वास, पश्चाताप, और आज्ञाओं का पालन करने के लिए हमारा सर्वोत्तम प्रयास, करने के बाद उत्कर्ष पाने की अनुमति देती है। ऐसी दिव्य मदद या ताकत यीशु मसीह की दया और प्रेम के माध्यम से मिलती है। आदम के पतन के कारण और हमारी अपनी कमजोरियों के कारण भी हम सभी को दिव्य अनुग्रह की जरूरत है।
- **अनुग्रह :** करुणा, कोमलता, और क्षमा की आत्मा। अनुग्रह परमेश्वर के गुणों में से एक है। यीशु मसीह अपने प्रायश्चित बलिदान के माध्यम से पश्चाताप की शर्त पर अनुग्रह का प्रस्ताव देता है।
- **पुनःस्थापना :** उस वस्तु को वापस करना जो वापस ले लिया गया था या खो गया था।

जिन्हें आप सीखाते हैं उनके लिए अन्य शब्द जिसे अतिरिक्त परिभाषा की अवश्यकता हो

- पाप से शुद्ध
- स्वीकार करना
- क्षमा
- प्रार्थना
- प्रभु-भोज
- सीधा और संकरा मार्ग
- लालच

आज्ञाएं

बपतिस्मा और पुष्टिकरण की तैयारी

पाठ

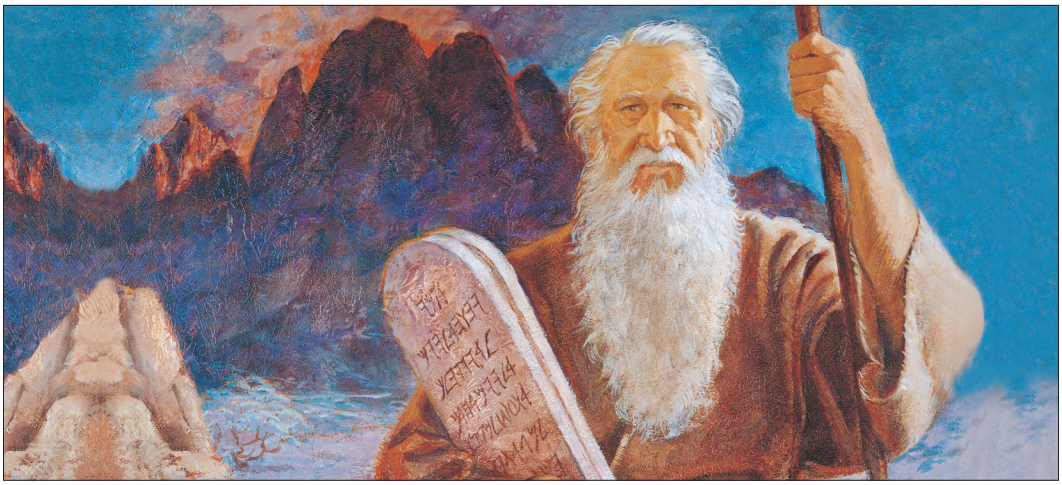

इस पाठ से शिक्षा

इस पाठ में पाए जाने वाली आज्ञाओं को सीखाने के कई तरीके हैं। उदाहरण के लिए. कुछ आज्ञाओं को आप पहले तीन पाठों के रूप में सीखा सकते हैं, या बहुत सी आज्ञाओं को एक पाठ के रूप में सीखा सकते हैं। जो कुछ भी आप करते हैं वह जांचकर्ता की जरूरतों और आत्मा के निर्देशन के अनुसार होना चाहिए।

सीखाने के लिए तैयारी

आज्ञाओं को सीखाने का उद्देश्य यीशु मसीह में विश्वास करके और पश्चाताप करके सुसमाचार को जीने में लोगों की मदद करना है, जब वे बपतिस्मे और पुष्टिकरण की तैयारी करते हैं। आज्ञाओं का पालन करके, लोग सुसमाचार की अपनी गवाही में विकास करके दिखाते हैं कि उनके पास ''टुटे हुए हृदय और संतापी आत्मा'' है, अपने सभी पापों का पश्चाताप करते हैं (देखें मरोनी 6:1–4; सि. और अनु. 20:37)।

यह पाठ पहले तीन पाठों से भिन्न रूप से बनाया गया है। पहले के तीन पाठ यीशु मसीह के सुसमाचार के सैद्धान्तिक आधार की व्याख्या करते हैं। यह पाठ परमेश्वर की विशिष्ट आज्ञाओं की व्याख्या करता है जो सुसमाचार नियमों को हमारे जीवन में लागू करने में मदद करते हैं।

इस पाठ को सीखाने के कई तरीके हैं। जो कुछ भी आप करते हैं वह जांचकर्ता की जरूरतों और आत्मा के निर्देशन के अनुसार होना चाहिए। निरंतर विचार और प्रार्थना करें कि सुसमाचार को जीने में जांचकर्ताओं की मदद कैसे करें। विचारों में शामिल हैं :

- एक या अधिक आज्ञाओं को पहले तीन पाठों के भाग के रूप में सीखाना। जब ऐसा करते हो, तो अलमा 12:32 में सीखाए गए नियम पर विचार करें : ''परमेश्वर ने प्रायश्चित द्वारा पापों से मुक्ति प्राप्त करने की योजना बतलाने के *पश्चात* उनको आज्ञाएं दी'' (तिरछे लिखे शब्द जोड़े गए हैं)। कुछ आज्ञाएं, जैसे प्रार्थना करना और धर्मशास्त्र अध्ययन करना, पहले तीन पाठों के भाग के रूप में अच्छी तरह सीखाए जा सकते हैं। अन्य आज्ञाएं पहले तीन पाठों में पाए जाने वाली सुसमाचार के सैद्धान्तिक आधार को रखने के बाद अच्छी तरह सीखाए जा सकते हैं।
- दो या तीन आज्ञाओं को एक पाठ के रूप में सीखाना
- एक आज्ञा को एक पाठ के रूप में सीखाना
- सुसमाचार के संदर्भ में आज्ञाओं को सीखाना। यीशु मसीह के सुसमाचार पर पाठ का एक या अधिक आज्ञाएं सीखाने से पहले संक्षिप्तरूप से अवलोकन करें। जब आप ऐसा करते हैं, आप जांचकर्ताओं की देखने में मदद कर सकते हैं कि कैसे ये आज्ञाएं उद्धारकर्ता में विश्वास करने और बपतिस्मा और पुष्टिकरण और पश्चाताप करने की व्यापकता के अनुरूप हैं। उनके जीवन बदल जाते हैं जब वे यीशु मसीह के सुसमाचार को जीने के आदर्श के रूप में देखते हैं।

आप कुछ जांचकर्ताओं को कम भेंटों में सीखा सकते हो; कुछ को अधिक भेंटों की जरूरत हो सकती है । उन्हें बपतिस्मा और पुष्टिकरण के लिए पूर्णरूप से तैयार करने में लोगों की मदद के लिए आप पाठों को किसी भी प्रकार से सीखाने के लिए स्वतंत्र हैं । आपका उद्देश्य केवल पाठ को किसी तरह पूरा करना नहीं है; यह यीशु मसीह में विश्वास करना, पश्चाताप करना, बपतिस्मा लेना, पवित्र आत्मा का उपहार पाना, और अन्त तक धीरज धरने में मदद करके दूसरों को मसीह के पास लाना है ।

मुश्किल से एक पाठ में 45 मिनट से अधिक नहीं लगना चाहिए । हो सकता है कि समय की कमी के कारण आपको छोटी भेंट करनी पड़े । ऐसी स्थिति में, कम अवधि की पाठ्य समाग्री को सीखाने के लिए आपको बार-बार जाना पड़ सकता है ।

इस पाठ को सीखाने के कई तरीके हैं जिनका आप प्रयोग कर सकते हैं । कौन-सा पाठ आप सीखाते हैं, आप कब सीखाते हैं, और आप इसमें कितना समय दोगे, यह सब जांचकर्ताओं की जरूरतों और आत्मा के निर्देशन द्वारा अच्छी तरह तय किया जा सकता है ।

आज्ञाओं और प्रतिज्ञाओं के विषय में सीखें

जब आप इस पाठ का अध्ययन करते हैं, निम्न नमूने का अनुसरण करें :

- उस खंड का अध्ययन करें जो आज्ञा की व्याख्या करता है और तीन से पांच सरल मुख्य बातों पर पाठ की योजना लिखें ।
- अपने साथी को दो-या तीन-मिनट का विवरण देना सीखाएं । अभ्यास करें कैसे आप प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए कहेंगे और कैसे किसी प्रश्न का उत्तर देंगे ।
- उन तरीकों की चर्चा करें कैसे उस प्रतिज्ञा के बारे में पूछेंगे जो जांचकर्ता स्वीकार कर चुके हैं ।

आज्ञाकारिता

परमेश्वर ने हमें हमारे लाभ के लिए आज्ञाएं दी हैं । ये एक प्रिय स्वर्ग के पिता की ओर से हमें सुखी जीवन पाने में मदद के निर्देशन हैं । वह हमें चुनने की स्वतंत्रता, या योग्यता और अच्छे और बुरे में से चुनाव करने का अवसर भी देता है । जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, हम आत्मा के प्रभाव का अनुसरण करते हैं और उसकी इच्छा को पूरा करना चुनते हैं । आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता इस जीवन में और आने वाले अनन्त जीवन में शान्ति लाती है । आज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को दिखाता है । अवज्ञा हमारे लिये दुख लाती है ।

स्वर्गीय पिता हमारी कमजोरियों को जानता है और हमारे साथ धैर्यशील रहता है । जब हम उसकी आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करते हैं वह हमें आशीष देता है । वह अपेक्षा करता है कि हम उसकी आज्ञा का पालन करें ताकि वह हमें आशीष दे सके ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

चुनने की स्वतंत्रता

2 नफी 2:26–29
अलमा 12:31
सि. और अनु. 58:26–29
सि. और अनु. 82:8–10
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, "चुनने की स्वतंत्रता"

आज्ञाकारिता

सि. और अनु. 130:20–21
यूहन्ना 14:15, 21
समोपदेशक12:13

प्रतिज्ञा

- क्या आप परमेश्वर के कानूनों का पालन करेंगे ?

अक्सर प्रार्थना करें

परमेश्वर ने हमें उससे प्रार्थना करने की आज्ञा दी है । आप कभी भी और कहीं भी प्रार्थना कर सकते हैं । प्रभु ने सीखाया है कि हमें व्यक्तिगत रूप से और परिवार के साथ, घुटनों के बल झुककर सुबह और शाम प्रार्थना करनी चाहिए ।

हमारा स्वर्गीय पिता हमारी प्रार्थना को सुनता और उसका उत्तर देता है । प्रतिदिन की प्रार्थना के माध्यम से हम दिव्य मार्गदर्शन और आशीष पा सकते हैं । हमें हमेशा गंभीरता से प्रार्थना करनी चाहिए । हमें ''असली उद्देश्य'' के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, इसका अर्थ है जब हमें प्रार्थना का उत्तर मिलता हम उसके अनुसार कार्य करने के लिए वचनबद्ध रहें ।

हम विश्वास के साथ अपने स्वर्ग के पिता से यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं (देखें मूसा 5:8) । क्योंकि वह हमारा पिता है और हम उसके बच्चे हैं, वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा । हम स्वर्ग के पिता को संबोधन करके अपनी प्रार्थना आरंभ करते हैं । हम ''यीशु मसीह के नाम में, आमीन'' के साथ अपनी प्रार्थना को समाप्त करते हैं ।

प्रार्थना में हम अपने प्रिय स्वर्गीय पिता के साथ सच्चाई और ईमानदारी से बातें करते हैं । हम अपनी आशीषों के लिए आभार और धन्यवाद प्रकट करते हैं । हम उसके लिए अपने प्रेम को प्रकट कर सकते हैं । हम अपनी आवश्यकता के अनुसार मदद, सुरक्षा, और निर्देशन के लिए भी बोल सकते हैं ।

जब हम विश्वास, गंभीरता, और सच्चे उद्देश्य से प्रार्थना करते हैं, हम अपने जीवन में परमेश्वर के प्रभाव को देखेंगे । वह हमें हमारे प्रतिदिन के जीवन में मार्गदर्शन और अच्छे निर्णय लेने में मदद करता है । वह हमें दिलासा और शान्ति की अनुभूतियों से आशीषित करेगा । वह हमें खतरों से चेतावनी और लालच का प्रतिरोध करने के लिए बल देगा । वह हमारे पापों को माफ करेगा । हम उसकी निकटता को महसूस करेंगे । हमें उसके प्रभाव को अपने जीवन में पहचानना सीखना चाहिए । हमें आत्मा की शान्त, हल्की आवाज को सुनना सीखना चाहिए ।

जब पवित्र आत्मा हमें सच्चाई सीखाता है हम पहचान सकते हैं । हमारे मन प्रेरणादायक और ऊपर उठाने वाले विचारों से भर जाएंगे । हमें विद्या मिलेगी, या नया ज्ञान दिया जाएगा । हमारे हृदयों में शान्ति, आनन्द, और प्रेम की अनुभूतियां होंगी । हम भलाई करना चाहेंगे और दूसरों की मदद करेंगे । इन अनुभूतियां की व्याख्या करना कठिन है लेकिन अनुभव करने पर हम इन्हें पहचान जाएंगे ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

2 नफी 32:8–9
इनोस 1:1–12
अलमा 34:17–28
मरोनी 10:3–5
सि. और अनु. 6:22–23
सि. और अनु. 8:2–3
सि. और अनु. 9:7–9
सि. और अनु. 19:28
1 राजा 19:11–12
धर्मशास्त्र मार्गदर्शन, ''प्रार्थना''

प्रतिज्ञा

- क्या आप घुटने के बल झुकर व्यक्तिगतरूप से और परिवार के रूप में प्रार्थना करेंगे ?

धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें

धर्मशास्त्र परमेश्वर का अपने बच्चों के साथ संबंधों का लिखित अभिलेख है जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने पवित्र आत्मा के प्रभाव के अन्तगर्त लिखा था । हम परमेश्वर के प्रकटीकरणों का अध्ययन करके, विश्वास करके, और आज्ञा मानकर हम अपना विश्वास दिखाते हैं । सच्चाई को समझने के लिए हम ध्यान से धर्मशास्त्रों को पढ़ते हैं । हम इनका आनन्द लेते हैं क्योंकि ये प्रकटीकरण का द्वार खोलते हैं और हमें दिखाते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और हम क्या बन सकते हैं । यीशु मसीह में विश्वास परमेश्वर का उपहार है और उसके वचन और उसके सुसमाचार का अध्ययन करने और जीने से, मिलता है । गिरजाघर के अनुमोदित धर्मशास्त्र, जिन्हें आदर्श काम भी कहते हैं, पवित्र बाइबिल, मॉरमन की पुस्तक, सिद्धान्त और अनुबन्ध, और अनमोल मोती हैं । हमें इन पवित्र पुस्तकों का भी अध्ययन करना चाहिए ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

1 नफी 19:22–23
2 नफी 9:50–51
2 नफी 25:26
2 नफी 29:1–13
2 नफी 31:19–20
2 नफी 32:3–5
अलमा 32:28–30
यूहन्ना 5:39
यूहन्ना 20:31
2 तीमुथियुस 3:14–17
2 पतरस 1:20–21

प्रतिज्ञा

- क्या आप प्रतिदिन व्यक्तिगतरूप से और परिवार के रूप में धर्मशास्त्रों का अध्ययन करेंगे ?

पाठ

सब्त के दिन को पवित्र रखना

हमारा सब्त के दिन का व्यवहार परमेश्वर का सम्मान और उपासना करने के प्रति हमारी प्रतिज्ञा का प्रतिबिम्ब है । सब्त के दिन को पवित्र रख कर, हम परमेश्वर को अपने अनुबधों को रखने की इच्छा दिखाते हैं । प्रत्येक सब्त के दिन हम प्रभु के घर में उसकी उपासना करने जाते हैं । वहां रहकर हम यीशु मसीह और उसके प्रायश्चित की याद में प्रभु-भोज में भाग लेते हैं । हम अपने अनुबंधों को नया करते और दिखाते हैं कि हम अपने पापों और गलतियों से पश्चाताप करने के इच्छुक हैं ।

इस दिन, हम अपने कामों से विश्राम करते हैं । जब हम गिरजाघर की सभाओं में उपस्थित होते और मिलकर उपासना करते हैं, हम एक दूसरे को मजबूती देते हैं । हम अपने मित्रों और परिवार के साथ अपने संबंधों को नया करते हैं । हमारा विश्वास मजबूत होता है जब हम धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते और पुनःस्थापित गिरजाघर के बारे में अधिक जानते हैं ।

जब समाज या राष्ट्र अपने सब्त के दिन की गतिविधियों को लेकर लापरवाह होता है, उसका धार्मिक जीवन सड़ने लगता है और जीवन के सभी पहलूवों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है । सब्त के दिन को पवित्र रखने से संबंधित आशीषें खो जाती हैं । सब्त के दिन हमें खरीदारी करने से और अन्य व्यापारिक और खेलकूद की गतिविधियां जोकि आजकल अक्सर सब्त को दूषित करती है से बचना चाहिए ।

अन्तिम-दिनों के सन्त इस दिन उपासना, धन्यवाद देने, सेवा करना, और सब्त के लिए उचित परिवार-केन्द्रीत गतिविधियों की आत्मा में रहते हुए, संसारिक गतिविधियों से अलग रहना चाहिए । जब गिरजाघर के सदस्य अपनी सब्त गतिविधियों को उचित उद्देश्य और प्रभु की आत्मा के योग्य रखने का प्रयास करते हैं, उनके जीवन आनन्द और शान्ति से भर जाएंगे ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

3 नफी 18:1–25
सि. और अनु. 59:9–15
निर्गमन 20:8–11
निर्गमन 31:12–17
यशायाह 58:13–14

गिरजाघर में जांचकर्ता या सदस्यों के साथ बैठें

जब प्रभु-भोज की सभा या स्टेक सम्मेलन में उपस्थित हो रहे हो, प्रचारक साथियों को जांचकर्ताओं, नए परिवर्तित, या सदस्यों के साथ बैठना चाहिए । उन्हें दूसरे प्रचारकों के साथ नहीं बैठना चाहिए ।

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप सब्त के दिन को पवित्र रखेंगे ?
- क्या आप प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए अपने आप को योग्य बनाएगे ?

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होता है

- सप्ताहिकरूप से प्रभु-भोज में भाग लेने और दूसरों की सेवा करने सहित, सब्त के दिन से आप क्या समझते हैं ? क्या आप इस नियम का [अपने बपतिस्मे से पहले] पालन करने के इच्छुक हैं ?

बपतिस्मा और पुष्टिकरण

जिस तरीके से हम परमेश्वर के मार्ग पर चलने की इच्छा को दिखाते हैं वह तरीका बपतिस्मा और पुष्टिकरण है । जब हम बपतिस्मा लेते हैं और पुष्टिकरण पाते हैं, हम परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाते हैं कि हम अपने ऊपर यीशु मसीह का नाम धारण करेंगे और कि हम उसे सदा याद रखेंगे और उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे । हम हर स्थान पर उसके गवाह बनने और जरूरमंदों की मदद करने का वादा भी करते हैं (देखें मुसायाह 18:8–9) । इसके बदले में, परमेश्वर पवित्र आत्मा की स्थाई संगति देने, पापों की माफी, और फिर से जन्म देने का वादा करता है ।

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप बपतिस्मा लेंगे और पुष्टिकरण प्राप्त करेंगे ?
- क्या आप अपने मित्रों और परिवार को अपने बपतिस्मे की सभा में आने का निमंत्रण देंगे ?
- यदि संभव हो, जांचकर्ताओं को किसी बपतिस्मा सभा और उस प्रभु-भोज सभा में निमंत्रण दें जिसमें किसी का पुष्टिकरण होना हो ।

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होते हैं

- बपतिस्मे के साक्षात्कार के सभी प्रश्न ।

बपतिस्मा लेने का निमंत्रण

बपतिस्मा लेने और पुष्टिकरण का निमंत्रण विशिष्ट और प्रत्यक्ष होना चाहिए: ''क्या आप यीशु मसीह का अनुकरण करते हुए उस व्यक्ति से बपतिस्मा लेने चाहेगे जिसके पास परमेश्वर का पौरोहित्य अधिकार है ? हम [दिनांक] को बपतिस्मे का सभा करेंगे । क्या आप इस दिन अपने आपको बपतिस्मा लेने के लिए तैयार करेंगे ?''

भविष्यवक्ता का अनुसरण करना

सच्चाई बातों का वह ज्ञान है जैसी वे हैं, थी, और होंगी । यह परिस्थितियों या समय के साथ बदलती नहीं है । सच्चाई हर युग और संस्कृति में एक जैसी रहती है । परमेश्वर सभी सच्चाई का स्रोत है । हम उस में विश्वास कर सकते हैं क्योंकि वह हमें केवल सच्चाई सीखाता है । परमेश्वर चाहता है उसके सभी बच्चे सच्चाई जानें । इसलिए, वह उद्धार के लिए जरूरी सच्चाइयों को भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों द्वारा प्रकट करता है । वह धर्मशास्त्रों और व्यक्तिगत प्रकटीकरणों के माध्यम से हमें व्यक्तिगतरूप से सच्चाई प्रकट करता है ।

भविष्यवक्ता परमेश्वर द्वारा नियुक्त और चुना जाता है और महान विश्वास का नेक पुरूष होता है । प्रभु पवित्र आत्मा के द्वारा उसे सच्चाई प्रकट करता है । वह अपने भविष्यवक्ता को सभी लोगों को सच्चाई सीखाने की आज्ञा देता है । जो उसके भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रकट की गई परमेश्वर की बातों पर विश्वास करते हैं आशीषित होते हैं ।

प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव के ऊपर मसीह का गिरजाघर बनाया गया है, जो गिरजाघर को प्रकटीकरण के द्वारा निर्देशन देते हैं । प्रभु ने जोसफ स्मिथ को इस युग का पहला भविष्यवक्ता और मुखिया नियुक्त किया था । उसके उत्तराधिकारी जो आज अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह के गिरजाघर का मार्गदर्शन करते हैं वे भी भविष्यवक्ता और प्रेरित हैं । आज गिरजाघर का अध्यक्ष एक जीवित भविष्यवक्ता है । हमें परमेश्वर के नियुक्त किए भविष्यवक्ता में विश्वास होना चाहिए, उसकी दिव्य नियुक्ति को मानना चाहिए, और उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिए ।

हमें सार्वजनिकरूप से गिरजाघर के मार्गदर्शकों का सर्मथन करने के निरंतर अवसर मिलते हैं । *सर्मथन करने* का अर्थ सहारा देना है । हमें अपने आपको तैयार करना होता है ताकि जब भविष्यवक्ता और प्रेरित बोलते हैं, पवित्र आत्मा उन सच्चाइयों की गवाही दे सके जो वे सीखाते हैं, और फिर हम उनकी सलाह को मानने का निर्णय कर सकें ।

जो जीवित भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों को सुनते और मानते हैं वे भटकेंगे नहीं । जीवित भविष्यवक्ता की शिक्षाएं इस संसार में बदलते मूल्यों की अनन्त सच्चाई के आधार को मजूबत करती और हमें कष्टों और दुखों से बचाती हैं । संसार की दुविधा और झगड़े हमें घबराने नहीं देगें, और हम परमेश्वर की इच्छा के साथ चलने का आश्वासन पा सकते हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

मूसायाह 15:11–12	सि. और अनु. 21:1–7	इफिसियों 2:19–20
अलमा 13:1–16	सि. और अनु. 136:37–38	इफिसियों 4:11–14
3 नफी 12:1–2	यूहन्ना 15:16	इब्रानियों 5:4
सि. और अनु. 1:37–38	प्रेरितों के काम 10:34–44	आमोस 3:7

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप धर्माध्यक्ष से मिलेंगे ?
- क्या आप गिरजाघर के मार्गदर्शकों का सर्मथन और अनुसरण करेंगे ?

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होते हैं

- क्या आप विश्वास करते हैं कि [गिरजाघर के वर्तमान भविष्यवक्ता] परमेश्वर के भविष्यवक्ता हैं ? इस बात का आपके लिए क्या अर्थ है ?

दस आज्ञाओं का पालन करें

स्वर्गीय पिता हमें आज्ञाएं देता है ताकि हम जानेंगे कि जो आशीषें (आनन्द, आत्मा की शान्ति, स्थाई खुशी) पाने के लिए हमें क्या करना है और क्या नहीं करना है । परमेश्वर ने अपने लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए मूसा को दस आज्ञाएं दी थी :

- ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना'' (निर्गमन 20:3) । अन्य ''ईश्वर'' में सम्पत्ति, शक्ति, या प्रसिद्धी सम्मलित हो सकती हैं ।

पाठ

- ''तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना'' (निर्गमन 20:4) ।
- ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना'' (निर्गमन 20:7) ।
- ''तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना'' (निर्गमन 20:8) ।
- ''तू अपने पिता और माता का आदर करना'' (निर्गमन 20:12) ।
- ''तू खून न करना'' (निर्गमन 20:13) ।
- ''तू व्यभिचार न करना'' (निर्गमन 20:14) ।
- ''तू चोरी न करना'' (निर्गमन 20:15) ।
- ''तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना'' (निर्गमन 20:16) ।
- ''तू लालच न करना'' (निर्गमन 20:17) ।

ये दस आज्ञाएं आज भी वैध हैं । वे हमें उपासना करना और परमेश्वर का आदर करना सीखाती हैं । वे हमें एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए भी सीखाती हैं ।

कोई दूसरा परमेश्वर नहीं

कई संस्कृतियों में लोग वस्तुओं को देवता या पूर्वज मानकर आदर देते या करते हैं । अक्सर ये वस्तुएं, जैसे मूर्ति, धार्मिक प्रतीक, या छोटा मकबरा, उनकी उपासना का माध्यम होती हैं । उन्हें समझने में मदद करें कि प्रभु ने हमें किसी भी मूर्ति की पूजा न करने की आज्ञा दी । उन्हें अपने घर से ऐसी किसी भी वस्तु को हटाने के लिए कहें जिसकी वे पूजा करते या प्रार्थना करते हैं । उन्हें उनके विश्वास और उपासना को अपने स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह पर केन्द्रीत करने को कहें । उन्हें सीखाएं कि यीशु मसीह का पुनःस्थापित सुसमाचार जीवित मसीह पर केन्द्रीत है ।

पुनःस्थापित सुसमाचार में प्रभु ने हमें सीखाया कि कैसे उसे याद करना चाहिए । हम उसे प्रार्थना, प्रभु-भोज, और मन्दिर उपासना के द्वारा से याद करते हैं । आपका मिशन अध्यक्ष विशिष्ट बातों में मार्गदर्शन कर सकता है ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

मूसायाह 13	मत्ती 22:36–40	व्यवस्थाविवरण 5:6–21
सि. और अनु. 59:5–6	निर्गमन 20:1–17	

प्रतिज्ञा

- क्या आप दस आज्ञाओं का पालन करेंगे ?

शुद्धता के नियम का पालन करना

परमेश्वर शुद्धता से प्रसन्न होता और यौन पापों से नफरत करता है । शुद्धता में विवाह से पहले यौन संबंधो से बचना और विवाह के बाद अपने साथी से पूर्णरूप से ईमानदार और सच्चे बने रहना है । जो शुद्धता के नियम का पालन करते हैं वे उस शक्ति को प्राप्त करते हैं जो स्व-नियंत्रण से मिलती है । वे अपने पारिवारिक संबंधों में आत्म-विश्वास और भरोसा कायम करते हैं । वे अपने जीवन में अधिकता से पवित्र आत्मा के प्रभाव का उपभोग कर सकते हैं । जो इस नियम को तोड़ते हैं अनन्त शर्म और अपराध के आधीन रहेंगे जो उनके जीवन पर बोझ बनती है ।

शुद्धता के लिए विचारों और कामों में विश्वसनीयता की जरूरत होती है । हमें अपने विचारों को स्वच्छ रखना चाहिए और सभ्य कपड़े पहनने, भाषा का प्रयोग, और काम करने चाहिए । हमें किसी भी रूप में अश्लीलता से बचना चाहिए । हमें परमेश्वर द्वारा दी गई उत्पत्ति की शक्ति और अपने शरीर को पवित्र रखना चाहिए । बपतिस्मा के उम्मीदवार को शुद्धता के नियम का पालन करना चाहिए, जो विवाह के बंधनों के अतिरिक्त पुरूष और स्त्रियों के बीच किसी प्रकार के यौन संबंधों को प्रतिबंधित करती है । उन्हें गर्भपात या समलैंगिक या एक ही लिगं के साथ अश्लील संबंधों में भाग नहीं लेना चाहिए । जिसने कोई यौन पाप किया है वे पश्चाताप कर सकता है और माफ किया जा सकता है ।

जोड़े जो एकसाथ रहते हैं

पुरुष और स्त्री जो एकसाथ रहते हैं लेकिन विवाहित नहीं हैं उन का बपतिस्मा तब तक नहीं हो सकता जब तक वे या तो विवाह नहीं करते या अलग नहीं हो जाते । जो एक ही समय में एक से अधिक विवाह करते हैं उनका बपतिस्मा नहीं हो सकता है । अपने मिशन अध्यक्ष से सलाह लें, जो प्रत्येक मामले के लिए विशिष्ट निर्देश देगा ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

याकूब 2:28
मूसायाह 13:22
अलमा 39:3–5
3 नफी 12:27–30
सि. और अनु. 42:22–24
सि. और अनु. 63:16
मत्ती 5:27–28
रोमियों 1:26–32
इफिसियों 5:3–5

प्रतिज्ञा

- क्या आप शुद्धता के नियम का पालन करोगे ?

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होते हैं

- शुद्धता के नियम के विषय में आप क्या समझते हो, जो वैध विवाह के बंधनों के बाहर एक पुरुष और एक स्त्री के बीच में किसी भी यौन संबंध को प्रतिबंधित करता है ? क्या आप [अपने बपतिस्मे से पहले] इस नियम का पालन करने के इच्छुक हैं ?
- क्या आपने कभी गर्भपात में भाग लिया है ? समलैंगिक संबंध बनाए हैं ? [नोट: ऐसा व्यक्ति जो इनमें से किसी भी प्रश्न का उत्तर हां में देता है बपतिस्मा लेने से पहले उसका मिशन अध्यक्ष के साथ साक्षात्कार होना जरुरी है ।]

ज्ञान के शब्द का पालन करना

प्रभु ने भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ को स्वास्थ्य के नियम प्रकट किए थे जिसे ज्ञान के शब्द कहते हैं । यह नियम सीखाता है कि हमें अपने शरीर को स्वस्थ और बुरे प्रभावों से बचाने के लिए क्या भोजन और वस्तुएं खानी चाहिए और क्या नहीं खानी चाहिए । प्रभु स्वास्थ्य, ताकत, बुराई से सुरक्षा, और आत्मिक सच्चाइयों को ग्रहण की महान शक्ति की आशीषों का वादा करता है ।

याद रखें कि हमारे शरीर पवित्र हैं । हमें इनका आदर और सम्मान करना चाहिए । ज्ञान के शब्द सीखाते हैं कि हमें स्वास्थ्यवर्धक भोजन खाने चाहिए । यह विशेष रूप से सीखाता है कि हमें हानिकारक पदार्थों जैसे, मदिरा, तम्बाकू, चाय, और कॉफी से बचना चाहिए । वे लोग जो ज्ञान के शब्दों का पालन करते हैं आत्मिक सच्चाइयों को अच्छी तरह ग्रहण करते हैं ।

आपका मिशन अध्यक्ष बताएगा कि आपकी संस्कृति में किसी अन्य पदार्थों को ज्ञान के शब्द में शामिल किया जाना चाहिए ।

व्यसनों पर विजय पाना

वे लोग जो धुम्रपान, मदिरा सेवन, और दूसरी आदतों पर विजय पाना चाहते हैं आप इन नियमों का पालन करने में उनकी बहुत अच्छी तरह से मदद कर सकते हैं । नीचे बताए गए सुझाव विशेषकर ज्ञान के शब्द पर लागू होते हैं लेकिन किसी अन्य व्यसन के लिए भी लागू किए जा सकते हैं ।

1. लोगों को लक्ष्य बनाने में मदद करें कि कब और कैसे वे ज्ञान के शब्द का पालन करेंगे ।
2. उनके लिए अपनी व्यक्तिगत प्रार्थनाओं में और आप जब उनके साथ हैं, उनके लिए प्रार्थना करें ।
3. सकारात्मक और सहारा देते रहें—बेशक यदि वे नाकाम रहते हैं ।
4. उन्हें सुसमाचार सीखाना जारी रखें । उन्हें सीखाएं प्रार्थना और विश्वास को कैसे ताकत के स्रोतों के रूप में प्रयोग करना है ।
5. उनकी निरंतर गिरजाघर आने में मदद करें और उन लोगों के साथ मित्रता का विकास करने में मदद करें जो ज्ञान के शब्द का पालन करते हैं और उसी तरह के व्यसन पर विजय पा चुके हैं ।
6. जैसी जरूरत हो, उन्हें पौरोहित्य आशीर्षे देने का प्रस्ताव रखें ।
7. उन्हें अपने घर से हानिकारक पदार्थों को हटाने के लिए उत्साहित करें ।

व्यसनों पर विजय पाने में लोगों की मदद के अधिक निर्देशनों के लिए अध्याय 10 देखें ।

पाठ

प्रतिज्ञा

सि. और अनु. 89 1 कुरून्थियों 3:16–17 1 कुरून्थियों 6:19–20

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप ज्ञान के शब्द का पालन करेंगे ?

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होते हैं

- आप ज्ञान के शब्द से क्या समझते हैं ? क्या इस नियम का [अपने बपतिस्मे से पहले] पालन करने के इच्छुक हैं ?

दसमांश का पालन करें

अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर के सदस्य होने की महान आशीषों में से एक परमेश्वर के राज्य के विकास के लिए दसमांश देकर अपना योगदान देने का सौभाग्य है । दसमांश एक प्राचीन, दिव्य नियम है । उदाहरण के लिए, पुराने नियम में इब्राहीम अपनी सारी संपत्ति का दसमांश देता था (देखें अलमा 13:15) ।

जो लोग दसमांश देते है, उनसे प्रभु वादा करता है कि वह ''आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं (मलाकी 3:10) । ये आशीषें भौतिक या आत्मिक हो सकती हैं, लेकिन ये उन्ही को मिलती है जो इस दिव्य नियम का पालन करते हैं ।

दसमांश का अर्थ है दसवां हिस्सा, और प्रभु ने हमें अपनी बढ़त का दसवां हिस्सा देने को कहा है, जिसका अर्थ आमदनी से है, जिससे कि हम आशीषित हों । दसमांश का नियम हमें उसका राज्य बनाने में मदद का अवसर देता है । हमारे दसमांश प्रभु के लिए पवित्र हैं, और दसमांश देकर हमें उसका सम्मान करना चाहिए । जो ईमानदारी से दसमांश देते हैं परमेश्वर उन्हें बहुतायात से आशीष देने का वादा करता है । जो दसमांश नहीं देते हैं वे परमेश्वर को लूटते हैं (देखें मलाकी 3:8) । वे उसे अपने लिए रखते हैं जो कानूनीरूप से उसका है । हमें पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करनी चाहिए, और दसमांश इसका एक महत्वपूर्ण तरीका है । दसमांश देना हमारे विश्वास को व्यक्त करता है । यह परमेश्वर और उसके काम में हमारे भरोसे का बाहरी प्रतीक है ।

दसमांश के कोष गिरजाघर की गतिविधियों को सहारा देने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, जैसे मन्दिर और सभाघर बनाना और उनका रख-रखाव, पूरे संसार में सुसमाचार को ले जाना, मन्दिर और पारिवरिक इतिहास का काम करना, और दूसरी कई विश्वव्यापी गतिविधियां करना । दसमांश से स्थानीय गिरजाघर मार्गदर्शकों को भुगतान नहीं किया जाता है, जो बिना धन प्राप्त किए सेवा करते हैं ।

स्थानीय गिरजाघर मार्गदर्शक प्रत्येक सप्ताह मिलने वाले दसमांश को गिरजाघर मुख्यालय भेजते हैं । प्रथम अध्यक्षता, बारह प्रेरितों की परिषद, और अधीक्षिक धर्माध्यक्षता से मिलकर बनी परिषद इस पवित्र धार्मिक कोष को विशिष्ट तरीकों से उपयोग करना निधार्रित करती है ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

दसमांश

सि. और अनु. 119 इब्रानियों 7:1–2 मलाकी 27:30–33
सि. और अनु. 120 उत्पत्ति 14:18–20 मलाकी 3:7–12

विश्वास

3 नफी 13:33 इथर 12:6

प्रतिज्ञाएं

- आप बपतिस्मा लेने के बाद क्या आप दसमांश के नियम का पालन करेंगे ?

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होते हैं

- आप दसमांश के नियम से क्या समझते हैं ? क्या आप इस नियम का पालन करने के इच्छुक हैं ?

उपवास के नियम का पालन करें

उन लोगों को महान आशीषें मिलती हैं जो परमेश्वर के उपवास के नियम का पालन करते हैं । उपवास का अर्थ है एक अवधि के लिए बिना कुछ खाए-पीए रहना । समान्यता प्रत्येक महिने के पहले रविवार को दो लगातार भोजन को न खाकर, प्रार्थना के साथ, और गवाही देकर इस दिन को अलग रखा जाता है । उपवास और प्रार्थना एक साथ होते हैं । जब हम विश्वास के साथ उपवास और प्रार्थना करते हैं, हम प्रभु से हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर और आशीषें पाने के अधिक ग्रहणशील होते हैं । वह वादा करता है कि वह हमें निरंतर मार्गदर्शन देता रहेगा । हमें विशेष उद्देश्यों के लिए उपवास और प्रार्थना करनी चाहिए । उपवास निजी और आत्मिक होता है, और हमें यह किसी पर प्रकट नहीं होने देना चाहिए कि हमने उपवास रखा हुआ है ।

शुद्ध धर्म में गरीबों की देखभाल सम्मलित है । उनकी शारीरिक और आत्मिक जरूरतों को पूरा करने में हमें मदद करनी है । जब हम उपवास रखते हैं, तो हम गरीब और जरूरतमंद की देखभाल के लिए धन गिरजाघर में दान करते हैं । इसे उपवास की भेंट कहते हैं । हम उतना धन कम से कम दान में देते हैं जितना हमने अपने भोजन को न खाकर बचाया है । फिर भी, हमें अपना योगदान केवल दो भोजनों के से बचाए पैसों तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए । हमें उदारता से दान देने के लिए उत्साहित किया जाता है जितना कि हम दे सकते हैं । गरीब की मदद करने से, हम अपने बपतिस्मे के अनुबंध को पूरा करते हैं और पापों से अपनी क्षमा को बनाए रखते हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

उपवास

ओमनी 1:26
अलमा 5:45–46
अलमा 6:6
अलमा 17:2–3
मरोनी 6:5
सि. और अनु. 88:76
सि. और अनु. 59:12–16
मत्ती 6:1–4, 16–18
यशायाह 58:6–11

गरीब की सहायता करना

मूसायाह 4:16–27
मूसायाह 18:8–10
अलमा 4:12–13
मत्ती 25:34–46
याकूब 1:27
यशायाह 58:3–12

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप अगले रविवार किसी विशेष आवश्यकता के लिए उपवास और प्रार्थना करेंगे ?
- क्या आप उदारता से उपवास की भेंट देंगे [अपने बपतिस्मे के बाद]?

दसमांश और भेंट कैसे दान करें

दसमांश और भेंटे स्वेच्छा और निजीरूप से दी जाती हैं । सदस्य दसमांश और भेंट किसी भी समय दे सकते हैं, लेकिन जैसे ही कोई आमदनी मिलती है उसी समय दसमांश देना उत्तम रहता है और उपवास की भेंटे उपवास के दिन दी जाती हैं । सदस्य दान पर्ची को भर कर दान देते हैं, जोकि धर्माध्यक्षता से मिल सकती हैं । सदस्य इसकी पीली प्रति को अपने पास रखते हैं और सफेद प्रति और दान को लिफाफे में डालकर धर्माध्यक्षता के किसी एक सदस्य को देते हैं । ये दान पवित्र माने जाते हैं और प्रभु के हैं । धर्माध्यक्षता का एक सदस्य और क्लर्क सभी दानों का सावधानी और गोपनियता से हिसाब रखते हैं ।

अपनी दसमांश विश्वसनीयता की घोषणा करने के लिए सदस्य वर्ष के अन्त में धर्माध्यक्ष के साथ दसमांश व्यवस्था में उपस्थित होते हैं । इस निजी मुलाकात के दौरान, सदस्य अपने सभी दानों का वार्षिक विवरण प्राप्त करते हैं । सभी वित्तिय सूचना बिलकुल गोपनीय रखी जाती है ।

दसमांश और भेंट को कैसे दान करे की शिक्षा दें

एक दान पर्ची दिखाएं और समझाएं इसे कैसे उपयोग करना है । बपतिस्मा लेने के बाद आप लोगों की इस पर्ची को भरने में मदद कर सकते हैं ।

पाठ

कानूनों का पालन और सम्मान करना

पूरी दुनिया में अन्तिम-दिनों के सन्त जिस देश में वे रहते हैं उसके कानूनों का पालन करने में विश्वास करते हैं । गिरजाघर के सदस्यों को, वैधानिक सरकार और राजनितिक प्रक्रिया में भाग लेकर, और समाज की सेवा करके, अच्छे नागरिक बनने की सलाह दी जाती है । यद्यपि वे ऐसा एक जागरूक नागरिक के रूप में करते हैं, न कि गिरजाघर का प्रतिनिधित्व के रूप में ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

सि. और अनु. 58:21
सि. और अनु. 98:5
सि. और अनु. 130:20–21
सि. और अनु. 134
विश्वास के अनुच्छेद 1:12

प्रतिज्ञा

- क्या उस देश के कानूनों का पालन करेंगे जिसमें आप रहते हैं ?

बपतिस्मे के साक्षात्कार प्रश्न जो लागू होते हैं

- क्या आपने कभी कोई गंभीर अपराध किया है ? यदि हां तो, क्या आप जमानत पर छुटे हुए हैं ? [नोटः ऐसा व्यक्ति जो इनमें से किसी भी प्रश्न का उत्तर हां में देता है बपतिस्मा लेने से पहले उसका मिशन अध्यक्ष के साथ साक्षात्कार होना जरुरी है ।]

गतिविधि

इस पाठ में प्रत्येक आज्ञा के लिए, उन आत्मिक वादों की सूची बनाएं जो प्रभु उनके साथ करता है जो इन आज्ञाओं का पालन करते हैं । अपनी दैनिकी में उन वादों को लिखें जो आपके जीवन में पूरे हुए हैं ।

पाठ

नियम और धर्मविधियां

बपतिस्मे और पुष्टिकरण के बाद

© 1998 डेल पारसन । नकल न बनाएं ।

सीखाने की तैयारी

परिवर्तित के बपतिस्मा और पुष्टिकरण होने के बाद, वार्ड मार्गदर्शक निधार्रित करते हैं कि सीखाने का काम वार्ड प्रचारक करेंगे या पूरे-समय के प्रचारक करेंगे और कितने समय तक पूरे-समय के प्रचारक इसमें शामिल रहेंगे । यह पाठ नए सदस्यों को उनके बपतिस्मे और पुष्टिकरण के तुरन्त बाद सीखाया जाना चाहिए । आप उन्हें नियम और धर्मविधियों के बारे में उनके बपतिस्मे और पुष्टिकरण के बीच में भी सीखा सकते हैं या बपतिस्मे से पहले भी । बपतिस्मे के उम्मीदवार को इन नियमों और धर्मविधियों की जानकारी उनके बपतिस्मे से पहले होनी चाहिए ।

यह पाठ लगभग पाठ 4 की तरह काम करता है । जो योजना आप बनाते हैं वह परिवर्तितयों की जरूरत और आत्मा के निर्देशन के अनुसार होनी चाहिए । निरंतर विचार और प्रार्थना करते रहें कि परिवर्तियों को सुसमाचार को जीने में कैसे मदद करनी चाहिए । विचारों में शामिल हैं :

- ''पुनःस्थापना का संदेश,'' ''उद्धार की योजना,'' और ''यीशु मसीह के सुसमाचार'' पाठों की समीक्षा करते हुए इस पाठ में से प्रत्येक नियम और धर्मविधियां नए सदस्यों को सीखाना । उदाहरण के लिए, पुनःस्थापना की समीक्षा करते समय आप पौरोहित्य और प्रचारक कार्य के बारे में सीखा सकते हैं; उद्धार की योजना की समीक्षा करते समय अनन्त विवाह, मन्दिर और पारिवारिक इतिहास कार्य, गिरजाघर में सीखाना और सीखना । जब यीशु मसीह के सुसमाचार की समीक्षा करें आप सीधे और संकरे मार्ग और गिरजाघर में सेवा करने के विषय में सीखा सकते हैं ।
- दो या तीन नियम और धर्मविधियों को एक पाठ रूप में सीखाना ।
- एक नियम या धर्मविधि को एक पाठ के रूप में सीखाना ।

इन नियमों और धर्मविधियों को स्वीकार करने और इनका पालन शुरू करने में मदद के लिए सदस्यों के साथ कार्य करें । नए सदस्यों को यह समझने में मदद करें कि परमेश्वर के नियमों का पालन करके, वे पाप से छुटकारे को कायम रखते हैं और अनन्त जीवन के मार्ग में बने रहते हैं । वे अधिक शान्ति और आनन्द महसूस करेंगे । उन्हें जीवन के प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे और इस ज्ञान से सुरक्षा मिलेगी कि वे यीशु मसीह के सच्चे गिरजाघर के सदस्य हैं । नियम और धर्मविधियां यीशु मसीह के विश्वास के साथ, आनन्द से रहने के लिए निर्देशनों का काम करते हैं और स्वर्गीय के पिता के साथ अनन्त जीवन पाने की मजबूत आशा हैं ।

पाठ

नियमों, धर्मविधियों और प्रतिज्ञाओं के बारे में सीखें

जब आप ''नियमों और धर्मविधियों,'' का अध्ययन करते हैं नीचे बताए नमूने का पालन करना सहायता करता है ।

- उस खंड का अध्ययन करें जो सिद्धान्त की व्याख्या करता है और तीन से पांच सरल मुख्य बातों पर पाठ की योजना लिखें ।
- अपने साथी को दो-या तीन-मिनट का विवरण देना सीखाएं । अभ्यास करें कैसे आप प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए कहेंगे और कैसे किसी प्रश्न का उत्तर देंगे ।
- उन तरीकों की चर्चा करें कैसे उस प्रतिज्ञा के बारे में पूछोगे जो नए परिवर्तित स्वीकार कर चुके हैं ।

पौरोहित्य और सहायक समूह

पौरोहित्य शक्ति और अधिकार पुरूष को परमेश्वर के नाम में उसके बच्चों के उद्धार के कार्य करने के लिए दिया जाता है । इस पौरोहित्य के माध्यम से हमें उद्धार की धर्मविधियों के साथ-साथ चंगाई की आशीषें, दिलासा, और सलाह मिलती हैं ।

अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से यीशु मसीह द्वारा निदेर्शित किया जाता है । ये वे योग्य पुरूष हैं जिन्हें परमेश्वर नियुक्त करता और पौरोहित्य देता है । अतीत में मसीह ने अपने प्रेरितों का अभिषेक किया था और उन्हें पौरोहित्य दिया था । जब लोगों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया और मसीह और प्रेरितों को मार डाला था, तो यह अधिकार खो गया था ।

पौरोहित्य अधिकार को 1829 में पुनःस्थापित किया गया था जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ और ओलिवर कॉउडरी को प्रकट हुआ था । उसने अपने हाथों को उनके सिरों पर रखा था और उन्हें हारूनी पौरोहित्य दिया था (देखें सि. और अनु. 27:12–13) ।

उस व्यक्ति के हाथों को रखने से, जिस के पास यह पौरोहित्य अधिकार होता है, कोई पुरूष केवल उचित अभिषेक के द्वारा इस पौरोहित्य अधिकार को प्राप्त कर सकता है । वह पुरूष, जिसे यह पौरोहित्य दिया जाता है, उसे आश्चर्यजनक अवसर मिलते हैं । वह पवित्र कर्तव्यों को पूरा करने, दूसरों की सेवा करने, और गिरजाघर को बनाने में मदद करने के अनुबंध को बनाता है । उसके पास परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा और इस शक्ति से नियोजित होना चाहिए (देखें सि. और अनु. 4:3; 63:57) । पौरोहित्य धारकों के लिए यह भी जरूरी है कि वे पवित्र धर्मविधियों को करें, जैसे बपतिस्मा और पुष्टिकरण । जब पौरोहित्य को योग्यता से उपयोग किया जाता है, परमेश्वर की शक्ति व्यक्त होती है । पौरोहित्य शक्ति को केवल धार्मिकता, प्रेम, और धैर्य से उपयोग किया जा सकता है ।

सभी पौरोहित्य परमेश्वर की ओर से मिलते हैं । गिरजाघर में दो पौरोहित्य हैं : हारूनी पौरोहित्य और मलकिसिदिक पौरोहित्य । हारूनी पौरोहित्य बपतिस्मा और प्रभु-भोज जैसी धर्मविधियों को कर सकता है । 12 वर्ष और उसके बड़े योग्य पुरूष बपतिस्मे और पुष्टिकरण के तुरन्त बाद हारूनी पौरोहित्य प्राप्त करते हैं ।

योग्य वयस्क पुरूष अन्ततः मलकिसिदिक, या उच्च, पौरोहित्य प्राप्त करते हैं । गिरजाघर के सदस्य इस पौरोहित्य की शक्ति के माध्यम से कई आत्मिक और सांसारिक आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं । योग्य मलकिसिदिक पौरोहित्य धारक पवित्र आत्मा के उपहार दे सकते हैं, दूसरों को पौरोहित्य प्रदान कर सकते हैं जब कहा जाता है, रोगी को पवित्र किए गए तेल से अभिषेक कर सकते हैं, और चंगाई और दिलासा की आशीषें दे सकते हैं । योग्य पति और पिता जो मलकिसिदिक पौरोहित्य धारण करते हैं अपनी पत्नी, बच्चों और परिवार के दूसरे सदस्यों को विशेष आशीष दे सकते हैं । घर के शिक्षक गिरजाघर के सदस्यों के घरों में जाते हैं और लोगों और परिवारों की देख-भाल करते हैं । धर्माध्यक्ष और स्टेक अध्यक्ष गिरजाघर में न्यायधीश होते हैं । उनके पास सन्तों को पश्चाताप करने और गिरजाघर सदस्यता की पूरी आशीषों का आनन्द लेने में मदद करने अधिकार होता है, जिन्होंने पाप किया होता है । वे लोगों का साक्षात्कार करके मन्दिर में प्रवेश करने की उनकी योग्यता सुनिश्चित करते हैं ।

पौरोहित्य के अर्न्तगत, सहायक संगठन सदस्यों को मजबूत करने में मदद करते हैं । वे प्रचारक कार्य में बहुत बड़ा स्रोत होते हैं जब वे जांचकर्ताओं को खोजने और सीखाने में और नए परिवर्तितयों को संगति देने में मदद करते हैं । स्त्रियां 18 और उससे बड़ी सहायता संस्था की सदस्याएं होती हैं, जो सेवा करने के लिए परिवारों, व्यक्तियों और समाज तक पहुंचती हैं । 12 और 18 तक की युवतियां युवतियों के कार्यक्रम की सदस्याएं होती हैं । इसी आयु के लड़के युवकों के कार्यक्रम भाग लेते हैं । 3 से 11 की आयु के बच्चे प्राथमिक संगठन का हिस्सा होते हैं । 12 और उससे बड़े सदस्य रविवार विद्यालय में जाते हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

मूसायाह 18:17
अलमा 13:1–19
सि. और अनु. 20:38–65
सि. और अनु. 84:19–20
सि. और अनु. 107
सि. और अनु. 121:34–46
लूका 9:1–6
यूहन्ना 15:16
याकूब 5:14–15

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप हारूनी पौरोहित्य पाने के लिए तैयार होंगे (12 और बड़ी आयु के पात्र और योग्य पुरूष) ?
- क्या आप मलकिसिदक पौरोहित्य पाने के लिए तैयार होंगे (पात्र और योग्य वयस्क पुरूष) ?
- क्या आप उचित सहायक संगठन में सक्रियरूप से भाग लेंगे ?

प्रचारक कार्य

जो सदस्य सुसमाचार को बांटते हैं वे आनन्द अनुभव करते और प्रभु की आत्मा को बहुतायात से पाते हैं । जब हम सुसमाचार को बांटते हैं, हम जानते हैं कि यह हमारे लिए कितना कीमती और अर्थपूर्ण है, और हम परमेश्वर और दूसरों के लिए अधिक प्रेम महसूस करते हैं । प्रभु ने अपने अनुयाइयों को सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा देकर, प्रत्येक व्यक्ति को इसे स्वीकार या अस्वीकार करने का अवसर देता है । जब लोग बपतिस्मा लेते हैं, वे हमेशा परमेश्वर के गवाह के रूप में खड़े होने का अनुबंध बनाते हैं । उन्हें उनके साथ सुसमाचार बांटने का आज्ञा दी गई है जिन्होंने अभी इसे प्राप्त नहीं किया है । जब वे सुसमाचार का विश्वासनीय होकर पालन करते हैं, वे अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों को दिखाने के लिए एक उदाहरण रखते हैं, कि सुसमाचार का पालन करने से महान आशीषें मिलती हैं । उन्हें प्रश्नों के उत्तर देने, छपी हुई और दृश्यश्राव सामग्रियों को बांटने, और दूसरों को पुनःस्थापित सुसमाचार के संदेश के विषय में सीखने के लिए निमंत्रण देने के अवसरों का लाभ उठाना चाहिए । सदस्यों को उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो गिरजाघर के सदस्य नहीं हैं । उन्हें प्रचारक अवसरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए—दूसरे जो हमारे धर्म के नहीं हैं उनकी सेवा करनी चाहिए और बांटना चाहिए कि वे किस पर विश्वास करते हैं । प्रभु सदस्यों की यह जानने में मदद करने का वादा करता है कि सुसमाचार बांटते समय उन्हें क्या कहना और करना चाहिए ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

याकूब 5:70–75
मूसायाह 28:3
सि. और अनु. 18:10–16
सि. और अनु. 19:29
सि. और अनु. 33:8–11
सि. और अनु. 38:40–42
सि. और अनु. 84:74–76, 88
सि. और अनु. 88:81
सि. और अनु. 100:5–8

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप मित्रों और रिश्तेदारों को सुसमाचार सीखाए जाने के लिए प्रचारकों से मिलने का निमंत्रण देने के लिए तैयार होंगे ?
- क्या आप प्रचारकों के लिए और सुसमाचार बांटने के अवसरों के प्रार्थना करेंगे ?
- क्या आप मिशन पर सेवा करने की तैयारी करेंगे ?

अनन्त विवाह

गिरजाघर का आधारिक इकाई परिवार है । परिवार के भीतर, लोग जीवन की कई महान खुशियों और दुखों को अनुभव करते हैं पुरूष और स्त्री के बीच विवाह परमेश्वर का नियुक्त किया हुआ है और उसके बच्चों के उद्धार के लिए परमेश्वर की अनन्त योजना में जरूरी हैं । वह माध्यम जिससे पार्थिव जीवन की सृष्टि होती है, इसे दिव्यरूप से चुना गया है और विवाह के द्वारा इसकी सुरक्षा होती है । सुख की दिव्य योजना पारिवारिक संबंधों को मृत्यु के बाद भी जारी रखने के योग्य बनाती है । तथापि, विवाह केवल तभी अनन्त हो सकते है जब अधिकृत पौरोहित्य धारक पवित्र मन्दिर में मुहरबंद की धर्मविधि को करता है और जब पति और पत्नी जो एकसाथ मुहरबंद हुए हैं अपने बनाए गए अनुबंधों का पालन करते हैं । पति और पत्नी को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए । जब वे आज्ञाओं का पालन करते और सुसमाचार के नियमों को जीते हैं, उन्हें अपने वैवाहिक प्रतिज्ञाओं का ईमानदारी से सम्मान करना चाहिए (देखें ''परिवार दुनिया के लिए एक घोषणा,'' *इन्साइन* 1995, 102; सि. और अनु. 42:22) ।

पाठ

पाठ

परिवार में सुख पाना तब अत्याधिक संभव होता है जब इसकी बुनियाद यीशु मसीह की शिक्षाओं पर रखी जाती है और जब माता-पिता अपने परिवार को सर्वोत्तम प्राथमिकता देते हैं । ''दिव्य योजना में, पिता को अपने परिवार पर प्यार और नेकता से अध्यक्षता करनी है और अपने परिवार के जीवन की जरुरतों पूरा करना और सुरक्षा देने के लिए जिम्मेदार होना है । माताएं मुख्यतः अपने बच्चों को पालन-पोषण करने के लिए जिम्मेदार होती हैं । इन पवित्र जिम्मेदारियों में, पिता और माता बराबर के साथी के रूप में एक दूसरे की मदद करने के लिए बाध्य होते हैं''(*इनसाइन* नवं. 1995, 102) । माता-पिता को अपने बच्चों को यीशु मसीह का सुसमाचार सीखाना है और इसे जीने में उनकी मदद करनी है ।

शैतान परिवार पर बहुत तीव्र आक्रमण कर रहा है । वर्षो पहले गिरजाघर के मार्गदर्शकों ने सोमवार शाम को पारिवारिक संध्या के रूप में अलग किया था । माता-पिता को यह समय अपने बच्चों को सुसमाचार सीखाने, उनके साथ अपने संबंधों को मजूबत करने, और मिलकर आनन्द लेने में करना है । परिवार को मजबूत करने के अन्य तरीके में सम्मलित हैं दैनिक पारिवारिक प्रार्थना और धर्मशास्त्र अध्ययन, परिवार के रूप में गिरजाघर में उपासना करना, और दूसरों की सेवा करना । स्वर्ग एक आदर्श घर का जारी रहना है । पौरोहित्य धर्मविधियों के माध्यम और धार्मिक जीवन से, हम परमेश्वर की उपस्थिति में परिवार की तरह अनन्तरूप से रह सकते हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

विवाह

सि. और अनु. 42:22
सि. और अनु. 49:15
सि. और अनु. 131:1–4
सि. और अनु. 132:7
उत्पति 2:24
इफिसियों 5:25
''परिवार : दुनिया के लिए एक घोषणा''

परिवार

मूसायाह 4:14–15
3 नफी 18:21
सि. और अनु. 130:2
1 तीमुथियुस 5:8
''परिवार : दुनिया के लिए एक घोषणा''

बच्चों की सीखाएं

अलमा 56:47
अलमा 57:21
मूसा 6:55–62
सि. और अनु. 68:25–30
इफिसियों 6:4
नीतिवचन 22:6

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप सप्ताह में एकबार पारिवरिक घरेलू संध्या, दैनिक पारिवारिक प्रार्थना, दैनिक पारिवारिक धर्मशास्त्र अध्ययन, और अन्य पारिवारिक गतिविधियां करेंगे ?
- क्या आप (1) अपना इंडोवमेन्ट पाने के लिए ? (2) समय और अनन्तता के लिए विवाह करने के लिए ? (3) यदि विवाहित हैं, अनन्तता के लिए पति और पत्नी के रूप में मुहरबंद होने के लिए ? (4) बच्चों को अपने साथ मुहरबंद करने के लिए मन्दिर में प्रवेश करने की तैयारी करेंगे ?
- क्या आप सब्त दिन को परिवार के रूप में उपासना करेंगे ?
- क्या आप दूसरों की सेवा करोगे ?

मन्दिर और पारिवारिक इतिहास

परमेश्वर ने अपने लोगों को मन्दिर बनाने की आज्ञा दी है । मन्दिर में हम पवित्र अनुबंध बनाते और इंडोव होते, या स्वर्ग से शक्ति और ज्ञान पाते हैं । यह शक्ति हमें प्रतिदिन के जीवन में मदद करती है और परमेश्वर का राज्य बनाने के योग्य बनाती है । मन्दिर में आप समय और अनन्तता के लिए विवाहित हो सकते हैं, इस प्रकार परिवार को हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में रहना संभव करते हैं । सदस्यता के कम से कम एक वर्ष के बाद, योग्य वयस्क अपने धर्माध्यक्ष से अपने स्वयं का इंडोवमेन्ट पाने के लिए संस्तुति पाते हैं । अपना इंडोवमेन्ट पाने के बाद, विवहित दंपत्ति अनन्तता के लिए मुहरबंद या विवाहित हो सकते हैं ।

उद्धारकर्ता सब लोगों से प्रेम करता और उनका उद्धार चाहता है । फिर भी करोड़ों लोग पुनःस्थापित सुसमाचार के संदेश को सुनने या बचाने वाली धर्मविधियों को पाने के अवसर के बिना मर जाते है । उसके प्रेमी अनुग्रह और दया के माध्यम से

प्रभु ने सब के लिए उद्धार संभव किया जिनके पास अपने नश्वर जीवनों में सुसमाचार को पाने, समझने, और पालने करने का अवसर नहीं मिला था । आत्मा के संसार में इन मरे हुए लोगों को सुसमाचार सीखाया जाता है । गिरजाघर के सदस्य यहां पृथ्वी पर अपने मरे हुए पूर्वजों और दूसरों के पक्ष में बचाने वाली धर्मविधियां करते हैं । आत्मा के संसार में मरे हुए लोगों के पास सुसमचार को और उनके पक्ष में की गई धर्मविधियों को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का अवसर होता है ।

इस कारण से, गिरजाघर के सदस्य अपने पूर्वजों की सूचना को खोजते हैं । वे वंशावली चार्ट और पारिवरिक समुह अभिलेख पूरा करते हैं और मृत रिश्तेदारों के नामों को पेश करते हैं जिनके पक्ष में बचाने वाली धर्मविधियों को पवित्र मन्दिर में किए जाने की जरूरत होती है । यह पारिवारिक इतिहास कार्य है । 12 और उससे बड़ी आयु के योग्य सदस्य, नए सदस्यों सहित, अपने धर्माध्यक्ष से मृतक के लिए बपतिस्मा लेने की संस्तुति ले सकते हैं ।

पारिवारिक इतिहास

नए सदस्यों को पारिवारिक इतिहास कार्य और उनके पास उपलब्ध स्रोतों से परिचय कराने के लिए किसी सदस्य के साथ मिलने या स्थानीय पारिवारिक इतिहास केन्द्र (जहां उपलब्ध हो) जाने का निमंत्रण दें । उन्हें पारिवारिक इतिहास सामग्रियों की प्रति दें ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

सि. और अनु. 43:16
सि. और अनु. 95:8–9
सि. और अनु. 124:22–42
सि. और अनु. 128
सि. और अनु. 131
सि. और अनु. 132
सि. और अनु. 138
1 कुरुन्थियों 15:29
1 पतरस 3:18–21
भजन संहिता 65:4
पुस्तिका, *पारिवारिक इतिहास केन्द्र में स्वागत*

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप मन्दिर धर्मविधियों को पाने की तैयारी करेंगे ? (बपतिस्मे और पुष्टिकरण के तुरन्त बाद, 12 की आयु से बड़े योग्य सदस्य मन्दिर जाने और मृतक के लिए बपतिस्मे में भाग लेने के लिए संस्तुति प्राप्त कर सकते हैं ।)
- क्या आप पारिवारिक इतिहास कार्य में भाग लेंगे और पूर्वजों के नाम प्रतिनिधित्व मन्दिर धर्मविधियों के लिए पेश करेंगे ?

सेवा

इस गिरजाघर में सदस्यता की महान आशीषों में से एक सेवा करने का अवसर है । जब हम दूसरों की प्रेम से सेवा करते हैं, हम परमेश्वर की सेवा करते हैं । जब हम बपतिस्मा लेते हैं, हम ऐसी सेवा करने का अनुबंध करते हैं (देखें मुसायाह 18:8–10) । हमें दूसरों की शारीरिक और आत्मिक जरूरतों के बारे में पता होना चाहिए । फिर हम अपना समय, हुनर, और दूसरों की जरूरतों में मदद करने के साधन देते हैं । हम उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करते हैं, जो दूसरों की सेवा करने आया था । हमें वही करना है जो यीशु ने किया था और उसके समान बनते हैं ।

बपतिस्मे के तुरन्त बाद नए सदस्य पौरोहित्य मार्गदर्शकों से गिरजाघर में मदद करने की जिम्मेदारी की आशीष प्राप्त करते हैं । इसे नियुक्ति कहते हैं । गिरजाघर में सभी काम स्वैच्छिक हैं । इस प्रकार के काम के लिए किसी को भी भुगतान नहीं किया जाता है । जब हम नियुक्ति स्वीकार करते हैं, हमें सार्वजनिकरूप से गिरजाघर सभा में सर्मथन दिया जाता है ताकि दूसरे सदस्य हमारी नियुक्ति की स्वीकृति और सहारा दे सकें। हमें पौरोहित्य मार्गदर्शक द्वारा नियुक्त भी किया जाता है और हम इसे पूरा करने में मदद की आशीष पाते हैं । गिरजाघर को व्यापक नियुक्तियों के लिए हुनर और योग्यताओं की जरूरत है । सभी नियुक्तियां महत्वपूर्ण हैं और परमेश्वर का राज्य बनाने में मदद करती हैं । हमें ऐसी नियुक्ति को स्वीकार करना है और मेहनत से सीखना और अपने कर्तव्यों को पूरा करना है । जब हम ऐसा करते हैं, हम विश्वास में बढ़ते हैं, नये हुनर सीखते और सेवा करने की अधिक योग्यता पाते, और दूसरी अनगिनत आशीषों को पाते हैं ।

पौरोहित्य धारक को घर के शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जा सकता हैं । घर के शिक्षक कम से कम महिने में एक बार सौंपे गए परिवारों के घर में मुलाकत के लिए जाते हैं । वे सुसमाचार सीखाते, माता-पिता की मदद करते, मित्रता को बढ़ाते और परिवारों को मन्दिर अनुबंधों को पाने और पालन करने की तैयारी में मदद करते हैं । सौंपी गई प्रत्येक वयस्क बहन से मासिक भेंट करके भेंट करने वाली शिक्षकाएं सहायता संस्था का प्रतिनिधित्व करती हैं ।

पाठ

धर्मशास्त्र अध्ययन

प्रेम

मरोनी 7:43–48 | सि. और अनु. 88:125 | मत्ती 22:36–40 | 1 कुरुन्थियों 13:1–8

गरीब की देख-भाल करना

मूसायाह 4:26 | अलमा 34:28–29 | सि. और अनु. 52:40 | मत्ती 25:40

हमें सेवा करनी है

मूसायाह 2:17 | मूसायाह 18:8–10 | सि. और अनु. 42:29 | सि. और अनु. 107:99–100

प्रतिज्ञाएं

- क्या आप बुलाहट को स्वीकार और पूरा करेंगे (घर के शिक्षक या भेंट करने वाली शिक्षका के कार्यभार सहित ?
- क्या आप दूसरों का उनकी बुलाहट में सर्मथन करेंगे ?

गिरजाघर में सीखाना और सीखना

गिरजाघर सदस्यों के जीवन को परिपूर्ण करने और आशीष देने के लिए संगठित किया है । यह हमें एक दूसरे को सुसमाचार सीखाने, संगति देने और एक दूसरे की सेवा करने, और उद्धार की तलाश में एक दूसरे को सहारा देने का अवसर देता है । परिवार में और गिरजाघर के माध्यम से, प्रत्येक सदस्य सुसमाचार सिद्धान्त को सीखता है । जब सदस्यों को सीखाने के कार्यभार दिए जाते हैं, उन्हें सफल होने के लिए सामग्रियां और मदद दी जाती हैं ।

धर्मशास्त्र अध्ययन

सि. और अनु. 88:77–79 | इफिसियों 4:11–14

प्रतिज्ञा

- क्या आप गिरजाघर जाएगे ?

अन्त तक धीरज धरना

जब हम सुसमाचार का पालन करना जारी रखते हैं, हम स्वर्गीय पिता के निकटता की ओर बढ़ते जाते हैं । हम उद्धारकर्ता के प्रायश्चित का अधिक आनन्द और आभार प्रकट करते हैं । हमारे परिवार एक दूसरे के अधिक निकट आते हैं । हम प्रेम, आनन्द, और शान्ति की महान अनुभूतियों को अनुभव करते हैं जोकि प्रायश्चित से आती हैं । हमारे हृदय बदल जाते हैं, और हम पुनःस्थापित सुसमाचार में सुरक्षा पाते हैं ।

जब हम यीशु में विश्वास, पश्चाताप, और अपने अनुबंधों का नवीनीकरण करना जारी रखते हैं, हम पवित्र आत्मा से निरंतर मार्गदर्शन पाने का आनन्द लेते हैं । यदि हम अपने जीवन मे अन्त तक अपने अनुबंधों के प्रति सच्चे रहते हैं, हम अनन्त जीवन पाएंगे ।

कुछ सदस्य अन्त तक विश्वासी नहीं बने रहते या पूर्णरूप से सक्रिय नहीं रहते हैं । तथापि, अन्त तक धीरज धरना व्यक्तिगत जिम्मेदारी है । हम ''अपने स्वयं के उद्धार का कार्य पूरा करते हैं'' (फिलिप्पियों 2:12), और हम उनकी सेवा और प्रेम करते हैं जिनके विश्वास निष्क्रियता के कारण कमजोर हो जाते हैं ।

पाठ

धर्मशास्त्र अध्ययन

2 नफी 31:20–21
मरोनी 6:4
सि. और अनु. 20:37
विश्वास के अनुच्छेद 1:3
यूहन्ना 14:15, 21
इफिसियों 4:11–14
फिलिप्पियों 2:12

प्रतिज्ञा

- क्या आप अपने पूरे जीवन-भर बपतिस्मे के अनुबंध का पालन करते हुए सुसमाचार को जीना जारी रखेंगे?

पाठ

THE CHURCH OF
JESUS CHRIST
OF LATTER-DAY SAINTS

© 2004 by Intellectual Reserve, Inc. All rights reserved. Printed in the United States of America
English approval: 1/05. Translation approval: 1/05. Translation of *Preach My Gospel.* Hindi 09220 294